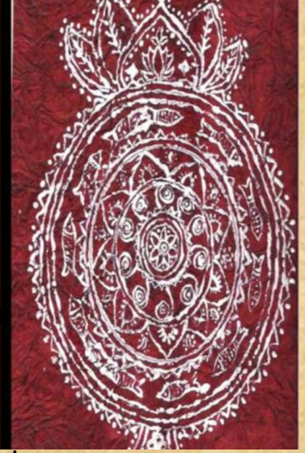
नित नवल सुभाष चन्द्र यादव

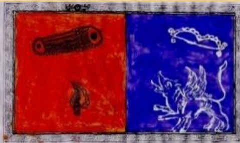
गजेन्द्र ठाकुर

विदेह-प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (विदेह www.videha.co.in) पेटारसँ





विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्






विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

ISBN No: 978-93-93135-28-5 (Pallavi Prakashan)

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव

गजेन्द्र ठाकुर



पल्लवी प्रकाशन

बेरमा/निर्मली

Nit Naval Subhaash Chandr Yadav

A book on criticism- critical analysis of the works of Subhash Chandra Yadav, language Maithili by Gajendra Thakur

पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल. नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 6200635563; 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
फोण्ट सोर्स : https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts

दाम : 50/- (भा.रू.)

पहिल संस्करण : 2022

ISBN : 978-93-93135-28-5

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant- Robert Louis Stevenson

....

Videha: Maithili Literature Movement

अनुक्रम

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव

(राइटर्स ब्लॉक- मैथिलीक समानान्तर धाराक लेखन- सुभाष चन्द्र यादवक समस्त साहित्य)

सुभाषचन्द्र यादव (१९४८-), जन्म ०५ मार्च १९४८, मातृक दीवानगंज, सुपौलमे। पैतृक स्थान: बलबा-मेनाही, सुपौल।

मूल मैथिली लेखन पहिल चरण: घरदेखिया (१९८३)

मूल मैथिली लेखन दोसर चरण: बनैत बिगड़ैत (विदेह ई-पत्रिकामे २००८ सँ २००९ धरि, फेर पुस्तकाकार २००९ मे), गुलो (मिथिला दर्शनमे प्रकाशन, २०१४, फेर पुस्तकाकार २०१५ मे), रमता जोगी (२०१९), मडर (२०२१), राजकमल चौधरी मोनोग्राफ (जनवरी १९९७ मे साहित्य अकादेमी द्वारा रिजेक्ट, रचना पत्रिकामे दिसम्बर २००५- मार्च २००६ अंकमे आ पुस्तकाकार २०२२ मे "नित नवल राजकमल" नामसँ), भोट (२०२२)।

"जे सुनबैए खिस्सा से राज करैए ऐ संसारपर"- होपी अमेरिकी कबीलाक लोकोक्ति।

आ सुभाष चन्द्र यादव खिस्सा सुनेनाइ छोड़ि देलन्हि।

"स्वप्नसुन्दरी एण्ड द मैजिकल बर्ड्स ऑफ मिथिला" (गीता धर्मराजन, कथा, १९९६)

मिथिलाक टुनमुनिया राजकुमारी स्वप्नसुन्दरीकेँ गाबैबला चिड़ै सभ बड्ड पसिन्न छलै। मुदा ओ माछ, बकड़ी आ गाय सभकेँ सेहो चिड़ै बना दैत छली। प्रजा सभ राजकुमारीकेँ उपराग देलक, राजकुमारी रूसि गेली आ चिड़ै बनेनाइ बन्न कऽ देलनि। ओ महलसँ बाहरो नै अबै छली। जादूबला देश मिथिलासँ जे बाँचल चिड़ै छल सेहो निपत्ता भऽ गेल। जनीजाति खेतमे अखनो गबैत छली, मुदा बिनु रङ-बिरङक

चिड़ैक ई मिथिला आब ओ मिथिला नै लगैत छल। आ फेर आयल गाछक पैकार सभ, बिनु चिड़ै गाछक कोन काज, ई गप लोक सभकेँ बुझा, ठकि कऽ ओ सभ मिथिलाक सभटा गाछकेँ काटि कऽ लऽ गेल। जनीजाति सभ, सभटा जुगति भिड़ेलनि जे किछु गाछ बचि जाय, मुदा से भऽ नै सकल। बिनु गाछक सभटा धार सुखा गेल। बिनु गाछक लोक सभ होइत गेल गरीब आ पैकार सभ होइत गेल धनीक। जनीजाति सभ गेलीह राजकुमारी लग, कनैत, कहैत जे राजकुमारी, मदति करू, हम सभ गलत छलौं। स्वप्नसुन्दरी बैसल छली अपन कोठलीमे, जतऽ चारूकात देबालपर छल रङ बिरङ्क चिड़ै सभक चित्र। ओइ चिड़ैक चित्र सभकेँ देखैत मिथिलाक राजकुमारी स्वप्नसुन्दरी उदास भऽ बजली- नै, अहीं सभ ठीक छलौं। खाली चिड़ै हमरा सभकेँ प्रसन्न नै राखि सकैए। मुदा जनीजाति सभ बजली- बिनु चिड़ै सेहो हम सभ प्रसन्न नै रहि सकब, ओ चिड़ै सभ घुरा कऽ आनि दिअ राजकुमारी। मुदा राजकुमारी ततेक उदास छली जे ओ जादू नै कऽ सकली। तखन जनी-जाति सभ कहलन्हि- चिन्ता नै, हम सभ गाछ रोपब आ गाबैबला चिड़ै सभ घुरि आओत। आ ऐबेर ककरो बेइमानी सेहो हमरा सभ नै करऽ देबै। आ बताह सन खटऽ लागल सम्पूर्ण मिथिला। ककरो कोनो पलखति नै, आ ओ सभ गाबि कऽ नाचि कऽ रोपऽ लागल आ पटबऽ लागल गाछ। आ गाछ जेना-जेना बढ़ऽ लागल आ चकरगर होइत गेल सभ हँसऽ लगला, आ थोपड़ी पारऽ लगला। संग मिलि कऽ काज केलासँ हुनका सभकेँ खुशी होइन। आ ऐ सँ गाछो सभ नीकसँ आ जल्दीसँ बढ़ऽ लागल। आ स्वप्नसुन्दरीक देश मिथिलामे छोट-पैघ गाछ सभ मुस्की देमऽ लागल चारू कात। जादूबला संगीत चारू दिस पसरि गेल। लाल रङक, जोमक रङक, अकासी, पीअर, गुलाबी आ पनिसोखा सन सात रङक चिड़ै सभक डेरा बनत ई। राजकुमारी कहलनि जनीजाति सभसँ- हमर देशक बचियासभ पाठशाला जाथि, ई हमर सभ दिन सँ सपना अछि। जनीजाति सभ बजली- हँ राजकुमारी, जँ हम सभ पढ़ल लिखल रहितौं तँ कोनो पैकार हमरा सभकेँ ठकि नै सकितय। मुदा आयल एकटा झमेल। जनीजातिमे सँ किछु कहलनि- मुदा तखन घरक काज के करत?

तखन मिथिलाक राजकुमारी आदेश देलनि- बालक सभ बालिकाक काज सीखत आ बालिका सभ बालकक काज। मिलिये-जुलि कऽ आगाँ बढ़ैमे सभकेँ नीक लागत। आ स्वप्न सुन्दरी सभ पढ़ैबाली बालिकाकेँ देलन्हि एकटा साइकिल। स्वप्न सुन्दरी बुझेलखिन्ह- संसार भरिमे ओ सभ प्रसन्न छथि जे एक-ठामसँ दोसर ठाम जल्दी पहुँचि जाइ छथि, कारण तइसँ ओ सभ सभटा काज जल्दी-जल्दी पूरा कऽ लै छथि। जनीजाति सभ पुछलन्हि- की हम सभ साइकिल नै चला सकै छी? राजकुमारी

कहलन्हि- किए नै? महिलाकेँ ओ सभ काज करबाक चाही जे ओकरा नीक लगै छै। किछु गोटे राजकुमारीसँ पुछलन्हि- मुदा टाका कतऽ सँ आओत? मुदा सभ ओकरा दबाड़ि देलक। सभटा काज राजकुमारिये करती? आ लगेलक सभ एकटा बड़का मेला। पाइ जमा भेल, आ बनल राजकुमारी स्वप्नसुन्दरीक पाठशाला। पाठशाला करैए जादू, ओतऽ बच्चा सभ जा कऽ बनि जाइत अछि जेना होथि रङ-बिरङक चिड़ै। अहूँ किए नै अबै छी पाठशाला राजकुमारी? राजकुमारी एक दिन पाठशाला एली, दोसर दिन एली आ सभ दिन आबय लगली। आ फेर ओ कहलनि जे बच्चा सभक माय बाबू सेहो आबथु पाठशाला। आ फेर राजकुमारी फेरसँ करऽ लगली जादू। मुद ऐबेर ओ खाली बेकार चीज सभकेँ बनबऽ लगली चिड़ै। आ बहुत रास कएक रङक पाँखिबला चिड़ै सभ सेहो घुरि आयल अछि मिथिलामे, बिनु जादू कयने। सभ अपना लोलमे एक-एक हजार पोथी लेने, उल्लास आनैबला पोथी सभ, लाल, गुलाबी आ अकासी रङक। लाल, जोमक रङक, पीअर, गुलाबी आ पनिसोखा सन सात रङक, कारण रेतक स्थान लऽ लेलक अछि हरियर कचोर गाछ सभ। आ चिड़ै सभ गाबि रहल अछि- बिनु ज्ञान सुन्दरता अछि सुखायल धार सन। आ ओइ टुनमुनिया राजकुमारीक मिथिला बनि गेल विश्वक सभसँ बेशी हरियर आ प्रफुल्लित देश। लोक सभ तँ ईहो कहैत छथि जे अही चिड़ै सभक कारण मिथिलाक हबामे रहैत अछि जादू सदिखन। आ जँ कहियो हमरो सभकेँ भेटि जाय एकटा एहेन स्थान, जतय महिला आ पुरुख सोचि सकथि पैघ-पैघ गप! ई जादूबला स्थान हमरा सभक लगे-पासमे तँ नै? ई स्थान जतऽ जादूबला बौस्तु सभ अछि, हमरे सन साधारण लोकक भितरे तँ नै अछि? जँ अहाँकेँ भेटय ई स्थान, जतऽ कतौऽ, तँ सूचित करू हमरा हमर ई-पत्र सङ्केत editorial.staff.videha@gmail.com पर।

सुभाष चन्द्र यादव खिस्सा सुनेनाइ छोड़ि देलन्हि।

मुदा ओ १९८३ सँ अड़ल रहलाह असगरे, आइक तथाकथित निम्न वर्गक किछु लेखक सभ सेहो मैथिलीक आभासी वर्तनीक सङ्ग चलि गेला आ छोड़ि देलखिन्ह असगर हुनका, ओ सभ गैसलाइटिंगक शिकार भऽ गेला। पैकार सभ चारूकात सहसह करऽ लागल। ओइ टुनमुनिया राजकुमारी सन ओ देखैत रहलाह ...

मुदा ०१.०१.२००८ सँ ८ सालक तैयारीक बाद विदेह- मैथिली ई-पत्रिका गाछ रोपब शुरू केलक, मिथिलामे, पक्ष-दर-पक्ष, आ घुरि कऽ आबय लागल रङ-बिरङक चिड़ै सभ।

नचिकेता २५ बर्खक मौनभंगक बाद विदेह पाक्षिक ई-पत्रिका मे नो एण्ट्री: मा

प्रविश प्रकाशित करय लगलाह आ ओही बर्ख २५ बर्खक बाद सुभाष चन्द्र यादव विदेहक पाठककेँ खिस्सा सुनबय लगलाह पक्ष-दर-पक्ष। सुभाष चन्द्र यादवक घरदेखिया आयल १९८३ मे आ २५ बर्खक बाद "बनैत बिगड़ैत" २००८-०९ मे विदेहमे ई-प्रकाशित भेलाक बाद २००९ मे प्रिण्टमे सेहो आबि गेल।

"जे सुनायत खिस्सा सएह राज करत ऐ संसारपर" आ समानान्तर धारा सुना रहल अछि खिस्सा। मिथिलाक कएक रङगक पाँखिबला चिड़ै सभ घुरि आयल जेना सन्दीप कुमार साफी, उमेश पासवान, बेचन ठाकुर, कपिलेश्वर राउत, उमेश मण्डल, राम विलास साहु, राजदेव मण्डल, नन्द विलास राय, जगदीश प्रसाद मण्डल, दुर्गानन्द मण्डल, आचार्य रामानन्द मण्डल, ललन कुमार कामत, नारायण यादव, मुन्नी कामत, शिव कुमार प्रसाद, धीरेन्द्र कुमार, रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार" एला रङ बिरङक कथा आ गीतक सङ।

घुरि आयल अछि सभ अपना लोलमे एक-एक हजार पोथी लेने, उल्लास आनैबला पोथी सभ, लाल, गुलाबी, जोमक, पनिसोखाक सात रङक आ अकासी रङक। कारण रेतक स्थान लऽ लेलक अछि हरियर कचोर गाछ सभ।

आ सुभाष चन्द्र यादव खिस्सा सुनेनाइ फेरसँ शुरू कऽ देलन्हि।

बनैत बिगड़ैतक बाद आयल रमता जोगी, गुलो, मडर, भोट। साहित्य अकादेमी द्वार रिजेक्ट कएल राजकमल चौधरी मोनोग्राफ आयल "नित नवल राजकमल" नामसँ। आ तँ सुभाष चन्द्र यादव छथि "नित नवल सुभाष चन्द्र यादव"।

मैथिली स्टोरी साइंस (मैथिला कथाशास्त्र) आ सुभाष चन्द्र यादव

मिशेल फोको (Foucault)क "अनुशासन संस्था" बा मनोवैज्ञानिक बार्टन आ ह्वाइटहेडक "गैसलाइटिंग" दुनूक लक्ष्य एक्के छै। मिशेल फोकोक "अनुशासन संस्था" अछि, सोझाँबलाकेँ अनुशासनमे आनू आ तइ लेल सभकेँ आपसेमे लड़ाउ, किछुकेँ पुरस्कृत करू आ जे अनुशासनमे नै अबैए तकरा आस्ते-आस्ते माहुर दियौ। गैसलाइटिंगमे सोझाँबला केँ विश्वास दिआओल जाइत अछि जे अहाँ जे यथास्थितिक विरोध कऽ रहल छी से कोनो विरोध नै, ई तँ सभ कऽ रहल अछि, अहाँ तँ विरोधक नामपर विरोध कऽ रहल छी आ से अपन कमी नुकेबा लेल। ऐमे समाजमे वर्तमान आधारभूत कमीक सहायता सेहो लेल जाइत अछि, आ आस्ते-आस्ते टारगेट बताह भऽ जाइत अछि बा पलायन कऽ जाइत अछि।

से सुभाष चन्द्र यादवक राइटर्स-ब्लॉक सामान्य राइटर्स ब्लॉक नै छल, ई

छल "गैसलाइटिंग"।

मुदा एकर प्रतिकारमे अबैत अछि स्टोरी साइंस, कोन कथा सुनेलासँ लोक आ समाजपर की असर पड़त, ई ओइ आधारपर पूर्व-विश्लेषण करैत अछि। से समानान्तर धारा माहुरकेँ माहुरसँ काटबाक निर्णय लेलक। ओ मूलधाराक साहित्यकार सभ जे मानकीकरणक नामपर भाषाकेँ मरोड़ै छला, ओ स्टोरी साइंसक संग गैसलाइटिंगक आधारपर काज कऽ रहल छला। हुनकर उद्देश्य छल वर्तनीक भिन्नताकेँ अशुद्धताक नाम देब। रामदेव झा घरदेखियाकेँ लक्षित कऽ ई सभ लिखलन्हि जे, जे लिखब से बाजब असमियो मे असफल भेल से मैथिलीयोमे हएत।

आ सुभाषचन्द्र यादव असगर पड़ि गेलाह।

मुदा जखन रमानन्द झा 'रमण' अही स्टोरी-साइंसक प्रयोग बिसाँढ़क सङ केलन्हि, आ तकर आलोकमे जगदीश प्रसाद मण्डलक शिवशंकर श्रीनिवास द्वारा वर्तनी-संशोधन कएल कथा (जइले ओ अशुद्धता दूर करबा लेल तीन दिन मेहनति कएल, अहि तरहक अहसान सेहो जतेलन्हि) उमेश मण्डलजी जखन हमरा पठेलन्हि तँ हमर कान ठाढ़ भऽ गेल।

कारण सुभाष चन्द्र यादवक वर्तनीक कथा विदेहमे तावत ई-प्रकाशित भेनाइ शुरू भऽ गेल छल। हम उमेश मण्डल जी केँ स्टोरी-साइंसक मर्म बुझेलियन्हि आ बिनु तथाकथित शुद्ध कएल वर्तनीबला रूप विदेहमे छपब शुरू भेल <u>[देखू दुध-पानि फराक-फराक (कथा एवं पाण्डुलिपि जगदीश प्रसाद मण्डल)- (छाया एवं सम्पादन- उमेश मण्डल)]</u>।

आ उमेश मण्डल सूचित केलन्हि जे वर्तनी शुद्धताक बाद जगदीश प्रसाद मण्डल जी गुम रहऽ लागल छलाह, आ जहियासँ ओ सुनलन्हि जे वर्तनीक शुद्धता बला रचना विदेहमे रिजेक्ट भऽ गेल छन्हि आ हुनकर असली वर्तनीबला वर्सन आब ई-प्रकाशित हेतन्हि तहियासँ हुनकामे नव उत्साह आबि गेल छन्हि।

फेर उमेश मण्डल जीक गप सुभाष चन्द्र यादवसँ भेलन्हि, तँ सुभाष चन्द्र यादव जी सूचित केलखिन्ह जे मूलधारा बला सभ किछु लिखि दियौ, सुनबे नै करत काने-बात नै देत। राजमोहन झा भाइ साहेबपर सेहो बड्ड विश्वास केने रहथि। "तँ तकर उपाय?" "उपाय वएह जे अहाँ सभ कऽ रहल छी, माने लेखक बढ़ाउ।"

आ स्टोरी साइंस सेहो सएह कहैए, जे कथा सुनायत से करत राज, आ जे जत्ते कथा सुनाओत से तत्ते आगाँ बढ़त। आ असगर बृहस्पतियो झूठ। मुदा ऐबेर दोसर

चरणमे सुभाष चन्द्र यादव असगर नै रहथि।

आ समानान्तर धारा कथा सुना रहल अछि १५ सालसँ आ मूलधारा सुनि रहल अछि।

जखन कि मिशेल फोकोक सभटा डिसीप्लिनरी इंस्टीट्यूशन "अनुशासन संस्था" जेना साहित्य अकादेमी, मैथिली अकादमी, मैथिली भोजपुरी अकादमी, आ साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त कथित लिटेरेरी असोसियेशन सभ मूल धारा लग छै।

मुदा मिशेल फोकोक सभटा डिसीप्लिनरी इंस्टीट्यूशन आ मूलधाराक गैसलाइटिंगक टेक्निक, गार्जियन बनबाक ऑफरक टेक्निक स्टोरी साइंस द्वारा खतम कऽ देल गेल छै।

स्टोरी साइंस तारानन्द वियोगीक शब्दावली (१) जेना थोकक हिसाबें मैथिलीमे उपन्यास बहराइत अछि, (२) मेहतरक भाषा आ (३) कूड़ा-कड़कटक पहाड़ ठाढ़ करबाक साजिश आ रमानन्द झा "रमण"क शब्दावली (१) "हाट-बजारक भाषा" (डॉ. प्रमोद कुमारक ‘कनकिरबा’ क आमुखमे)कैँ उघार केलक।

ई सभ हतोत्साहित करबा लेल उपयुक्त गैस-लाइटिंग केर टेक्निक अछि जकरा समानान्तर धारा द्वारा स्टोरी साइंसक मदतिसँ खतम कऽ देल गेल अछि। तँ ई उदाहरण सिद्ध करैए जे मूल धारामे सभ जातिक लोक अछि आ समानान्तर धारामे सेहो। स्टोरी साइंसक मदतिसँ ब्राह्मणवादक संग गएर-ब्राह्मणक नव-ब्राह्मणवादकैँ सेहो चिन्हित कएल गेल अछि।

आ सएह कारण छै जे मैथिली कथा सुनेबाक आयोजन “सगर राति दीप जरय”कैँ साहित्य अकादेमी द्वारा गीड़ि लेबाक प्रयत्न भेल आ से विफल भऽ गेलापर रमानन्द झा ‘रमण’ सहित मूल धाराक आन लोक अपन मानसिक सन्तुलन बना कऽ नै राखि सकला। रमानन्द झा ‘रमण’ तँ सभटा सीमाक अतिक्रमण करैत एकटा ब्राह्मणवादी संस्थाक पत्रिकामे बिनु नाम लेने हमरा आ उमेश मण्डलकैँ अवाच कथा सेहो कहलन्हि आ तकर उपहार स्वरूप साहित्य अकादेमी दिल्लीक ओइ संस्थाकैँ कथित लिटेरेरी एसोसियेशनक रूपमे मान्यता देलक। ई घटना स्टोरी-साइंसक प्रभावकैँ दर्शित करैत अछि।

मुदा अशोक गत दस सालसँ ‘सगर राति दीप जरय’ केर आयोजन समानान्तर

धाराक लेखक सभ द्वारा कएल जेबासँ आह्लादित छथि आ कहै छथि- “एकर प्रारम्भिक उद्देश्य रहै गाम-गाम गोष्ठी करबाक, से आबे जा कऽ भऽ रहल छै।“ यएह गप हमर गाममे भेल ८२ म सगर राति दीप जरय [कथा बौद्ध सिद्ध मेहथपा (बाल साहित्य केन्द्रित) मेंहथ]मे शिवशंकर श्रीनिवास सेहो बाजल छला- “जखन हम सभ ‘सगर राति दीप जरय’ शुरू केने छलौं तखन एकर उद्देश्य छल जे ई गामे-गाम हुअय, मुदा ई तँ पटना-चेन्नै घुमऽ लागल।“

आ ओम्हर रामभरोस कापड़ि ‘भ्रमर’ आ परमेश्वर कापड़ि सेहो पायापार नेपाल मे अड़ल छला। भारतक सरकारी संस्थाक संकलनमे हुनकर सभक रचना बाहरी (नेपालक) हेबाक कारण नै देल गेलनि मुदा ओही नेपालक दोसर लेखक, जे स्टेटस-को केर सङ छला, केर कथा देल गेलै। ❑

जुलिया क्रिस्टोवाक अनुदैर्घ्य सम्बन्ध बला धूरी, जुलिया क्रिस्टोवाक उर्ध्वाधर सम्बन्ध बला धूरी/ जेक्स डेरीडा- उत्तर संरचनावाद माने विखण्डनात्मक सिद्धान्त

कथाक यात्रा- वैदिक आख्यान, जातक कथा, ऐशप फेबल्स, पंचतंत्र आ हितोपदेश आ संग-संग चलैत रहल लोकगाथा सभ। सभ ठाम अभिजात्य वर्गक कथाक संग लोकगाथा रहिते अछि, आ से मैथिलीयो मे अछि।

ऐ सम्बन्धमे सुभाष चन्द्र यादवक निम्न विचार छन्हि:

"मैथिली मे लोक-कथा पर बड़ कम काज भेल अछि। लोक-कथाक किछुए संकलन उपलब्ध अछि आ से स्मृतिक आधार पर लिपिबद्ध् कयल गेल अछि, फील्ड वर्कक आधार पर नहि। लोक-साहित्यक कोनो इकाइ हो, ओकर एक सँ अधिक रूप विद्यमान रहैत छैक, जे फील्ड वर्क कयले सँ प्राप्त भऽ सकैत अछि। स्मृति मे ओकर मात्र एकटा रूप रहैत छैक, जकरा सर्वोत्तम रूप मानि लेब गलत भऽ सकैत अछि। लोक-कथा क जतेक संकलन अखनधरि भेल अछि, से अपूर्ण अछि। मैथिली मे लोक-गीत, लोक गाथा आ लोक देवता क लेल तऽ किछु फील्ड वर्क कयलो गेल, लोक कथाक लेल भरिसक्के कोनो फील्ड वर्क भेल अछि। आब जखन एक पुश्त सँ दोसर पुश्त मे लोक साहित्यक अंतरण दिनोदिन संकटग्रस्त भेल जा रहल अछि, तैं एकर संरक्षण जरूरी अछि। लोकसाहित्यक संरक्षण मात्र एहि लेल जरूरी नहि अछि जे ओ अतीतक एकटा वस्तु थिक; ओ अपन समयक विमर्श आ आत्मवाचन सेहो होइत अछि आ एकटा प्रतिमान उपस्थित करैत अछि। ओकर रूपक, प्रतीक, भाव आ शिल्पक उपयोग लिखित साहित्य मे हम सभ अपन-अपन ढंग सँ करैत रहैत छी। तहिना लिखित साहित्य सेहो लोक-साहित्य कैँ प्रभावित करैत रहैत अछि। लोक-साहित्य संबंधी अध्ययन मुख्यत: स्थान आ कालक निर्धारण पर केन्द्रित रहल अछि। ओकर कार्य, अभिप्राय आ अर्थ सँ संबंधित प्रश्न अखनो उपेक्षित अछि। मैथिली मे तऽ लोक-साहित्य संबंधी अध्ययन अखन ठीक सँ शुरुओ नहि भेल अछि। जे पोथी अछि, ताहि

मे लोक-साहित्यक परिभाषा आ सूची उपस्थित कयल गेल अछि। लोक-कथाक उपलब्ध संकलन सभ मे ओहन कथाक संख्या बेसी अछि जे देशांतरणक कारणेँ मैथिली मे आयल अछि। मैथिलीक अपन लोककथा, जकरा खाँटी मैथिल कहि सकैत छिऐक, से कम आयल अछि। रामलोचन ठाकुर द्वारा संकलित मैथिली लोक-कथा, जकरा हम अपन एहि अत्यंत संक्षिप्त अध्ययनक आधार बनौने छी, ताहू मे खाँटी मैथिली लोक-कथा कम्मे अछि। लोक-कथाक अभिप्राय आ अर्थ संबंधी अपन बात कहबाक लेल जाहि दूटा कथाक चयन हम कयने छी, से अछि- 'एकटा बुढ़िया रहय' आ 'एकटा चिनिया खेलिऐ रओ भैया'। एहि दुनू कथाक वातावरण विशुद्ध मैथिल अछि। दुनूक विमर्श, आत्मवाचन आ प्रतिमान मैथिल-मानसक अनुरूप अछि। दुनू कथाक विमर्श न्याय पर केंद्रित अछि। पहिल कथाक बुढ़िया दालिक एकटा फाँक लेल बरही, राजा, रानी, आगि, पानि आ हाथी केँ न्याय पयबाक खातिर ललकारैत अछि, किएक तऽ खुट्टी ओकर दालि नुका लेने छैक आ दऽ नहि रहल छैक। कथाक विमर्श पद्यात्मक रूप मे एना व्यक्त भेल अछि- हाथी हाथी हाथी! समुद्र सोखू समुद्र। समुद्र ने अगिन मिझाबय, अगिन। अगिन ने रानी डेराबय, रानी। रानी ने राजा बुझाबथि, राजा। राजा ने बरही डाँड़थि, बरही। बरही ने खुट्टी चीड़य, खुट्टी। खुट्टी ने दालि दिअय, दालि। की खाउ, की पीबू, की लऽ परदेस जाउ। जाइत अछि। खुट्टी तैयार भऽ जाइत छैक। फेर तऽ खुट्टीक डरेँ हाथी, हाथीक डरेँ समुद्र, समुद्रक डरेँ आगि, आगिक डरेँ रानी, रानीक डरेँ राजा, राजाक डरेँ बरही न्याय करक लेल तैयार भऽ जाइत छैक आ खुट्टी बुढ़िया केँ दालि दऽ दैत छैक। ई कथा रामलोचन अपन माय सँ सुनने छलाह। ओ कहलनि जे माय वला वृत्तांत मे बुढ़िया हाथिए लग सँ घूरि जाइत छैक। लिपिबद्ध करैत काल ओ एकर पुनर्सृजन कयलनि। हुनक लिपिबद्ध कयल वृत्तांत मे बुढ़िया हाथियो सँ आगू खुट्टी धरि जाइत अछि। बुढ़िया केँ खुट्टी धरि लऽ गेनाइ कथाक व्यंजना मे विस्तार अनैत छैक। लेकिन लोक कथाक एहन प्रलेखन कतेक उचित अछि? एहि कथाक आत्म वाचन बुढ़ियाक माध्यमे प्रकट भेल अछि। अपन स्थितिक प्रति बुढ़िया जे प्रतिक्रिया करैत अछि, सएह एहि कथाक आत्म वाचन थिक। एकटा दालिक बल पर बुढ़िया परदेस जेबाक नेयार करैत अछि। राजा-रानीक सेर भरि दालि देबाक प्रस्ताव केँ तिरस्कृत करैत अछि। समुद्र सँ हीरा मोतीक दान नहि लैत अछि। दालि पर अपन अधिकार लेल लड़ैत रहैत अछि। तात्पर्य ई जे सपना देखबाक चाही। भीख आ दयाक पात्र नहि हेबाक चाही। दान लेब नीक नहि। स्वाभिमानी हेबाक चाही आ अपन हक

लेल लड़बाक चाही। कथा ई प्रतिमान उपस्थित करैत अछि जे न्याय संघर्षे कयला सँ भेटैत छैक। 'एकटा चिनमा खेलिऐ रओ भइया' न्यायक विवेकशीलता पर विमर्श करैत अछि। मुनिया (चिड़ै) कैँ एकटा चीन खेबाक अपराध मे प्राणदंड भेटै वला छैक। ई विमर्श पद्यात्मक रूपमे चलैत छैक, जाहि मे ओकर दारुण अवस्था सेहो चित्रित भेल छैक।

बरदवला भाइ!

परबत पहाड़ पर खोता रे खोंता

भुखै मरै छै बच्चा

एकटा चिनमा खेलिऐ रओ भइया

तइ लए पकड़ने जाइए।

फेर घोड़ावला अबै छै, हाथीवला अबै छै, खुद्दी-वला अबै छै। मुनिया सभ सँ मिनती करैत अछि। ओहो सभ खेतवला कैँ पोल्हबैत छैक; छोड़बाक बदला मे बड़द, घोड़ा, हाथी देबऽ लेल तैयार छैक, लेकिन खेतवला टस सँ मस नहि होइत अछि। जखन भूखे-प्यासे जान जाय लगै छैक, तखन खुद्दीक बदला मे मुनिया कैँ छोड़ि दैत अछि। मुनिया करुणा आ मानवीयताक आवाहन करैत अछि। मनुस्मृति मे कहल गेल छैक जे चुपचाप ककरो फूल तोड़ि लेब चोरि नहि होइत छैक; तहिना ककरो एकटा चीन खा लेब कोनो अपराध नहि भेल। इएह कथाक आत्मवाचन थिक। कथा ई प्रतिमान उपस्थित करैत अछि जे सभक जीवक मोल बराबर होइत छैक। असहाय आ निर्धनो कैँ जीबाक अधिकार छैक। एहि संसार मे ओकरो लेल एकटा स्पेस (जगह) हेबाक चाही।"

कथामे असफलताक सम्भावना उपन्यास-महाकाव्य-आख्यान सँ बेशी होइत अछि, कारण उपन्यास अछि "सोप ओपेरा" जे महिनाक-महिना आ सालक-साल धरि चलैत अछि आ सभ एपीसोडक अन्तमे एकटा बिन्दुपर आबि खतम होइत अछि। माने सत्तरि एपीसोडक उपन्यासमे उन्हत्तरि एपीसोड धरि तँ आशा बनिते अछि जे कथा एकटा मोड़ लेत आ अन्त धरि जे कथाक दिशा नहिये बदलल तँ पुरनका सभटा एपीसोड हिट आ मात्र अन्तिम एपीसोड फ्लॉप। मुदा कथा एकर अनुमति नै दैत अछि। ई एक एपीसोड बला रचना छी आ नीक तँ खूबे नीक आ नै तँ खरापे-खराप।

कथा-गाथा सँ बढ़ि आगू जाइ तँ आधुनिक कथा-गल्पक इतिहास उन्नैसम शताब्दीक अन्तमे भेल। एकरा लघुकथा, कथा आ गल्पक रूप मानल गेल। ओना ऐ

तीनूक बीचक भेद सेहो अनावश्यक रूपसँ व्याख्यायित कएल गेल। रवीन्द्रनाथ ठाकुरसँ शुरु भेल ई यात्रा भारतक एक कोनसँ दोसर कोन धरि सुधारवाद रूपी आन्दोलनक परिणामस्वरूप आगाँ बढ़ल। असमियाक बेजबरुआ, उड़ियाक फकीर मोहन सेनापति, तेलुगुक अप्पाराव, बंगलाक केदारनाथ बनर्जी ई सभ गोटे कखनो नारीक प्रति समर्थनमे तँ कखनो समाजक सूदखोरक विरुद्ध अबैत गेलाह। नेपाली भाषामे "देवी को बलि" सूर्यकान्त ज्ञवाली द्वारा दसहराक पशुबलि प्रथाक विरुद्ध लिखल गेल। कोनो कथा प्रेमक बंधनक मध्य जाति-धनक सीमाक विरुद्ध तँ कोनो दलित समाजक स्थिति आ धार्मिक अंधविश्वासक विषयमे लिखल गेल। आ ई सभ करैत सर्वदा कथाक अन्त सुखद होइत छल सेहो नै।

वाद: साहित्य: उत्तर आधुनिक, अस्तित्ववादी, मानवतावादी, ई सभ विचारधारा दर्शनशास्त्रक विचारधारा थिक। पहिने दर्शनमे विज्ञान, इतिहास, समाज-राजनीति, अर्थशास्त्र, कला-विज्ञान आ भाषा सम्मिलित रहैत छल। मुदा जेना-जेना विज्ञान आ कलाक शाखा सभ विशिष्टता प्राप्त करैत गेल, विशेष कऽ विज्ञान, तँ दर्शनमे गणित आ विज्ञान मैथेमेटिकल लॉजिक धरि सीमित रहि गेल। दार्शनिक आगमन आ निगमनक अध्ययन प्रणाली, विश्लेषणात्मक प्रणाली दिस बढ़ल। मार्क्स जे दुनिया भरिक गरीबक लेल एकटा दैवीय हस्तक्षेपक समान छलाह, द्वन्द्वात्मक प्रणालीकेँ अपन व्याख्याक आधार बनओलन्हि। आइ-काल्हिक "डिसकसन" वा द्वन्द्व जइमे पक्ष-विपक्ष, दुनू सम्मिलित अछि, दर्शनक (माधवाचार्यक सर्वदर्शन संग्रह-द्रष्टव्य) खण्डन-मण्डन प्रणालीमे पहिनहियेसँ विद्यमान छल।

से इतिहासक अन्तक घोषणा कयनिहार फ्रांसिस फुकियामा -जे कम्युनिस्ट शासनक समाप्तिपर ई घोषणा कयने छलाह- बादमे ऐसँ पलटि गेलाह। कम्यूनिस्ट शासनक समाप्ति आ बर्लिनक देबालक खसबाक बाद फ्रांसिस फुकियामा घोषित कएलन्हि जे विचारधाराक आपसी झगड़ा (द्वन्द्व) सँ सृजित इतिहासक ई समाप्ति अछि आ आब मानवक हितक विचारधारा मात्र आगाँ बढ़त। मुदा किछु दिन बाद ओ ऐ मतसँ आपस भऽ गेलाह आ कहलन्हि जे समाजक भीतर आ राष्ट्रीयताक मध्य अखनो बहुत रास भिन्न विचारधारा बाँचल अछि। तहिना उत्तर आधुनिकतावादी विचारक जैक्स डेरीडा भाषाकेँ विखण्डित कऽ ई सिद्ध केलन्हि जे विखण्डित भाग ढेर रास विभिन्न आधारपर आश्रित अछि आ बिना ओकरा बुझने भाषाक अर्थ हम नै लगा सकैत छी।

उत्तर-आधुनिकतावाद सेहो अपन प्रारम्भिक उत्साहक बाद ठमकि गेल अछि। अस्तित्ववाद, मानवतावाद, प्रगतिवाद, रोमेन्टिसिज्म, समाजशास्त्रीय विश्लेषण ई सभ संश्लेषणात्मक समीक्षा प्रणालीमे सम्मिलित भऽ अपन अस्तित्व बचेने अछि।

साइको-एनेलिसिस वैज्ञानिकतापर आधारित रहबाक कारण द्वन्द्वात्मक प्रणाली जकाँ अपन अस्तित्व बचेने रहत।

आधुनिक कथा अछि की? ई केहन हेबाक चाही? एकर किछु उद्देश्य अछि आकि हेबाक चाही? आ तकर निर्धारण कोना कएल जाय ?

कोनो कथाक आधार मनोविज्ञान सेहो होइत अछि। कथाक उद्देश्य समाजक आवश्यकताक अनुसार आ कथा यात्रामे परिवर्तन समाजमे भेल आ होइत परिवर्तनक अनुरूपे हेबाक चाही। मुदा संगमे ओइ समाजक संस्कृतिसँ ई कथा स्वयमेव नियन्त्रित होइत अछि। आ ऐमे ओइ समाजक ऐतिहासिक अस्तित्व सोझाँ अबैत अछि।

जे हम वैदिक आख्यानक गप करी तँ ओ राष्ट्रक संग प्रेमकेँ सोझाँ अनैत अछि। आ समाजक संग मिलि कऽ रहनाइ सिखबैत अछि। जातक कथा लोक-भाषाक प्रसारक संग बौद्ध-धर्म प्रसारक इच्छा सेहो रखैत अछि।

मुस्लिम जगतक कथा जेना रूमीक “मसनवी” फारसी साहित्यक विशिष्ट ग्रन्थ अछि जे ज्ञानक महत्व आ राज्यक उन्नतिक शिक्षा दैत अछि।

आजुक कथा ऐ सभ वस्तुकेँ समेटैत अछि आ एकटा प्रबुद्ध आ मानवीय समाजक निर्माणक दिस आगाँ बढ़ैत अछि। आ जे से नै अछि तँ ई ओकर उद्देश्यमे सम्मिलित हेबाक चाही। आ तखने कथाक विश्लेषण आ समालोचना पाठकीय विवशता बनि सकत।

मनोविश्लेषण आ द्वन्द्वात्मक पद्धति जेकाँ फुकियामा आ डेरीडाक विश्लेषण सेहो संश्लेषित भऽ समीक्षाक लेल स्थायी प्रतिमान बनल रहत।

ककरा लेल कथा लिखी? वा कही? कथाक वाद: जिनका विषयमे लिखब से तँ पढ़ताह नै। कथा पढ़ि लोक प्रबुद्ध भऽ जायत ? गीताक सप्पत खा कऽ झूठ बजनिहारक संख्या कम नै। तँ की एहन कसौटीपर रचित कथाक महत्व कम भऽ जायत ?

सभ प्रबुद्ध नै हेताह तँ स्वस्थ मनोरंजन तँ प्राप्त कऽ सकताह। आ जे एकोटा व्यक्ति कथा पढ़ि ओइ दिशामे सोचत तँ कथाक सार्थकता सिद्ध हएत। आ जकरा लेल

रचित अछि ई कथा जे ओ नै, तँ ओकर ओइ परिस्थितिमे हस्तक्षेप करबामे सक्षम व्यक्ति तँ पढ़ताह। आ जा ई रहत ताधरि ऐ तरहक कथा रचित कएल जाइत रहत।

आ जे समाज बदलत तँ सामाजिक मूल्य सनातन रहत? प्रगतिशील कथामे अनुभवक पुनर्निर्माण करब, परिवर्तनशील समाजक लेल, जइसँ प्राकृतिक आ सामाजिक यथार्थक बीच समायोजन हुअए। आकि ऐ परिवर्तनशील समयकेँ स्थायित्व देबा लेल परम्पराक स्थायी आ मूल तत्वपर आधारित कथाक आवश्यकता अछि्? व्यक्ति-हित आ समाज-हितमे द्वैध अछि आ दुनू परस्पर विरोधी अछि। ऐमे संयोजन आवश्यक। विश्व दृष्टि आवश्यक। कथा मात्र विचारक उत्पत्ति नै अछि जे रोशनाइसँ कागचपर जेना-तेना उतारि देलिऐ। ई सामाजिक-ऐतिहासिक दशासँ निर्दिशित होइत अछि।

तँ कथा आदर्शवादी हुअय, प्रकृतिवादी हुअय वा यथार्थवादी हुअय। आकि ई मानवतावादी, सामाजिकतावादी वा अनुभवकेँ महत्व देमयबला ज्ञानेन्द्रिय-यथार्थवादी हुअय? आ नै तँ कथा प्रयोजनमूलक हुअय। ऐमे उपयोगितावाद, प्रयोगवाद, व्यवहारवाद, कारणवाद, अर्थक्रियावाद आ फलवाद सभ सम्मिलित अछि। ई सभसँ आधुनिक दृष्टिकोण अछि। अपनाकेँ अभिव्यक्त केनाइ मानवीय स्वभाव अछि। मुदा ओ सामाजिक निअममे सीमित भऽ जाइत अछि। परिस्थितिसँ प्रभावित भऽ जाइत अछि।

तँ कथा अनुभवकेँ पुनर्रचित कऽ गढ़ल जायत। आ व्यक्तिगत चेतना तखन सामाजिक आ सामूहिक चेतना बनि पाओत। शोषककेँ अपन प्रवृत्तिपर अंकुश लगबय पड़तन्हि। तँ शोषितकेँ एकर विरोध मुखर रूपमे करय पड़तन्हि।

स्वतंत्रता- सामाजिक परिवर्तन। कथा तखन संप्रेषित हएत, संवादक माध्यम बनत। कथा समाजक लेल शस्त्र तखने बनि सकत, शक्ति तखने बनि सकत।

जे कथाकार उपदेश देताह तँ ज्ञानक हस्तांतरण करताह, जकर आवश्यकता आब नै छै। जखन कथाकार सम्वाद शुरू करताह तखने मुक्तिक वातावरण बनत आ सम्वादमे भाग लेनिहार पाठक जड़तासँ त्राण पओताह।

कथा क्रमबद्ध हुअय आ सुग्राह्य हुअय तखने ई उद्देश्य प्राप्त करत। बुद्धिपरक नै व्यवहारपरक बनत। वैदिक साहित्यक आख्यानक उदारता संवादकेँ जन्म दैत छल जे पौराणिक साहित्यक रुढ़िवादिता खतम कय देलक।

आ संवादक पुनर्स्थापना लेल कथाकारमे विश्वास हेबाक चाही- तर्क-परक विश्वास आ अनुभवपरक विश्वास, जे सुभाषचन्द्र यादवमे छन्हि। प्रत्यक्षवादक विश्लेषणात्मक दर्शन वस्तुक नै, भाषिक कथन आ अवधारणाक विश्लेषण करैत अछि से सुभाषजीक कथामे सर्वत्र देखबामे आओत। विश्लेषणात्मक अथवा तार्किक प्रत्यक्षवाद आ अस्तित्ववादक जन्म विज्ञानक प्रति प्रतिक्रियाक रूपमे भेल। ऐसँ विज्ञानक द्विअर्थी विचारकेँ स्पष्ट कएल गेल।

प्रघटनाशास्त्रमे चेतनाक प्रदत्तक प्रदत्त रूपमे अध्ययन होइत अछि। अनुभूति विशिष्ट मानसिक क्रियाक तथ्यक निरीक्षण अछि। वस्तुकेँ निरपेक्ष आ विशुद्ध रूपमे देखबाक ई माध्यम अछि। अस्तित्ववादमे मनुष्य-अहि मात्र मनुष्य अछि। ओ जे किछु निर्माण करैत अछि ओइसँ पृथक ओ किछु नै अछि, स्वतंत्र हेबा लेल अभिशप्त अछि (सार्त्र)। हेगेलक डायलेक्टिक्स द्वारा विश्लेषण आ संश्लेषणक अंतहीन अंतस्संबंध द्वारा प्रक्रियाक गुण निर्णय आ अस्तित्व निर्णय करबापर जोर देलन्हि। मूलतत्व जतेक गहींर हएत ओतेक स्वरूपसँ दूर रहत आ वास्तविकतासँ लग।

क्वान्टम सिद्धान्त आ अनसरटेन्टी प्रिन्सिपल सेहो आधुनिक चिन्तनकेँ प्रभावित केने अछि। देखाइ पड़एबला वास्तविकता सँ दूर भीतरक आ बाहरक प्रक्रिया सभ शक्ति-ऊर्जाक छोट तत्वक आदान-प्रदानसँ सम्भव होइत अछि। अनिश्चितताक सिद्धान्त द्वारा स्थिति आ स्वरूप, अन्दाजसँ निश्चित करय पड़ैत अछि।

तीनसँ बेशी डाइमेन्सनक विश्वक परिकल्पना आ स्टीफन हॉकिन्सक “अ ब्रिफ हिस्ट्री ऑफ टाइम” सोझे-सोझी भगवानक अस्तित्वकेँ खतम कऽ रहल अछि कारण ऐसँ भगवानक मृत्युक अवधारणा सेहो सोझाँ आयल अछि, से एखन विश्वक नियन्ताक अस्तित्व खतरामे पड़ल अछि। भगवानक मृत्यु आ इतिहासक समाप्तिक परिप्रेक्ष्यमे मैथिली कथा कहिया धरि खिस्सा कहैत रहत ? लघु, अति-लघु कथा (बीहनि कथा), कथा, गल्प आदिक विश्लेषणमे लागल रहत?

जेना वर्चुअल रिअलिटी वास्तविकता केँ कृत्रिम रूपेँ सोझाँ आनि चेतनाकेँ ओकरा संग एकाकार करैत अछि तहिना बिना तीनसँ बेशी बीमक परिकल्पनाक हम प्रकाशक गतिसँ जे सिन्धुघाटी सभ्यतासँ चली तँ तइयो ब्रह्माण्डक पार आइ धरि नै पहुँचि सकब। ई सूर्य अरब-खरब आन सूर्यमेसँ एकटा मध्यम कोटिक तरेगण- मेडिओकर स्टार- अछि। ओइ मेडिओकर स्टारक एकटा ग्रह पृथ्वी आ ओकर एकटा नग्र-गाममे रहनिहार हम सभ अपन माथपर हाथ राखि चिन्तित छी जे हमर समस्यासँ

पैघ ककर समस्या? हमर कथाक समक्ष ई सभ वैज्ञानिक आ दार्शनिक तथ्य चुनौतीक रूपमे आयल अछि।

होलिस्टिक आकि सम्पूर्णताक समन्वय करय पड़त ! ई दर्शन दार्शनिक सँ वास्तविक तखने बनत।

पोस्टस्ट्रक्चरल मेथोडोलोजी भाषाक अर्थ, शब्द, तकर अर्थ, व्याकरणक निअम सँ नै वरन् अर्थ निर्माण प्रक्रियासँ लगबैत अछि। सभ तरहक व्यक्ति, समूह लेल ई विभिन्न अर्थ धारण करैत अछि। भाषा आ विश्वमे कोनो अन्तिम सम्बन्ध नै होइत अछि। शब्द आ ओकर पाठ केर अन्तिम अर्थ वा अपन विशिष्ट अर्थ नै होइत अछि।

ऐ सम्बन्धमे सुभाष चन्द्र यादवक निम्न विचार छन्हि:

“कोनो लेखक सँ ई अपेक्षा केनाइ जे ओ अपन रचनाक स्पष्टीकरण आ व्याख्या करए एकटा अनुचित अपेक्षा होएत। ई काज लेखकक नहि थिकैक। रचना चाहे कतबो दुर्बोध्य आ विवादास्पद हो, लेखक ओहि लेल जिम्मेदार तऽ होइत अछि, मुदा ओकर भाष्यकार हेबाक लेल बाध्य नहि। लेखक ककरा-ककरा अपन रचना बुझेने फिरत आ किएक? की ई सम्भव छैक? लेखक जँ चाहए तऽ अपन जीवनकालमे रचनाक संदर्भमे किछु सम्वाद स्थापित कऽ सकैत अछि, मुदा मृत्योपरांत? पाठक अपन बोध आ विवेकक अनुसार रचनाक पाठ करैत अछि। हरेक युगक सेहो अपन भिन्न बोध होइत छैक। तँ ई पथ भिन्नता आ परिवर्त्तनशीलता हरेक समर्थ रचनाक आनिवार्य गुण होइत अछि। समय के संग-संग रचनाक संवेदनात्मक अभिप्राय बदलैत रहैत छैक। तँ ई युग बदलला पर रचनाक व्याख्या सेहो बदलि जाइत छैक। एहि तरहेँ कोनो एकटा रचना के एक्के टा आ समान पाठ नहि होइत अछि; मूल्यवान रचनाक पाठ अनंत होइत अछि। पाठ पर लेखकक नियंत्रण नहि होइत छैक। तँ ऐ पाठ भिन्नताक लेल ओकरा सफाइ आ स्पष्टीकरण देबाक कोनो बेगरता नहि हेबाक चाही। हमर अपन अनुभव तऽ ई अछि जे जाधरि कोनो घटना कलात्मक विजनसँ दीप्त नहि होएत ताधरि ओ रचनामे रूपांतरित नहि भऽ सकत। ओहि आरंभिक विजनकेँ पाठक भिन्न-भिन्न रूपेँ पकड़ैत अछि आ अलग-अलग व्याख्या करैत अछि। हमरा लगैत अछि जे कोनो रचनाक विजन आ दर्शनकेँ पाठक भले नहि बुझि पबैत हो, ओकर मर्मकेँ जरूर पकड़ि लैत अछि; ओकर संवेदनात्मक तत्वकेँ हृदयंगम कऽ लैत अछि। लोककथा सँ उदाहरण ली तऽ बात बेशी स्पष्ट होएत। एकटा

चिनमा खेलिऐ रओ भइया तइ ले पकड़ने जाइए’- एहि उक्तिमे न्याय आ समानताकेँ जे विमर्श आ दर्शन छैक, तकरा पाठक भले नहि बूझि पबैत हो, मुदा स्वतंत्रताक लेल जे फुद्दीक आर्तनाद छैक तकर अनुभव पाठक अवश्य कऽ लैत अछि। तहिना हमर कथा ‘नदी’ आ ‘कनियाँ पुतरा’मे जीवनदायिनी शक्तिक रूपमे प्रेमकेँ जे विजन (दर्शन) छैक तकरा बूझब ओतेक आसान जँ नहियो होइ, तैयो नेहक अनुभूति तऽ पाठक करिते अछि। साहित्यमे असली चीज ईएह संवेदना या मर्म होइत छैक। कोनो विचार (या दर्शन) संवेदनेक माध्यमसँ पाठक धरि पहुँचबाक चाही; कोनो नीरस विमर्श या नाराबाजीक रूपमे नहि। हमरा बुझने धर्म आ संस्कृतिक भित्ति प्रेमे थिक। प्रेमसँ बढ़ि कऽ एहि संसारमे कोनो दोसर भाव नहि अछि। हमर कथा सभ कोनो विचारधारात्मक या आचारशास्त्रीय आग्रह लऽ कऽ नहि चलैत अछि। ओ अपन समयकेँ आचार-विचारकेँ व्यक्त तऽ करैत अछि, मुदा ओहि सँ बद्ध नहि अछि। हमर धारणा अछि जे कलाकृति कोनो क्रांति नहि अनैत अछि। ओ मनुक्खक भावात्मक अभिवृत्ति आ दृष्टिकेँ बहुत सूक्ष्म ढ़ंगसँ बदलैत अछि आ दीर्घकालिक सामाजिक परिवर्त्तनक घटक होइत अछि। एकर अतिरिक्त आर किछु नहि। जे आलोचक एहिसँ इतर कोनो अपेक्षा आ आग्रह (जेना मैथिलीक चेतनावादी हठ) लऽ कऽ साहित्य लग जाएत, से अपनोकेँ ठकत आ दोसरोकेँ धोखा देत।”

आधुनिक आ उत्तर आधुनिक तर्क, वास्तविकता, सम्वाद आ विचारक आदान-प्रदानसँ आधुनिकताक जन्म भेल। मुदा फेर नव-वामपंथी आन्दोलन फ्रांसमे आयल आ सर्वनाशवाद आ अराजकतावाद आन्दोलन सन विचारधारा सेहो आयल। ई सभ आधुनिक विचार-प्रक्रिया प्रणाली ओकर आस्था-अवधारणासँ बहार भेल अविश्वासपर आधारित छल।

पाठमे नुकायल अर्थक स्थान-काल संदर्भक परिप्रेक्ष्यमे व्याख्या शुरू भेल आ भाषाकेँ खेलक माध्यम बनाओल गेल- लंगुएज गेम। आ ऐ सभ सत्ताक आ वैधता आ ओकर स्तरीकरणक आलोचनाक रूपमे आयल पोस्टमॉडर्निज्म।

कंप्युटर आ सूचना क्रान्ति जइमे कोनो तंत्रांशक निर्माता ओकर निर्माण कऽ ओकरा विश्वव्यापी अन्तर्जालपर राखि दैत छथि आ ओ तंत्रांश अपन निर्मातासँ स्वतंत्र अपन काज करैत रहैत अछि, किछु ओहनो कार्य जे एकर निर्माता ओकरा लेल निर्मित नै कयने छथि। आ किछु हस्तक्षेप-तंत्रांश जेना वायरस, एकरा मार्गसँ हटाबैत अछि, विध्वंसक बनबैत अछि तँ ऐ वायरसक एंटी वायरस सेहो एकटा तंत्रांश अछि, जे

ओकरा ठीक करैत अछि आ जे ओकरो सँ ठीक नै होइत अछि तखन कम्प्युटरक बैकप लऽ ओकरा फॉर्मेट कए देल जाइत अछि- क्लीन स्लेट !

पूँजीवादक जनम भेल औद्योगिक क्रान्तिसँ आ आब पोस्ट इन्डस्ट्रियल समाजमे उत्पादनक बदला सूचना आ संचारक महत्व बढ़ि गेल अछि, संगणकक भूमिका समाजमे बढ़ि गेल अछि। मोबाइल, क्रेडिट-कार्ड आ सभ एहन वस्तु चिप्स आधारित अछि। २००८क कोसीक बाढ़िमे गौरीनाथजी गाममे फाँसल छलाह, भोजन लेल मारि पड़ैत रहय मुदा क्रेडिट कार्डसँ ए.सी.टिकट बुक भऽ गेलन्हि। मिथिलाक समाजमे सूचना आ संगणकक भूमिकाक आर कोन दोसर उदाहरण चाही? गुलोमे सेहो अहाँ मोबाइल चार्ज करबाक बिजनेसक चर्चा देखैत छी।

डी कन्सट्रक्शन आ री कन्सट्रक्शन विचार रचना प्रक्रियाक पुनर्गठन कैँ देखबैत अछि जे उत्तर औद्योगिक कालमे चेतनाक निर्माण नव रूपमे भऽ रहल अछि। इतिहास तँ नै मुदा परम्परागत इतिहासक अन्त भऽ गेल अछि। राज्य, वर्ग, राष्ट्र, दल, समाज, परिवार, नैतिकता, विवाह सभ फेरसँ परिभाषित कएल जा रहल अछि। मारते रास परिवर्तनक परिणामसँ, विखंडित भऽ सन्दर्भहीन भऽ गेल अछि कतेक संस्था।

मैथिलीमे नीक कथा नै, नीक नाटक नै? मैथिलीमे व्याकरण नै? पनिसोह आ पनिगर ऐ तरहक विश्लेषण कतऽ अछि मैथिली व्याकरण मे, वएह अनल, पावक सभ अछि ! सुभाष चन्द्र यादवक कथा यात्राक सन्दर्भमे ई गप कहब आवश्यक छल।

जइ समय मैथिलीक समस्या घर-घरसँ मैथिलीक निष्कासन अछि, जखन हिन्दीमे एक हाथ अजमेलाक बाद नाम नै भेला उत्तर लोक मैथिलीक कथा-कविता लिखि आ सम्पादक-आलोचक भऽ, अपन महत्वाकांक्षाक भारसँ मैथिली कथा-कविताक वातावरणकेँ भरिया रहल छथि, मार्क्सवाद, फेमिनिज्म आ धर्मनिरपेक्षता घोसिया-घोसिया कऽ कथा-कवितामे भरल जा रहल अछि, तखन स्तरक निर्धारण सएह कऽ रहल अछि, स्तरहीनताक बेढ़ वाद बनल अछि।

जे गरीब आ निम्न जातीयक शोषण आ ओकरा हतोत्साहित करबामे लागल छथि से मार्क्सवादक शरणमे, जे महिलाकेँ अपमानित केलन्हि से फेमिनिज्मक शरणमे आ जे साम्प्रदायिक छथि ओ धर्मनिरपेक्षताक शरणमे जाइत छथि।

ओना साम्प्रदायिक लोक फेमिनिस्ट, महिला विरोधी मार्क्सिस्ट आ ऐ तरहक कतेक गठबंधन आ मठमे जाइत देखल गेल छथि। क्यो राजकमलक बड़ाइमे लागल अछि, तँ क्यो यात्रीक आ धूमकेतुक, आ हुनका लोकनिक तँ की पक्ष राखत तकर

आरिमे अपनाकेँ आगाँ राखि रहल अछि। यात्रीक पारोकेँ आ राजकमल आ धूमकेतुक कथाकेँ आइयो स्वीकार नै कएल गेल अछि- ऐ तरहक अनर्गल प्रलाप !

क्यो तथाकथित विवादास्पद कथाक सम्पादन कऽ स्वयं विवाद उत्पन्न कए अपनाकेँ आगाँ राखि रहल छथि। मात्र मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक लेखनक बीच सीमित प्रतियोगिता जइ कवि-कथाकारकेँ विचलित कऽ रहल छन्हि आ हिन्दी छोड़ि मैथिलीमे एबाक बाद जइ गतिसँ ओ ई सभ करतब कऽ रहल छथि, तिनका मैथिलीक मुख्य समस्यापर ध्यान कहिया जेतन्हि से नै जानि ? लोक ईहो बुझैत छथि जे हिन्दीक बाद जे मैथिलीमे लिखब , तँ स्वीकृति त्वरित गतिएँ भेटत ? जे मैथिलीक रचनाकारेँकेँ ऐ तरहक भ्रम छन्हि आ आत्मविश्वासक अभाव छन्हि, अपन मातृभाषाक संप्रेषणीयतापर अविश्वास (!), तखन ऐ भाषाक भविष्य हिनका लोकनिक कान्हपर दऽ कोन छद्म हम सभ संजोगि रहल छी ?

मैथिलीमे बीस टा लिखनहार छलाह आ पाँचटा पढ़निहार, से कोन विवाद उठल हएत? राजकमल/ यात्रीक मैथिलीक लेखन सौम्य अछि, से हुनकर सभक गोट-गोट रचना पढ़ि कऽ हम कहि सकैत छी। तइ स्थिति मे- ई विवाद रहय ऐ कवितामे आ ऐ कथामे- ऐ तरहक गप आनि आ ओकर पक्षमे अपन तर्क दऽ अपन लेखनी चमकायब?

आ तकर बाद यात्रीक बाद पहिल उपन्यासकार फलना आ राजकमलक बाद पहिल कवि चिलना-आब तँ कथाकार आ कविक जोड़ी सेहो सोझाँ अबैत अछि, एक दोसराक भक्तिमे आ आपसी वादकेँ आगाँ बढ़एबा लेल।

मैथिलीक मुख्य समस्या अछि जे ई भाषा ऐ सीमित प्रतियोगी (दुर्घर्ष!) सभक आपसी महत्वाकांक्षाक मारिक बीच मरि रहल अछि। कवि-कथाकार मैथिलीकेँ अपन कैरिअर बना लेलन्हि, सेमीनारक वस्तु बना देलन्हि। तखन कतऽ पाठक आ कोन विवाद !

जे समस्या हम देखि रहल छी जे बच्चाकेँ मैथिलीक वातावरण भेटओ आ सभ जातिक लोक ऐ भाषासँ प्रेम करथि तइ लेल कथा आ कविता कतऽ आगाँ अछि ? कएकटा विज्ञान कथा, बाल-किशोर कथा-कविता कैरियरजीवी कवि-कथाकार लिखि रहल छथि।

सय-दू सय कॉपी पोथी छपबा कऽ , तकर समीक्षा करबा कऽ, सय-दू सय कॉपी छपयबला पत्रिकामे छपबा कय, तकर फोटोस्टेट कॉपी फोल्डर बना कऽ घरमे

राखि पुरस्कार लेल आ सिलेबसमे किताब लगेबा लेल कयल गेल तिकड़मक वातावरणमे हमर आस गैर मैथिल ब्राह्मण-कर्ण कायस्थ पाठक आ लेखकपर जा स्थिर भऽ गेल अछि।

जे अपन घर-परिवार नै सम्हारि सकला से ढेरी-ढाकी भाषायी पुरस्कार लऽ बैसल छथि, मिथिला राज्य बनेबामे लागल छथि , पता नै राज्य कोना सम्हारि सकताह।

मराठी, उर्दू, तमिल, कन्नड़सँ मैथिली अनुवाद पुरस्कार निर्लज्जतासँ लैत छथि , वणक्कम केर अर्थ पुछबन्हि से नै अबैत छन्हि, अलिफ-बे-से केर ज्ञान नै, मराठीमे कोनो बच्चासँ गप करबाक सामर्थ्य नै छन्हि। आ मैथिलीमे हुनकर माथ फुटबासँ ऐ द्वारे बचि जाइत छन्हि कारण अपने छपबा कऽ समीक्षा करबैत छथि, से पाठक तँ छन्हि नै। पाठक नै रहयमे हुनका लोकनिकैँ फाएदा छन्हि। आ ऐ पुरस्कार सभमे जूरी आ एडवाइजरी बोर्ड अपनाकैँ आगाँ करबामे जखन स्वयं आगाँ अबैत छथि तखन ऐ सीमित प्रतियोगी लोकनिक आत्मविश्वास कतेक दुर्बल छन्हि , सएह सोझाँ अबैत अछि।

जिनकर सन्तान साहित्यमे नै अयलाह हुनकर चरचा फेर केना हएत, हुनकर पक्ष के आगाँ राखत ? मैथिली साहित्यक ऐ सत्यकैँ देखार करबाक आवश्यकता अछि। आँखि मुनि कऽ सेहो एकर समाधान लोक मुदा ताकिये रहल छथि।

कथा-कविता-नाटक-निबन्ध संग्रह सभक सम्पादकक चेला चपाटी मैथिलीक सर्वकालीन संकलनमे स्थान पाबि जाइत छथि। पत्रिका सभक सेहो वएह स्थिति अछि। व्यक्तिगत महत्वाकांक्षामे कटाउझ करैत बिन पाठकक ई पत्रिका सभ स्वयं मरि रहल अछि आ मैथिलीकैँ मारि रहल अछि। ड्राइंग रूममे बिना फील्डवर्कक लिखल लोककथा जइ भाषामे लिखल जाइत हुअय, ओतय ऐ तरहक हास्यास्पद कटाउझ स्वाभाविक अछि। आब तँ अन्तर्जालपर सेहो मैथिलीक किछु जालवृत्तपर जातिगत कटाउझ आ अपशब्दक प्रयोग देखबामे आएल अछि।

मार्क्सिस्ट आ फेमिनिस्ट बनि तकरो व्यापार शुरू करब आ अपन स्तरक न्यूनताक ऐ तरहेँ पूर्ति करब, सीमित प्रतियोगिता मध्य अल्प प्रतिभायुक्त साहित्यकारक ई हथियार बनि गेल अछि। जे मार्क्सक आदर करत से ई किएक कहत जे हम मार्क्सवादी आलोचक आकि लेखक छी ? हँ जे मार्क्सक धंधा करत तकर विषयमे की कही। आ तकर कारण सेहो स्पष्ट। राष्ट्रीय सर्वेक्षण ई देखबैत अछि जे

संस्कृत, हिन्दी, मैथिली आ आन साहित्य कॉलेजमे वएह पढ़ैत छथि जिनका दोसर विषयमे नामांकन नै भेटैत छन्हि, पत्रकारितामे सेहो यएह सभ अबैत छथि। प्रतिभा विपन्न एहने साहित्यसेवीकेँ साहित्यक चश्का लागल छन्हि आ हिनके हाथमे मैथिली भाषाक भविष्य सुरक्षित रहत? मुदा ऐ वास्तविकताक संग आगाँक बाट हमरा सभक प्रतीक्षामे अछि। सुच्चा मैथिली सेवी कथाकार आ पाठक जे धूरा-गरदामे जएबा लेल तैयार होथि, बच्चा आ स्त्री जनताक साहित्य रचथि आ अपन ऊर्जा मैथिलीकेँ जीवित रखबा मात्रमे लगाबथि ओ श्रेणी तैयार हेबे टा करत।

मैथिलीक नामपर कोनो कम्प्रोमाइज नै। सुभाषचन्द्र यादवजीक ई संग्रह धारावहिक रूपमे "विदेह" ई-पत्रिकामे (http://www.videha.co.in) अन्तर्जालपर ई-प्रकाशित भऽ हजारक-हजार पाठकक स्नेह पओलक, ऑनलाइन कामेन्ट ऐ कथा सभकेँ भेटलैक जइमे बेशी पाठक गैर मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ रहथि, से हम हुनकर सभक उपनाम देखि अन्दाज लगाओल। एतऽ ईहो गप सोझाँ आयल जे शिक्षाक अभावक कारण सेहो, भाषाक उच्चारण आ वाचन मे अंतर अबै-ए। तकर ई मतलब नै जे बलचनमाक भाषा एखनो यादव जी बजैत छथि, आब जे ओ भाषा कथाक यादव पात्र लेल प्रयोग करब तँ शांकुन्तलम् केर संस्कृत नाटकक बीच जनसामान्यक लेल प्रयुक्त प्राकृत जेकाँ लागत, आ ओइ वर्गक लोककेँ अपमानजनक सेहो लगतन्हि। भाषा चलायमान होइत अछि आ लेखन परम्परा ओकर मध्य स्थिरता अनैत अछि। से सुभाषजीक भाषामे सेहो ई अन्तर स्पष्ट देखबामे अबैत अछि, हुनकर कथाक भाषा आ निबन्धादिक भाषा मध्य।

जूलिया क्रिस्टोवा अपन प्रस्तुति "वर्ड, डायलॉग एण्ड नोवल"मे इण्टर-टेक्स्टुअलिटी माने अन्तर-पाठ्यताक संकल्पना देलन्हि, मने कोनो पाठ एकटा देबारमे बन्न नै रहि सकैए। से ओ पाठकेँ संकलन कहै छथि।

आब गुलोमे देखू, रंजीता रंजनसँ छह वोटक एक हजार टका नरेशबा दियेतै। मुदा ओ निपत्ता भऽ जाइ छै। फुलबा मोदीकेँ जितेतै। एम.पी. केर एलेक्शन छिऐ।

से सुभाष चन्द्र यादव टेक्स्टक कनटेक्सट ताकि लेने छला २०१५ मे। से हुनका भीतर घुरियाइत हेतन्हि आ से विस्तृत रूपमे बहार भेल "भोट"मे एम.एल.ए. केर भेल एलेक्शनक संग २०२२ मे।

से अन्तर-पाठ स्थापित करैत अछि अन्तर-विषयक विषय-वस्तु। ई सभटा पाठ आ विषय एक दोसरासँ रगड़ा लैत रहैए आ एक दोसराक प्रभावकेँ खतम करैत रहैए,

कखनो कोनो पाठ आगाँ तँ कखनो दोसर। आ ऐ पाठकेँ अहाँ समाज आ संस्कृतिक आधारसँ अलग नै कऽ सकै छिऐ। से समाज-संस्कृतिक पाठ आ साहित्यक पाठ मिज्झर भऽ जाइत अछि।

पाठ अभ्यास आ उत्पादनक विषय अछि। से पहिनेसँ समाज-संस्कृतिक पाठ आ साहित्यिक पाठ दू तरहक स्वर निकालैत अछि।

विचारधाराक संघर्ष आ तनावकेँ पाठ समाहित करैत अछि।

जुलिया क्रिस्टोवाक अनुदैर्घ्य सम्बन्ध बला धूरीमे सोझे लेखक आ पाठकक बीच वार्ता होइ छै। माने लिफाफक बौस्तु आ लिफाफपर लिखल पता केर बीच सोझे वार्ता होइ छै। मुदा जुलिया क्रिस्टोवाक उर्ध्वाधर सम्बन्ध बला धूरीमे "पाठ" मूलधाराक साहित्य संगे सेहो आ एकटा छोट कालावधिमे भेल घटनाक बीच वार्ता करैत अछि। माने पाठ आ ओकर सन्दर्भक बीच वार्ता होइ छै, एक लेखकक पाठ दोसरक लेखकक पाठ संग वार्ता करैए।

ई दुनू धूरी जखन एक दोसराकेँ काटैए तखन शब्द बा पाठ उत्पन्न होइए जइमे कमसँ कम एकटा आर पाठ पढ़ल जा सकैए।

जुलिया क्रिस्टोवा बोली-बानीकेँ यथावत राखबाक आ किछु पाठ, जे मनुक्खसँ अलग अछि, केर रूपमे लेखकक अधिकार आ कर्तव्यक वर्णन करैत छथि।

जूलिया क्रिस्टोवाक प्रस्तुति "वर्ड, डायलॉग एण्ड नोवल"मिखाइल बाखतिनक संकल्पनाकेँ आगाँ बढ़बैत अछि। संगहि जुलिया क्रिस्टोवा भाषाक संकेत आ प्रतीकक रूपमे सेहो विश्लेषण करैत छथि। जखन बच्चा संकेतक रूपमे, लयसँ गप करैत अछि तँ ओइमे संरचना नै होइ छै, अर्थ नै होइ छै। मुदा जखन ओ पैघ होइए तँ ओकरा अपना आ आनमे अन्तर बुझाइ छै, ओ बाजऽ लगैए आ अङनासँ बहराइए। आ तकरा बाद ओ अपनाकेँ मायसँ दूर करैए। मुदा ओ लाक्षणिक सँ एकदम्मे दूर नै होइए वरन् लाक्षणिक आ प्रतीकात्मकक बीचमे झुलैत रहैत अछि। लाक्षणिक स्त्री गुण, संगीतमय, कविता आ लय सँ युक्त; आ प्रतीकात्मक पुरुष गुण, विधि आ संरचनासँ युक्त रहैत अछि। से चलचित्र आदिमे महिलाक शरीरक आ ओकर किरदारक जे अवमूल्यन पुरुष द्वारा कएल जाइत अछि से मायक शरीर द्वारा ओकर अस्तित्वक खतराक डर अछि। मुदा बेबी चाइल्ड अपन मायसँ लग रहैत अछि से ओ लाक्षणिक स्त्री गुण, संगीतमय, कविता आ लय सँ बेशी युक्त रहैत अछि, से ओ मायकेँ

अस्वीकार तँ करैत अछि मुदा ओकरेसँ अपनाकेँ परिभाषित करैत अछि।

जेक्स डेरीडा योनि केन्द्रित विखण्डनात्मक सिद्धान्तसँ नारीवादी विचारधारामे जे हस्तक्षेप करै छथि तकर कोर्नेल समर्थन करैत छथि आ गायत्री चक्रवर्ती स्पीवाक स्वागत। किछु दार्शनिक विचारधारा जइ प्रकारसँ योनीकेँ अप्रत्यक्ष रूपेँ महत्व दइए ततऽ डेरीडा द्वारा योनि-केन्द्रित दृष्टिकोणक सीमाक प्रति ध्यानाकर्षण एकटा सार्थक हस्तक्षेप अछि आ तइसँ प्रतीकक घटकक फेरसँ एकटा प्रक्रियाक अन्तर्गत परिभाषा देब सम्भव भेल अछि।

डेरीडा आपसमे होइबला सम्वादक गुणनखण्डक असम्भाव्यताकेँ देखबै छथि, ओकरा सरल नै कएल जा सकैए। से स्त्रीकेँ अनुमान आ ज्ञानक वस्तुक रूपमे नै देखल जेबाक चाही। पुरुषत्वक सापेक्ष नारीवादकेँ नै देखबाक चाही वरन नारीवाद लेल एकटा अलगे मोहाबरा बनेबाक खगता अछि।

से पाठ, डेरीडा कहै छथि, मोटामोटी एकटा राजनैतिक कार्य अछि जे शक्ति-सम्बन्ध बा तकरा लेल होइत वार्ताक रूपमे परिभाषित कएल जा सकैए। मुदा डेरीडापर आरोप अछि जे ओ नारीक अबाजकेँ पुरुष द्वारा अधिगृहीत करबाबय चाहैत छथि, नारीक एतेक यत्नसँ जे बकार फुटल छन्हि, जे ओ अपना लेल बाजि रहल छथि, से अधिकार ओकरासँ छीनऽ चाहैत छथि। डेरीडाकेँ महिलाक दिन-प्रतिदिनक होइत समस्या आ शक्तिहीनतासँ कोनो मतलब नै छन्हि। डेरीडा विखण्डनात्मक पद्धतिकेँ नीक आ धनात्मक रूपमे लइ छथि आ नारीवादकेँ अस्तित्वक तत्त्वमीमांसाक/ तर्कक द्वैधक रूपमे राखैत छथि, जेना पुरुष स्त्री।

डेरीडा पाश्चात्य दर्शनक केन्द्र आधारित संरचनाक मोहकेँ उघार करैत छथि। सुसियोक भाषाविज्ञानसँ प्रेरित संरचनावाद सांस्कृतिक अस्तित्वक वैज्ञानिक विश्लेषणक प्रयास करैत अछि। लेवी स्ट्रॉसक संरचनात्मक मानव विज्ञान सएह लोकगाथा लेल करैत अछि। तहिना साहित्यमे गद्य आ पद्य लेल संरचनात्मक विश्लेषणक प्रयास कएल जाइत रहल अछि। मुदा डेरीडा एकरा उघार करैत छथि, संरचनावाद अपन विश्लेषण लेल एकटा ठोस आधार ताकैत अछि, व्यवस्थाक बाहर एकटा केन्द्र जइसँ ओ एकर वैज्ञानिक विश्लेषण कऽ सकय, मुदा से मात्र दार्शनिकक आभास मात्र अछि। माने कोनो लोकगाथाक कोनो स्थायी बा निर्धारित संरचना केना भऽ सकैए। से लोककथा बा लोक गाथाक संरचनाक अध्ययन करबा लेल अहाँकेँ ओ विचार बा ओ केन्द्र, जकर आधारपर अहाँ एकर विश्लेषण करऽ चाहैत छी, निर्धारित

करऽ पड़त। डेरीडा कहै छथि जे कोनो संरचना लेल ओकर संकल्पना-विचार आवश्यक अछि, फेर टुकड़ी-टुकड़ी जोड़ि कऽ अहाँ ओकरा बनायब। मुदा बिनु अन्त सोचने संरचना सम्भवे नै अछि। आ से साहित्यमे सेहो अछि। यावत अहाँ कोनो रचना लेल एकटा स्वयंसिद्ध अर्थ नै ताकि लैत छी ओकर संरचना अहाँ नै ताकि सकै छी, कारण अर्थ माने अन्त ओकर संरचनाकें निर्धारित करैत अछि। से संरचनावादीकेँ अर्थ पहिनहियेसँ पता रहै छै आ तखने ओ ओकर विभिन्न अंग आ तकर आपसी सम्बन्धकेँ विश्लेषित कऽ सकैए। आ यएह विश्लेषणसँ पहिले ज्ञात स्वयंसिद्ध अर्थ अछि डेरीडाक केन्द्र। आ डेरीडा कहै छथि जे यएह निर्धारित करैत अछि जे पाठक संरचना केना बनत, कोन अंगकेँ लेल जायत आ कोन अंगकेँ छोड़ल जायत। से जखन हम साहित्यक संरचनाक विश्लेषण करैत छी तँ ओकर अर्थ आ ओकर प्रभावक गप करैत छी तँ हम ओइ संरचनासँ ओइ तत्त्व सभकेँ चिन्हबाक, फराक करबाक प्रयास करैत छी जे ओइ प्रभाव लेल उत्तरदायी अछि, से ओइ सम्भावित पैटर्नकेँ हम छोड़ि दैत छी जे ओ प्रभाव नै आनत। से ई केन्द्र आरम्भिक स्थल अछि संरचनाकेँ बुझबाक हेतु। मुदा ई विश्लेषणकेँ सीमित सेहो करैत अछि। कारण केन्द्र अपनाकेँ स्थिर रखबाक लेल स्तरीकरणक निर्माण करैत अछि, आ ओकरा पर नियंत्रण करैत अछि। आ ई अर्थक पूर्व ज्ञान पाठकक पूर्व इतिहास आ समकालीन आलोचना सिद्धान्त आ विचारधारापर निर्भर सेहो करैत अछि, ईहो सभ तँ संस्कृतिक अंग अछि तखन केना एकरा सभकेँ संरचनासँ दूर राखल जाइए जे एकरा सभकेँ सीमित करैए मुदा अपने एकरा सभसँ सीमित नै होइए? से अपन विश्लेषणक आधार कोनो स्थायी केन्द्रकेँ बनायब एकटा नुस्खा देब सन अछि आ ई प्रतिक्रियावादी बा यथास्थिवादी स्थिति अछि। आ ऐ सँ मानक आ गएर-तुलनात्मक स्वतंत्र अर्थ निकालबाक मात्र इच्छा सिद्ध होइए। से ई भ्रम जे हम संरचना ताकि रहल छी भ्रमे अछि, वास्तवमे अहाँ पाठ्य सामग्रीसँ संरचनाक निर्माण कऽ रहल छी।

से डेरीडाक उत्तर संरचनावादमे सेहो केन्द्रक बिना प्रारम्भ नै भऽ सकैत अछि मुदा ओ ऐ सिद्ध नै भेल स्वयंसिद्धक विखण्डनात्मक विश्लेषणक आधारपर ओइ केन्द्रकेँ दोसर केन्द्र द्वारा स्थानापन्न करैत अछि मुदा ई नव केन्द्र सेहो स्थायी नै रहत।

तहिना सुसियो (Saussure) अपन प्रतीक सिद्धान्तमे प्रतीकक विश्लेषण करैत छथि जे कोनो शब्द जेना बिलाड़ि- बिलाड़ि बिलाड़ि अछि कारण ओ किछु आन नै अछि। से शब्द अछि प्रतीक चिन्ह आ जकरा ओ दर्शाबैत अछि से अछि बौस्तु/ प्रतीक। मुदा डेरीडा कहै छथि जे अहू लेल पहिने एकटा संकल्पना आनऽ पड़ैत अछि।

आ जँ अहाँ प्रतीक चिन्हकेँ निरपेक्ष बना देब जे ओकर कोनो प्रतीकसँ सम्बन्ध नै छै, जे स्वयंमे एकटा स्वतंत्र संकल्पना अछि आ कोनो प्रतीक/ बौस्तुसँ ओकर कोनो प्रत्यक्ष सम्बन्ध नै छै, मुदा तखन ई संकल्पना सभ प्रतीक चिन्हकेँ पार कऽ जायत आ किछुओ सूचिते नै करत। आ जँ हम प्रतीक आ प्रतीक चिन्हकेँ एक्के मानी तँ प्रतीक चिन्हक जड़ियेपर चोट पहुँचत।

से सुसियोक सिद्धान्त तर्काधारितक विपक्षमे अछि जखन ओ कहैत अछि जे प्रतीक चिन्हमे अहाँ प्रतीकक कोनो लक्षण नै देखू। मुदा जखन ओ कहैत छथि जे प्रतीक चिन्ह प्रतीककेँ लक्षित करबा लेल मात्र प्रयुक्त होइत अछि आ तेँ ओकर अधीन अछि ओ तर्क आधारित सिद्धान्तक पक्षमे बुझाइत छथि। से डेरीडा कहैत छथि जे प्रतीक आ प्रतीक चिन्हक ई स्पष्ट भेद मान्य नै अछि, आ प्रतीककेँ प्रतीक चिन्हक ऊपर देल वरीयता सेहो उनटबाक खगता अछि।

प्रतीक चिन्हमे अर्थ पहिनहियेसँ विद्यमान नै रहै छै। आ पूर्ण अर्थ कोनो एकटा प्रतीक चिन्हमे नै भेटत। से पाठकेँ अहाँकेँ घोर-मट्ठा करऽ पड़त, आ ई अनन्त खोज दिस अहाँकेँ धकेलत। से ई प्रतीक चिन्ह दोसर प्रतीक चिन्हसँ अपन अन्तरक आधारपर प्रतीक निर्धारण करैत अछि, जतेक बेशी अन्तर ततेक लग अहाँ प्रतीकसँ होइ छी। मुदा ई कहियो नै हएत जे अहाँ सभटा अन्तर ताकि सकब। मुदा प्रतीक चिन्हमे बारम्बारता हेबाक चाही, तखनो जखन एक प्रतीक चिन्ह भिन्न प्रतीकक निर्धारण करैत अछि। आ ऐ लेल ओइ प्रतीक चिन्हक लिखित इतिहास जानब आवश्यक। से प्रतीक चिन्ह विभिन्न अर्थ आ कखनो काल उल्टा अर्थ सेहो देत।

डेरीडा लिखै छथि जे प्लेटोसँ सुसियो (Saussure) आ लेवी स्ट्रॉस धरि सभ लिखलाहासँ ऊपर बजलाहाकेँ राखै छथि, कारण लिखब एकटा माध्यम अछि, असल चीज तँ वाणी अछि। सुसियो लिखित रूपमे उच्चारण त्रुटिपर ध्यान दियाबैत छथि। मुदा डेरीडा कहै छथि जे ओ सभ विशेषता जे वाणीमे छै से लेखनमे सेहो छै। आगाँ ओ कहै छथि, प्रतीकक विलुप्ति वाणीमे विचारक प्रत्यक्ष रहबाक भ्रम उत्पन्न करैए। मुदा जँ बाजल वाणीकेँ हम रेकॉर्ड कऽ कय सुनी तँ ओहो लिखल अक्षर सन प्रतीकक शृंखले अछि, जइमे विभिन्न प्रतीककेँ ओकर एक-दोसराक अन्तर सँ चिन्हल जा सकैए। आ लेखन सेहो सामान्य लेखन आ चित्रसँ बुझा कऽ कएल लेखन, ऐ दू तरहेँ भऽ सकैए। 'अपन अवस्थितिक तत्त्वमीमांसा' एकर सभक पाछाँ अछि।

पाश्चात्य दर्शनक 'अपन अवस्थितिक तत्त्वमीमांसा'मे जे मुख्य अछि से अछि सद्यः अनुभव- मुदा विखण्डनवाद कहैत अछि जे एहेन कोनो अनुभव परा-भाषा स्तरपर

नै होइत अछि, कारण ई अनुभव भाषाक माध्यमेसँ चिन्हल जाइत अछि। फेर ई जे दैवीय चेतनासँ हम परम सत्यकेँ बुझैत छी मुदा विखण्डनवाद कहैत अछि जे ई मात्र सर्जकक सृजन अछि। फेर ईहो जे कोनो बौस्तुक पाछाँ सत्य नुकायल अछि, मुदा विखण्डनवाद कहैत अछि जे तेहन कोनो स्वतंत्र अस्तित्व नै होइ छै, सभटा निर्माण आ पुनर्निर्माण व्यवस्था द्वारा होइ छै। से सुसियोक स्वतः उपस्थिति किछु नै अछि कारण सभटा व्यवस्थाक अन्तर्गत निर्मित अछि।

डेरीडा कहैत छथि जे तर्क ऐ सभटा दार्शनिक चिन्तनक आधार अछि, से कोनो अन्तिम सत्य आ विश्वात्माक परिकल्पना देल जाइत अछि जे सर्वज्ञानी अछि। मुदा डेरीडा कहै छथि जे ओ सिद्ध नै भेल केन्द्रकेँ कखनो गॉड, कखनो विचार आ कखनो विश्वात्मा कहल गेल आ ओ अपनासँ नीचाँ विभिन्न स्तरक निर्माण केलक। से धर्म गॉडकेँ परम सत्य मानलक आ मनुक्ख आ आन रचनाकेँ ओ अपूर्ण, विरोधी आ ई सभटा केन्द्र बनल जे अपना हिसाबे विचार-व्यवस्था बनेबाक दावा केलक। मुदा एकरा सभकेँ व्यवस्थासँ ऊपर हेबाक चाही। से गॉडक स्वतंत्र रूपसँ धर्मक बाहर उपस्थिति हेबाक चाही। उत्तर संरचनावादी विखण्डनवाद एहेन कोनो परासत्यक उपस्थितिकेँ आभासी मानैत अछि उत्तर संरचनावादी भाषाक सिद्धांतक परिणाम मानैत अछि। से ऐ प्रतीक चिन्ह सभक आपसी खेलमे किछु अर्थ कोनो विचारधाराक हस्तक्षेपसँ उच्च स्थान प्राप्त करैत अछि आ ओकर दोसर अर्थ तकर पाछाँ जेबा लेल धकेल देल जाइत अछि। स्वतंत्रता, गणतंत्र, न्याय आदि सन विचारधारा हमरा सभक जिनगीक भाग छी मुदा लागैए जे ओइ सभसँ हमरा सभक जिनगीक बहुत रास अर्थ निकलल मुदा अन्वेषणक उपरान्त ओ सभ दोसर विचारसँ बहार भेल बुझायत। कोनो संकल्पना एहेन नै अछि जइमे दोसर विचारक अवशेष नै भेटय।

देखी गुलोक पाठ केना शुरू होइत अछि, ई शुरू होइत अछि तिला सकरांति सँ, आङन नीपि रहल अछि गुलोक छोटकी बेटी रिनियां। गुलो उपन्यासक आरम्भ रिनियाँ सँ किए भेल, गुलोक बेटासँ किए नै भेल। कारण जुलिया क्रिस्टोवाक अनुसारे बेटा अपनाकेँ मायसँ दूर करैत अछि, मुदा बेटीमे ओ लय, ओ गुण रहिते छै से ओ दूर होइतो मायसँ, संस्कृतिसँ लग रहैत अछि। कोनो आन प्रकारसँ ऐ उपन्यासक एतेक नीक आरम्भ नै भऽ सकैत छल। गीत गाबि रहल अछि रिनियाँ, फेर पानिक फाहा जकाँ ओस, पछिया हवा आ मायक चिन्तित हएब। "गे चद्दरि ओढ़ि ने ले।"

बादोमे बेटी आ बेटामे अन्तर छैहे- छौड़ी असकरे कखून घर तऽ कखनू गाछी

दौड़ैत रहइ छइ। छौड़ा आठ बजे धरि सुतले रहै छै।

आ फेर अबैए जुलिया क्रिस्टोवाक पुरुख, ओकर ऐंठी।"ने चिन्है छिही तऽ चीन्ह ले।"

की ई हेंठी अहाँ लुटियन्स जोनमे नै देखै छिऐ, सगरे ई हेंठी भेटत। मानव समाजमे, खास कऽ पुरुख पात्रमे।

अपन कथा-कवितापर अपने समीक्षा कऽ आत्ममुग्धताक ई स्थिति समीक्षाक दुर्बलतासँ आयल अछि। ऐ एकमात्र आ पहिल शब्दसँ हमरा वितृष्णा अछि आ तकर निदान हम मैथिलीकेँ देल स्लो-पोइजनिंगक विरुद्ध "विदेह" ई-पत्रिकाक मैथिली साहित्य आन्दोलनमे देखैत छी। बच्चा आ महिलाक संग जाहि तरहेँ गैर मैथिल ब्राह्मण-कर्ण कायस्थ पाठक आ लेखक जुटलाह से अद्भुत छल। हमर ऐ गपपर देल जोरकेँ किछु गोटे (मैथिली) साहित्यकेँ खण्डित करबाक प्रयास कहताह मुदा हमर प्राथमिकता मैथिली अछि, मैथिली साहित्य आन्दोलन अछि, ई भाषा जे मरि जायत तखन ओकर ड्राइंग रूममे बैसल दुर्घर्ष सम्पादक-कवि-कथाकार-मिथिला राज्य आन्दोलकर्ता आ समालोचकक की हेतन्हि। सुभाषचन्द्र यादवजीक कथाक पुनः पाठ आ भाषाक पुनः पाठ ऐ रूपमे हमरा आर आकर्षित करैत अछि। आ एतऽ ईहो सन्दर्भमे सम्मिलित अछि जे सुभाषचन्द्र यादवजीक फिक्शन कथाक पुनः पाठ आ भाषाक पुनः पाठ लऽ लगातार आबि रहल अछि। आ ई घटना मैथिलीकेँ सबल करत से आशा अछि। ❑

आब आउ सुभाष चन्द्र यादवक सभटा मूल रचनाक बेरा-बेरी पाठ करी... घरदेखिया

घरदेखियामे ३५ टा लघुकथा अछि। ऐमे दसम नम्बरपर 'काठक बनल लोक' अछि जे नौमा-दसमाक बिहार विद्यालय परीक्षा समितिक पाठ्यक्रममे गल्प गुच्छ कथा संग्रहमे छल आ तेँ ई कथा सभसँ बेशी लोकप्रिय रहल अछि, सभसँ बेशी लोक एकरा पढ़ने छथि, 'घरदेखिया' कथासँ सेहो बेशी।

प्रकाशकीय मदनेश्वर मिश्र, अध्यक्ष मैथिली अकादमीक अछि। ओ लिखै छथि जे ओ जाहि वर्गक लोकक सुख-दुख, आशा-आकांक्षा, उदासीनता, आक्रोश एवं सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमिक चित्रण कयलनि अछि से एखन तक उपेक्षिते जेकाँ छल आ ईहो जे हिनक कथा बहुत मार्मिक, शैली सहज एवं स्पष्ट तथा भाषा सरल तथा सभक हेतु बोधगम्य रहैत अछि।

१

अभाव (१९७१)

लेखकक रचना लिखबाक, कविताकेँ कएक तरहसँ लिखबाक प्रयास। सुभाष चन्द्र यादव ओना तँ कविता नै लिखै छथि मुदा सन् १९७१ मे लिखल प्रस्तुत कथामे छोट-छोट तीनटा कविता लिखि गेल छथि जे साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त मूल आ अनूदित कविता संग्रहक कविता सभसँ कोनो तरहेँ न्यून नै अछि:-

पहिल कविता

हमर बाँहि आ पीठपर

लगाओल गेल बिल्ला

बिजली जकाँ छिटक' लागल छल।

आ हम कँपैत रहलहुँ

आ वचावक दिशामे

एहि कोनसँ ओहि कोन धरि
भगैत रहलहुँ
जाहि कोठलीमे गेलहुँ
ओकर देबाल धधक’ लागल छलैक
कोठलीसँ निकलिते
मौसम बदलि गेलैक
आ हम मरुभूमिसँ नदी आ
पहाड़क अन्तहीन दूरी
नपैत रहलहुँ

दोसर कविता

शब्द संग नहि देलक कहियो
इच्छित सन्दर्भसँ अलग
बनैत अर्थक दुर्गम पहाड़
असफल रहलहुँ हम
कतहु पहुँचबामे
एक टा यातनामय संसारमे
जीबनक आरम्भ

तेसर कविता

हमर पहुँच ओत’ अछि
जाहि मोड़परसँ
शब्दक अर्थ
परिवर्तित आकारमे आब’ लगैत छैक

मुदा कविता ऐसँ आगाँ नै बढ़लैक।.. तखन ओ सोचने रहय जे काव्य-रचनाक लेल तीव्र दुःखात्मक आवेग आवश्यक छैक। व्यंग्यात्मक कविता लिखबाक प्रयास केलक मुदा सतही आक्रोश मात्र लिखयलैक।

आइ-काल्हिक कथित व्यंग्यकारपर सेहो ई लागू होइत अछि।

२

असंगति (१९७८)

कुकी आवाज देलकैक... ओकरा हाथमे तराउपरी दूटा कप राखल रहैक।

'आर यू गोइंग टू दैट साइड?'

नवीनकेँ तामस उठलैक- कहलैक 'नो', मुदा ओकरा मोनमे होइत रहलैक जे कुकी ओकर बगय देखि के कप लऽ जा कऽ राखय लेल कहय चाहै छल।

३

आँचर (१९६९)

आइ फेर नै उबेर भेलैक- डबल सतरिया। आसिन मास जँ बहय इसान, घर-घर कानय गाय-किसान। ओकर साँय सेहो कहै छै- बाजत ने भुकत आ बैसल-बैसल टुकटुक तकैत रहत। सभ ओकर सुखल आँचरकेँ लक्ष्य करै छै। ने धीया ने पूता, की करतैक। रौद कड़गर भऽ गेल छलैक। ओकरा बुझयलैक जेना तुलसी .. फेर पानि ढारऽ पड़तैक।

४

उत्तर मेघ (१९७२)

५ गोटे मौजी, शीबू, कामू, देबू आ विजेन्द्र। एकरे सभक संगे कथा आगाँ बढ़ैत अछि।

तीन टा मौगी, तीनू मुसहरनी, ओइमेसँ एकटा बुढ़िया। रुसिनिहारि बुढ़ियाक बेटी। बहुत रास नोछारक चेन्ह चेहरापर। आडीक अभाव आ ध्यान नै देलाक कारण दुनू स्तन झूलि रहल छलैक, शीबू, कामू आ विजेन्द्र ओइ दिस तकैत छल। घरक झगड़ा, पति सेहो रहै जकरा दिस बुढिया संकेत करै छै।

पाँचू आगाँ मेला दिस बढ़ि गेल।

फेर आगू एकटा बूढ़ लोक भेटलै, .. एकटा मास्टरनीक जासूसी कऽ घुरल छल।

आगाँ एकटा करिक्की अधवयसू मौगी।.. मौगी छप्पावला पियरका साड़ी आ लाल ब्लाउज पहिरने छलि।.. एकटा पुरुष संगे एकटा कोठलीमे चल गेलैक।

ट्रेनसँ एकटा परिवार उतरलैक, तीन-चारिटा एकतुरिया छौँड़ी सभ.. एक्कोटा नीक नै छैक!- कामू कहलकैक।

अहाँक आस-पास की सभ भऽ रहल अछि के की रोजगार कऽ रहल अछि, बेशी

लोकक़ेँ ई नै बूझल रहै छै।

५

एक टा दुःखान्त कथा (१९७७)

सुगियाक पति अनतऽ गेल रहै, ओ दिअर संगे सम्बन्ध बनबैए, ग्लानि होइ छै। किछु दिनक बाद फेरसँ सभ किछु शुरू भऽ गेल। पाप आकि कोनो पाप नै, दुविधा।

६

एकटा प्रयोग ओहिना (१९७०)

ओ दू घण्टासँ होटलमे बैसल कोनो निर्णय लेबासँ असमर्थ दू बेर चाह पीबि चुकल अछि। शिक्षा, राजनीति, कृषि, बेकारी आ बहुत रास सामयिक प्रसंगक चर्चाक स्वर कानसँ निरन्तर टकराइत छै.. जेबीमे बीसटा पाइ होयब.. मित्र आठ आना देने रहैक। सासुर जायत आ पाइ माङत.. जाड़ मास छोड़ि कोनो मौसममे ओ दिनमे सासुर नै जाइत छल। ओकर सासुर पूरा एक्के कोठलीमे रहैत छैक। से जाड़मे दिनोमे छतपर बैसल रहि सकैत अछि। सासु हितोपदेशक मोटरी लऽ कऽ बैसि गेलैक।

७

एक टा सम्बन्धक अन्त (१९७६)

खेल शुरू.. प्रदीप, रागिनी दत्ता आ विपुल- जे हारतै से कबाब खुएतै, कबाबमे आठ टाका.. से 'हम' चुप्पे रहलथि, पाइ नै छलन्हि। प्रदीप आ 'हम' एक दिस विपुल आ दत्ता दोसर दिस। विपुल दत्ताक ब्वाय-फ्रेण्ड छल, ओकर व्यवहार मुदा ब्वाय-फ्रेण्डक हिसाबे 'हम'केँ विचित्र आ अनभोआर लगलन्हि।

८

एक दीनक घर (१९७३)

ट्रेनक आस, ट्रेन कखन खुजतै, आ जखन खुजलै तँ आउटर सिग्नलपर रुकि गेलै।

छोटी लाइन आ कखनो काल बड़ी लाइनक ट्रेन-गाड़ीमे ऐ तरहक घटना होइत रहैत छलै/अछि। बसमे तँ कमसँ कम पता चलैत रहैत छै जे कोन कारणसँ ओ ठाढ़ अछि, मुदा ट्रेनमे नै। तकरे मनोविश्लेषण कएल गेल अछि।

९

कल्पित मृत्यु (१९७०)

पति-पत्नी सम्वाद, ससुरक हाकपर पत्नीक जायब। ससुर द्वारा टाका दऽ तँ

देब मुदा घुरेबाक अवधि निर्धारित केलापर पतिक खिन्न हएब। आ पत्नीक कहब जे जँए ओ तँए सम्बन्ध आ जऽ पत्नी मरि जाथि तँ फेर ससुरक संग पतिक कोन सम्बन्ध बाँचत।... की अहाँ हमर बहीनसँ कऽ लेबै बियाह?

१०

काठक बनल लोक (१९७६)

ऐ कथा संग्रहक सर्वश्रेष्ठ कथा। रामीक ब्लॉक जायब, घरखस्सीक पचास टाका लेल। ओकर बेटा बदरिया छै काठक बनल, मारि खेलोपर एको ठोप नोर नै खसै छै, आँखि धसल, छातीक सभटा हाड़ जागल, कम्मे बाजै, खेलेबो नै करै, तेना भऽ कऽ ताकै जेना किछु मोन पाड़ैत हो। मुदा जखन रामी रातिकऽ एलै तँ ओ काठक बनल बदरिया पूछै छै- 'अँय हौ बाबू, कखन एलहक?"

- बाउ हौ, ऊठि गेलहक। आबऽ आबऽ आगि लग आबह। हम तँ अखनियैं एलियै बेटा।

-साँझे किएक नै एलहक?

ओकर ऐ प्रश्नपर बेलोबाली आ रामीकेँ लगलैक जेना सभटा दुख-संताप मेटा गेल हो। ओ दुनू दिन भरिमे पहिल बेर मुक्त भऽ कऽ हँसलैक।

११

कोनो पतापर (१९७४)

परदेशीकेँ चारिटा बच्चाक मायक आ ओकर पत्नीक सन्देश आ उलहनक चिट्ठी।

१२

गजखोर आ मजमुङर (१९६८)

बेचनीक सासुरमे सभ ओकर दुल्हाकेँ अबारा कहै छै आ ओकरो सभ ओल सन बोल सुनबैत छै, बेचनीकेँ कहै छै गजखोर आ ओकर साँयकेँ मजमुङर।

१३

घरदेखिया (१९७४)

टाइटल कथा। जगदीश प्रसाद मण्डल सेहो घरदेखिया लिखलन्हि विदेहमे ई-प्रकाशित भेल आ गामक जिनगी (२००९) कथा संग्रहमे संकलित भेल।

बिमला, सतरहम साल लगलै, देखलासँ मुदा नै लागै छै, मुँह-कान सुखायल छै। ओकरे देखैले लड़िकाबला सभ आयल छै, कम खर्चामे सभ काज होइ छै। लड़की पसिन्न पड़लै। लड़का डरेबर नै टरकपर खलासी छै। लड़की पसिन्न पड़ै गेलै। लड़का हालेमे कलकत्तासँ गाम आयल छलै एखन तुरते समाद पठाकऽ मङौनाइ खर्चाक घर भऽ जेतै। लगनसँ दस दिन पहिने आबि जेतै, जिनका देखऽ के हेतै, देखि लेतै।

१४

चेहरापर जमैत कुहेस (१९७२)

प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) आ ओ बालिका। '..राति केबाड़ खुलले राखब।' सूत्रधार कहै छथि, मुदा कहि कऽ बिसरि जाइ छथि।

'केबाड़ खुलल छलैक, कुकूर ढुकि जइतैक तखन?'

'खुलले छलैक!' प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार)कैँ जेना विश्वासे नै भऽ रहल छलन्हि।

१५

चौबटिया (१९६९)

प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) होटलमे बैसल, भूखसँ माथ धऽ लेने छन्हि। गाम जाइ छथि, काकाक अलग खिस्सा- तीन माससँ खाली रोटिये खाइत अछि। भातक आँखि नै देखलक अछि। प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार)कैँ तामस उठै छन्हि- एतेक जनमाकऽ ढेरी कऽ देने छथि आ आबो संयम नै करऽ अबैत छनि। काकाकैँ होइ छन्हि जे प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार)कैँ खूब रुपैय्या छन्हि, ओ पाइ मंगै छथिन्ह आ पुरनका पाइ मादे कहै छथिन्ह जे पटुआ बटाइ कयने छथि, बेचिकऽ हुनके दऽ देथिन्ह ता दस टाका मांगै छथिन्ह। मुदा प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) तँ पाइक अभावमे दू-दू साँझ भूखल रहि जाइत छथि। बिनु खयने बिदा भऽ जाइत छथि, कोनो संगी सँ पाइ मंगैत छथि, पहिने ओ देनहियो छन्हि, चरियो आना देबा लेल कहैत छथि मुदा ओ एक्को पाइ नै दैत छन्हि। दोसर संगी यदुनन्दन, एक टाका दू बर्ख धरि नै दऽ सकल छलथिन्ह, ओ काते दऽ चलि गेलन्हि। तेसर कालीचरण मुदा ओहो नै कहै छन्हि, फेर होटल, बहुत पहिलुका पाइ बिसरि गेल हेतन्हि, मुदा ओत्तऽ दोसर छौड़ा बैसल अछि।.. कतेक आरामदेह चौबटिया अछि!

१६

जासूस कुकूर आ चोर (१९७३)

चोरी, थानाकैँ खबरि आ भ्रष्टाचार, जासूसी कुकुरक नामपर दरोगा पाइ मंगै

छै, .. कुकुर चोरकेँ धऽ लेतै। सिपाही ५ सय मंगलकै आ तीन सयपर तय तफसिला भेलै। मुदा कुकुर?

१७

झालि (१९७३)

धनकटनी, आइ नहायल नै भेलै रामाकेँ तँय जरौन लागय लगलैक। गाजा.. दुसधटोलीमे लरमाहा.. चारिये चिलममे लऽ कऽ उड़ि गेलै।– बिन्दुआ कहै छै। दुसधटोलीक बिजनेस, मौगी-छौड़ीसभ दिन आ भिनसुरको कऽ कोइला बिछैत छै। मरदसभ दिनमे गाजा बेचैमे रहतऽ आ छौड़ी सभ रातिकऽ। छिनरो भाय दरोगा पहुँचि गेलै, ... पचास टाका चट सिन लऽ लेलकै।.. जट्टा बाला गाजामे निसाँ बड़ जल्दी चढ़ैत छैक।

अमेरिकोमे अफ्रीकन-अमेरिकनमे ड्रगक ब्योपार होइ छै, की किछु समानता देखा पड़ल?

१८

टिप (१९७४)

होटलमे टिप देलापर मोजर आ नै देलापर?

१९

डर (१९६९)

डरक मनोविज्ञानक विश्लेषण।

२०

तीर्थ (१९६९)

बलबाबालीक अंगनाक खिस्सा। कोनो डाक्टर ओकरा बताहि नै कहतैक... मुदा ओ बताहि अछि। जहिये ओकर दुरागमन भेलैक तहियेसँ भूत लागऽ लगलैक। ‘देखैत छिही कुसुमाकेँ। ओकर परतर कहियो हेबही तोरासभ?’ से कुसुमा बलबाबाली भऽ गेलि। चारिटा बच्चा, मुदा सोइरी-घरमे सभ बेर मड़ुआक रोटी आ साग भेटैत रहलैक। दिअर पाइ नै दएलकै तैयो सासुकेँ तीर्थ करेतै, ओकरा देखा देतै। प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार)सँ किछु टाका मांगै छन्हि, प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार)क हाथ छूछ छन्हि, पाइ नै भेटै छै। मुदा ओ बैजनाथजी जेबे टा करतैक। एक-दू सेर चूड़ाक दामे की होयतैक,

नेङरा दिअरकैँ देखा देतै। .. मुदा हरहर-खटखट कऽ कय जेनाइ ठीक नै होइतै तैँ ओ नै गेलि।

२१

धुंधमे घटना (१९७०)

कथाक पहिल दोसर तेसर स्थिति, फेर कथा संयोजकक दूटा समाद। आ कथाक अन्तिम स्थिति।

पहिल स्थितिमे भावकैँ छुबैत बा नै छुबैत पुरबा-पछबा, वातवरण टिनहा मकान, गुलमोहरक गाछ, घास, दूभि।

दोसर स्थितिमे साँझ, बगड़ाक खोंता आ मकड़ाक जाल। पुरान बिन मतलबक कागच। भरि दिन फाइल उघलाक बाद कोठलीसँ एक आदमी बजार गेल छथि।

तेसर स्थितिमे एकटा महिला जे कथा शुरू होइसँ पहिने कोठली छोड़ि देने छथि, ओ जँ आबि जेतीह तँ की-की हएत से सभ।

अन्तिम स्थितिक पहिने दूटा समाद- पहिल फाइलेरिया ग्रस्त प्रकाश- माने पिरौंछ आ दोसर गर्भसँ बहार होइत मृत बच्चा।

आ कथाक अन्तिम स्थितिमे सड़कक लेल 'वेश्या सड़क' कहल गेल छै, एकर लतमर्दन होइ छै तैँ शाइत। पएर सुन्न आ भारी मुदा सांत्वना लेल वाक्य सभक टुकड़ी बनि-बनि आयब। मुदा प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) कैँ चाहियन्हि भीड़, इजोत। मुदा अदहा रस्ता आबि भागब बेकार।

फेर सुखायल धारक बिम्ब, तकर भित्तापर ठाढ़। चारू दिस कुहेस, ने गाम, ने लोक, ने प्रकाश, ई सभ सभ दिशामे थोड़े-थोड़े दूरपर छै, मुदा एखन से सभ व्यर्थ, अखन धुन्ध आ शून्य मृत्यु सन।

की अहाँकैँ 'वेटिङ फॉर गोडो'(सेम्युल बेकेट) मोन नै पड़ैए?

२२

धुक्कड़ (१९७०)

बस खुजबाक समय नै बुझल अछि। बस आइ भरि दिन एही ठाम रहतैक? कंडक्टरकैँ सभ ठकि लै छै, प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) सेहो। बड्ड कम टिकट बुक होइ छै।

मुदा फेर ओ कंडक्टर प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार)कैँ नै भेटै छन्हि, कि पता नोकरी छोड़ि देने होइ।

२३

परिचय (१९७१)

नेताजी अपन घर चलबाक आग्रह केलखिन्ह, प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) कैँ बुझेलन्हि जे ओ हुनका मोजर देलखिन्ह मुदा संगी संगे जखन ओ हारि थाकि बिदा भेला तँ संगी नाटक कम्पनीक साँझ बला शो देखबाक जिद्द कयलन्हि आ ओतऽ नेताजी...

२४

पेट (१९७१)

कलीऽऽम!, ओ भीड़मे हेरा जाइत अछि।तीन घण्टा पहिने विनयकैँ हाक, मुदा ओ ध्यान नै देने छल। भूख .. होटलमे ऑर्डर दऽ दिऐ, मुदा पानि मात्र बाजि पाबै छी। दिनक अपेक्षा मोहल्ला शान्त छै। देबालसँ सटल नल कियो खुजले छोड़ि देने छै, हल्ला सहल नै होइत अछि, मुदा ईहो बुझल अछि जे भोरमे बेसी हल्ला हेतै।

२५

फँसरी (१९६९)

भेलबाबाली काकी, सय बर्खसँ बेसी उमेर, आँखि कमजोर (प्राय: मोतियाबिन्द), खाली छाहे टा देखैत छलीह। कातिक मासक बिम्ब अहू कथामे अछि। अगहनमे धनकटनी होइ छै, ओइसँ एक मास पूर्व माने अगहनक बादक ११म मास, बड्ड कठिन, पैसाक टाँट। प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) लग जाइ छथि, तमाकुल लेल चूना लेल काकी सोर कऽ रहल छथि, भोरेसँ किलोल कऽ रहल छथि। दू-तीन दिनसँ खाली चूने-चून भुकै छथि, चून रहतैक तखन ने कियो देतैक। प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) कनेक चून आनि देलखिन्ह, खैनी चुनाइयो देलखिन्ह। मालिक (बेटा)क खोज करैत छथि,सुपौल जाइबला रहै, मुदा एत्तै छै, माथ फुटैत रहैत छन्हि। पुतोहुकैँ होइ छन्हि जे शिकाइत कऽ रहल अछि, सहन नै कऽ सकलि। मुदा बुढियाक कान सेहो कमजोर छै, सुनि नै सकलि। अखन मरि जेतै तँ भोजो-भात कोना हेतै, बाइस टा झंझटि छै- प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) कहै छथिन्ह। काकी तीन-चारि दिन गरदनिमे फसरी लगौने रहलथि, माहुर सेहो एक दिन खेलथि तइयो नै मुइलथि, फसरी कसले नै गेलैक तँ केना मरितथि।

२६

फुकना (१९७०)

प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) मामागाममे छथि, मुदा हुनका ओतऽ दू रङक व्यवहार बुझना जाइ छन्हि। स्कूलसँ आबि बेरहट करबाक बदला दोआरि खरड़ैत रहलाह।

भौजीकेँ गारि पढ़लन्हि तँ ओ हिनका बुझेलखिन्ह जे ओ छोटकी भौजी नै छथि एक्के चाटमे मुँह लाल कऽ देथिन्ह। नानी बचबिथिन्ह मुदा हुनकर कान-आँखि दुनू खराप छलन्हि। साइकिलक मिस्त्रियाइ शुरू केलन्हि आ बॉलपिन उड़ि गेलै। बॉलपिन भेटलन्हि तकर बदलामे तीन दर्जन फुकना किनलन्हि। रविन्दरकेँ किछु फुकना भेटलै, जेबीमे भूर छलन्हि, ओ नै गछलकन्हि तँ ओकरा पिटलन्हि। बाबू मोन पड़लन्हि। नानीकेँ पुछलखिन्ह- बाबू कहिया औथिन?

२७

बाँझ (१९६८)

साओन मास, थाल कीच, दुआरि अङना सगरो, चाली सोहरैत। दुखनीक पहिल साओन आ तखनो ओकरा सासुरेमे छोड़ि देलिऐ? – दुखनी मायकेँ रामपुरवाली पुछलकै। डेढ़ बीघा जमीन बाँचल छै, सेहो दर-दियाद हड़पऽ चाहै छै। पतिक अवसान, दुखनीक बियाहक झंझटि- अरर मरर के झोपड़ी, सीता माइक खोपड़ी राखि लैह-राखि लैह। चार हटाओल गेल, दुखनी माय मुइल पड़ल। संयोगसँ दुखनी पड़ाकऽ आयलि, ओही दिन साँझमे। रामपुरबाली आन माउग लग तकर प्रचार केलनि- आन आने होइ छै- कहलकै- चास दी बास नै दी। दुखनी बिदा भऽ गेलि। मौसी ओहिठाम दुखनीक बड्ड आदर भाव होइ छलै, मौसा-मौसीक स्वार्थ भावकेँ ओ नै बूझि सकल। मुदा उड़न्ती उड़ऽ लगलै तँ मौसी पुछलकै जे सासुरसँ कियो किए नै अबै छै।

-ओ सभ हमरा बाँझ बुझै छथि।

मौसा-मौसी ओकर जमीन लिखबा लेलकै, लोक पुछतै तँ कहि देतै जे बियाहमे खर्च भऽ गेलै, बियाहक खर्च तँ बुढ़बे वरकेँ लगतै ऊपरसँ पाँचसय रुपैय्यो देतै।

२८

बेर-बेर (१९७९)

हरिवंश आ रघुवंश फस्ट क्लासमे आधा दूरीसँ बेशीक टिकट कटा लेने रहय। आब दस टा टीशन आर पार करबाक छलै। मुदा हरिवंशकेँ टी.टी. पकड़ि लेलकै। ओकरा जहल भऽ गेलै, मुदा एक दिन रघुवंश आबि कऽ ओकर जुर्माना भरि देलकै।

२९

महिमा (१९७५)

मीटिंग करै काल पुलिस पकड़ि कऽ सुखदेवकेँ लऽ गेलै जेल। एक मासमे छुटलै, मीसामे पकड़ायल रहै।

ओ थोड़े दिन नक्सली रहै आ सरकारी बान्ह काटबाक कारणसँ पहिनहियो आठ दिन जेलमे छलै।

भोटमे कतेक गोटे सँ टाका ठकने रहै।

लड़ाइ-झगड़ा खूब होइ, नै ककरो तँ नरकटियेबालीकेँ धुमधुमा दै। जेलसँ नै किछु तँ चारि सय केर कपड़ा लऽ कऽ घुरल हेतै।

३०

रामनिहोर (१९७५)

मेसक हेल्पर रामनिहोर फैजाबाद जिलामे कोनो स्त्रीकेँ प्रतिमास दू सय टाका पठबैत छल। प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार)सँ होल्डाल मांगि दस दिनक छुट्टीपर गाम गेल, दस दिन भऽ गेलै, साँझ धरि ओ आबि सकैए, होल्डाल ले एतेक चिन्तित नै हेबाक चाही।

३१

लिफ्ट (१९८०)

मिसेज कपूरसँ लिफ्ट लेब मनोजकेँ भारी पड़ि गेलै, कारण दिवाकरकेँ ओ जनै छली, ओकरा संगे मनोज किए गाड़ीमे चढ़ि गेल।

३२

संकेत (१९७४)

रूम नम्बर नाइनमे छह टा सीट छै।– ओकरा उठऽ दहिक तँ बेड बिछा लिहैँ। ओना क्यो सूति रहतौक।

३३

सहरसा दुपहर राति (१९७२)

सुभाष, महाप्रकाश आ सुकान्त। सुकान्त भीड़सँ भागय चाहैत अछि, सुभाष निर्णयहीन अछि। महाप्रकाशकेँ ओतेक सोचय नै पड़ैत छैक। सुभाष कोनो छौड़ीक पीठपर जड़ैत सिगरेटक टुकड़ी फेकय चाहैत अछि। तीनूकेँ रातिमे घुमबाक लेल पुलिस पकड़ि लैत अछि।

३४

सिकरेट (१९६९)

सिकरेटक तलब, नोकरसँ मंगैत अछि मुदा ओ तँ मालिकक अधकट्टी निकालि

कऽ पिबैत अछि। आ एकटा परिचित, किछु चतुरताइ आ विल्स फिल्टर भेटि गेलै।

३५

सुरंग (१९७२)

प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) आ किशोरी भाय पहुँचला शीला आ ओकर इंजीनियर पति लग। की इंजीनियर शंकालु भेल शीला आ किशोरी भायक प्रति? शीला किए नैहरमे रहय लगली। बेनी डेढ़ बरखक, एकटा अबोध बच्चाक दूध आ बिस्कुट छीनिकैँ ओ कोन प्रतिशोध लेबऽ चाहैत अछि, से चिट्ठीमे प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) पढ़ने रहथि। मुदा ओतऽ इंजीनियर बेबी संगे खेला रहल अछि।

इंजीनियर लैम्प वर्क्समे काज करैत अछि। किशोरी भाय सिक्सटी वॉटक बल्ब प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) कैँ पकड़बैत बिदा होइ छथि मुदा आगाँ गेलापर प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार)कैँ पता चलैत छन्हि जे ओ फ्यूज छै, से प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार)कैँ ओकरा बदलि अनबा ले कहै छथिन्ह।

घरदेखियाक कथा सभक थीम देखू, बदरियाक रेखा चित्र देखू (काठक बनल, मारि खेलोपर एको ठोप नोर नै खसै छै, आँखि धसल, छातीक सभटा हाड़ जागल, कम्मे बाजै, खेलेबो नै करै, तेना भऽ कऽ ताकै जेना किछु मोन पाड़ैत हो।), विवाहेत्तर सम्बन्धक कथा, प्रोटैगोनिस्टक गरीबी, खेखनियाँ। कएक टा कथा मे सुभाष अबै छथि आ एकटा कथामे सुभाष, महाप्रकाश आ सुकान्त तीनू [सहरसा दुपहर राति (१९७२)]। ❑

नित नवल राजकमल (राजकमल मोनोग्राफ)

[राजकमल चौधरी मोनोग्राफ (जनवरी १९९७ मे साहित्य अकादेमी द्वारा रिजेक्ट, रचना पत्रिकामे दिसम्बर २००५- मार्च २००६ अंकमे आ २०२२ मे "नित नवल राजकमल" नामसँ प्रकाशित)]

राजकमल जी (विनिबंध) क प्रकरण कान मे पडल तँ छल, से कतोक वर्ख भऽ गेलै आब। मुदा से एहन कुरूप छैक से अहींक समादमे स्पष्ट भेलय। तें एकर धन्यवाद अहीं कैँ दैत छी गजेन्द्र जी। ओना वास्तविकता तँ ई जे सम्पूर्ण पढबासँ पहिने मोन 'विरक्त' भऽ गेल / नै पढ़ि भेल आगाँ! नीक केलौहैँ नेट पर दऽ कऽ। समकालीन आ आगत पीढ़ी सेहो बुझओ ई कारी-कथा! हमरा सन लोकक विडम्बना देखू जे पूरा प्रकरण अपन अनुज-मित्र-अग्रज सँ जुडल अछि। से एहन ऐतिहासिक दुर्घटना भऽ गेल अछि! उत्तरदायी व्यक्तिगत हम कतहु सँ नै। मुदा साहित्यिक पीढ़ीक नैतिकता सँ "अपराध बोध" सहबा लेल अभिशप्त छी। उपाय?- ***सस्नेह, गंगेश गुंजन ११ सितम्बर २०१२ (विदेह ११७)***

राजकमल मोनोग्राफ साहित्य अकादेमीक मैथिली विभाग द्वारा मोहन भारद्वाजक किरदानी आ राजमोहन झा केर सहयोगसँ अस्वीकृत भेल छल सन् जनवरी १९९७ ई मे आ तइ कृत्य लेल राजमोहन झाकैँ साहित्य अकादेमी द्वारा १९९६ ई. क मैथिलीक मूल पुरस्कारसँ पुरस्कृत कएल गेल सन् १९९७ मे। संगहि ओही कृत्यक सम्पादन लेल मोहन भारद्वाज साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदातृ समितिक सदस्य बनाओल गेले छलाह।

नित नवल राजकमल (राजकमलक जीवन) समर्पित अछि- धर्मप्राण संतोष कुमार कुन्दन सुव्रता गिरिवर कृष्ण राधे राधे।

नित नवल राजकमल - दन्तकथाक नायक

राजकमल चौधरी (मणीन्द्र नारायण चौधरी प्रसिद्ध फूल बाबू) १९२९-१९६७,

महिषी, सहरसा। रचना- आदि कथा, आन्दोलन, पाथर फूल (उपन्यास), स्वरगंधा (कविता संग्रह), ललका पाग (कथा संग्रह), कथा पराग (कथा संग्रह सम्पादन)।

भूकम्प, बंगाली संन्यासिन आ रासलीलाक चित्र राजकमलक आत्मवक्तव्यपर आधारित अछि। १९३४क भूकम्पक स्मृति, धरती कड़कड़ायल आ हुनकर माय बाबू अपन जानक चिन्तामे लागि गेला हिनका छोड़ि देलखिन्ह।

फेर ओइ भूकम्पक थोड़बे दिन बाद आयलि एकटा बंगाली संन्यासिन, कोनो तीर्थमे हुनकर माँ सँ ओइ संन्यासिनक भेँट छलनि। हुनका ओ अपना संगे चलै ले कहलखिन्ह आ ओहो जाय चाहैत छला।

एकटा रासलीलाक चित्र देखलन्हि कृष्ण आ कएकटा गोपी।

राजकमल ऐ सभ गपकेँ हवा देलन्हि। सभ अपन व्यक्तित्व लेल/ विचारधारा लेल कोनो बहन्ना तकैत अछि। राजकमल ई मार्केटिंग स्ट्राटेजी सेहो छल।

नित नवल राजकमल - जीवन

कोनो खास नै, वएह पहिल पत्नीमे बच्चा नै, से दोसर विवाह (रामपुर हवेली राजकमलक माय) मायक मृत्यु आ पिताक दोसर फेर तेसर बियाह हिनकर उमेरक युवतीसँ। राजकमल अपन पिता मधुसूदन चौधरीकेँ लाल कक्का कहै छला। तेसर विवाहक एकटा पुत्री मदालसा जीवित रहलखिन्ह, हुनकासँ राजकमलकेँ स्नेह छलन्हि। पिता आज्ञा, उपदेश आ मारिपीटक माध्यमसँ ब्राह्मण संस्कारमे दीक्षित केलखिन्ह। राजकमल केँ मैट्रिक पास करबासँ पूर्वे गीता आ दुर्गासप्तशतीक सभटा श्लोक कंठस्थ भऽ गेलन्हि। पिताक ट्रांसफरक संग एत्तऽ सँ ओत्तऽ घुमैत रहलथि, नवादासँ पटना एला बी.एन.कॉलेजमे नामांकन, पिता ४४२ टा निषेध मंत्र देलखिन्ह जे की-की नै करिहऽ।

प्रेम सम्बन्ध- पहिल प्रेम सम्बन्ध पटनामे शोभना झा संगे। एक बेर आइ. कॉममे फेल, फेर बी. कॉममे एक बेर फेल। १९५१ मे चानपुरा (दरभंगा)क शशिकान्ता सँ विवाह। बी. कॉम केर बाद पढ़ाइ समाप्त।

विवाहक बाद किछु दिन पटनामे कोनो अखबारमे प्रूफरीडर, फेर सचिवालयमे लोअर डिवीजन क्लार्क। दरभंगा, पटना, दिल्ली, मसूरी, फेर कलकत्ता। ओतहियेसँ मसूरीक सावित्री शर्मासँ पत्राचार, १९५६मे हुनका संग विवाह, फेर संतोष नामक स्त्री (प्रायः सावित्रीक भतीजी) सँ प्रेम, गर्भावस्थामे सावित्रीकेँ छोड़ि ३ जुलाइ १९५७केँ

मसूरीसँ पलायन। फेर पटना, दरभंगा आ नवादा तीन- चारि मास धरि आ तखन कलकत्ता, हिन्दी लेखक छेदीलाल गुप्तक नामे यात्रीक चिट्ठी लऽ कऽ। बाबू साहेब चौधरीक मिथिला दर्शनसँ जुड़ि गेला। फेर भारतीय ज्ञानपीठ (कलकत्ता), पत्नी संगे छलथिन्ह। फेर नोकरी छोड़ि रागरंग बहार केलन्हि मुदा ओ बन्द भऽ गेल। छओ बर्खक कलकत्ता प्रवासमे बहुत साहित्य लिखलनि। शरीर दुर्बल, पेट पर जे लम्प छलन्हि से कलकत्ते मे शुरू भेलन्हि।

फेर दिल्ली।

कीर्ति नारायण मिश्र, जीवकान्त आ हंसराज संग पत्र व्यवहार होइन्हि।

फेर अक्टूबर ६३ मे ओ पटनामे स्थिर भऽ गेलाह।

१९६६, शशि, दिव्या, मुक्ता,नीलू नवादासँ भेँट करैले एलखिन्ह।

बनारसक अलका संगे पत्राचार, अन्तिम प्रेम प्रसंग। नवम्बर १९६६ क पहिल सप्ताहमे ओकरासँ भेँट करय बनारस गेलाह।

साम्यवादी आलोचक नामवर सिंह एक टा पोस्टकार्डो देब उचित नै बुझलनि, नईं कहानियाँमे मधुकर गंगाधरक वक्तव्य छपल जे राजकमलक बीमारीक इलाज चलि रहल अछि, ओ अभाव आ उपेक्षाक बहाना कए लोकसँ पाइ ऐंठय चाहैत छथि। ओ चिट्ठी लिखि कऽ लहरक सम्पादक प्रकाश जैन आ मनमोहिनीकेँ सेहो भड़कौलनि। राजकमल डायरीमे लिखलनि- मधुकर एण्ड लहर पीपुल्स हैभ जोइण्ड हैण्ड्स इन डर्टी प्रोपेगैण्डा अगेंस्ट मी।

एक दिन डॉ चतुर्वेदी हुनका कहलकनि जे अहाँक शिश्न मे यूरेथ्रल कैंसर भऽ सकैत अछि आ जँ से भेल, तखन शिश्न काटय पड़ि सकैत अछि। राजकमल डायरीमे लिखलनि- इफ आइ हैभ टू कट माइ पेनिस, आइ विल कमिट सूसाइड।

सभसँ बेशी सेवा चन्द्रमौलि उपाध्याय दुनू व्यक्ति केलखिन्ह, आर्थिक रूपेँ सेहो, राजकमलक मृत्युक बहुत दिन बाद चन्द्रमौलि उपाध्याय दुनू व्यक्ति आत्महत्या कऽ लेलनि। राजकमलक देहगाथा हिनके दुनू गोटेकेँ समर्पित अछि। हंसराज आ आलोक धन्वा देखैले अबथिन्ह अस्पताल। राजकमलक चारि भाँय पटनामे रहथिन्ह, तीन भाँयकेँ नोकरी सेहो रहन्हि मुदा एक पाइक दबाइयो अनबाक कष्ट ओ सभ नै केलन्हि।

जून १९६७मे मृत्यु।

नित नवल राजकमल - मैथिली साहित्य

राजकमल एक सय कविता, तीनटा उपन्यास, ३७टा कथा, तीन टा एकांकी आ चारि टा आलोचनात्मक निबन्ध लिखलनि। स्वरगंधामे राजकमलक नवम्बर १९५७ सँ अप्रैल १९५८ धरिक कलकत्ता प्रवासमे लिखल गेल कविता संकलित अछि। ओ यात्रीकेँ अर्वाचीन होइतो आधुनिक नै मानैत छथि। राजकमल उपन्यास लिखलनि आन्दोलन, पाथर फूल आ आदिकथा। लिली रेक रंगीन परदा हुनका एमाइल जोलाक उपन्यास लज्जाक स्मरण करा देलकन्हि। रमानाथ झा परम्परावादी चिन्तनक कारणेँ राजकमलक साहित्यक सम्पूर्ण शिल्पकेँ कृत्रिम घोषित कऽ देलन्हि। ❑

बनैत बिगड़ैत

सुभाषचन्द्र यादवजीक “बनैत बिगड़ैत” कथा-संग्रहक सभ कथामे सँ अधिकांशमे ई भेटत जे कथा खिस्सासँ बेशी एकटा थीम लऽ आगाँ बढ़ल अछि आ अपन काज खतम करिते अन्त प्राप्त कएने अछि। दोसर विशेषता अछि एकर भाषा। बलचनमाक भाषा ओइ उपन्यासक मुख्य पात्रक आत्मकथात्मक भाषा अछि मुदा एतए ई भाषा कथाकारक अपन छन्हि आ तइ अर्थें ई एकटा विशिष्ट स्वरूप लैत अछि। एक दिस कथाक उपदेशात्मक खिस्सा-पिहानी स्वरूप ग्रहण करबाक परिपाटीक विरुद्ध सुभाषजीक कथाकेँ एकटा सीमित परिमितिमे थीम लऽ कऽ चलबाक, भाषाक शिल्प जे खाँटी देशी अछि पर ध्यान देबाक सम्मिलित कारणसँ पाठकक एक वर्गकेँ ऐ संग्रहक कथा सभमे असीम आनन्द भेटतन्हि तँ संगे-संग खिस्सा-पिहानीसँ बाहर नै आबि सकल पाठक वर्गकेँ ई कथा संग्रह निराश नै करत वरन हुनकर सभक रुचिक परिष्करण करत।

किछु भाषायी मानकीकरण प्रसंग- जेना ऐछ, अछि, अ इ छ। जइ कालमे मानकीकरण भऽ रहल छल ओइ समय ऐपर ध्यान देबाक आवश्यकता रहय। जेना “जाइत रही” केँ “जाति रही” लिखी आ फेर जाति (जा इ त) लेल प्रोनन्सिएशनक निअम बनाबी तेहने सन ऐछ संगे अछि। मुदा आब देरी भऽ गेल अछि से लेखको कनियाँ-पुतरा मे एकर प्रयोग कऽ दिशा देखबैत छथि मुदा दोसर कथा सभमे घुरि जाइत छथि। मुदा ऐसँ ई आवश्यकता तँ सिद्ध होइते अछि जे एकटा मानक रूप स्थिर कएल जाय आ “छै” लिखबाक अछि तँ सेहो ठीक आ “छैक” लिखबाक अछि तँ “अन्तक ‘क’ साइलेन्ट अछि” से प्रोनन्सिएशनक निअम बनय। मुदा से जल्दी बनय आ सर्वग्राह्य हुअय तकर बेगरता हमरा बुझाइत अछि, आजुक लोककेँ “य” लिखल जाए वा “ए” ऐपर भरि जिनगी लड़बाक समय नै छै, जे ध्वनि सिद्धांत कहैत अछि से मानू, य व्यंजन थिक आ ए स्वर, से एकक बदला दोसरक सर्वभौम प्रयोग असम्भव। आ सेनै हुअय तँ प्रोनन्सिएशनक निअम बनाउ। “नहि” लेल “नञि” लिखब तँ बुझबामे अबैत अछि मुदा नइँ (अन्तिका), नइं (एन.बी.टी.) आ नँइ (साकेतानन्द -

कालरात्रिश्च दारुणा) मे सँ साकेतानन्दजी बला प्रयोग ध्वनि-विज्ञान सिद्धांतसँ बेशी समीचीन सिद्ध होइत अछि आ से विश्वास नै हुअए तँ ध्वनि प्रयोगशाला सभक मदति लिअ।

"बनैत बिगड़ैत" पोथीक ई एकटा विशेषता अछि जे सुभाषचन्द्र यादवजी अपन विशिष्ट लेखन-शैलीक प्रयोग कएने छथि जे ध्वन्यात्मक अछि आ मानकीकरण सम्वादकेँ आगाँ लऽ जेबामे सक्षम अछि।

स्वतन्त्रताक बादक पीढ़ीक कथाकार छथि सुभाषजी। कथाक माध्यमसँ जीवनकेँ रूप दैत छथि। शिल्प आ कथ्य दुनूसँ कथाकेँ अलंकृत कऽ कथाकेँ सार्थक बनबैत छथि। अस्तित्वक लेल सामान्य लोकक संघर्ष तँ ऐ स्थितिमे हिनकर कथा सभमे भेटब स्वाभाविके। कएक दशक पूर्व लिखल हिनक कथा "काठक बनल लोक" क बदरिया साइते संयोग हंसैत रहय। एहु कथा संग्रहक सभ पात्र एहने सन विशेषता लेने अछि। हॉस्पीटलमे कनैत-कनैत सुतलाक बाद उठि कऽ कोनो पात्र फेरसँ कानय लगैत छथि तँ कोनो पात्र प्रेममे पड़ल छथि। किनकोमे बिजनेस सेन्स छन्हि तँ हरिवंश सन पात्र सेहो छथि जे उपकारक बदला सिस्टम फॉल्टक कारण अपकार कऽ जाइत छथि। आब "बनैत बिगड़ैत" कथा संग्रहक कथा सभपर गहिंकी नजरि दौगाबी।

कनियाँ-पुतरा- ऐ कथामे रस्तामे एकटा बचिया लेखकक पएर छानि फेर ठेहुनपर माथ राखि निश्चिन्त अछि, जेना माएक ठेहुनपर माथ रखने हुअय। नेबो सन कोनो कड़गर चीज लेखकसँ टकरेलन्हि। ई लड़कीक छाती छिऐ। लड़की निर्विकार रहय जेना बाप-दादा वा भाय बहिन सऽ सटल हो। लेखक सोचैत छथि, ई सीता बनत की द्रौपदी। राबन आ दुर्जोधनक आशंका लेखककेँ घेर लैत छन्हि।

कनियाँ-पुतरा पढ़बाक बाद वएह सड़कक चौबटिया अछि आ वएह रेड-लाइटपर गाड़ी चलबैत-रोकैत काल बालक-बालिका सभ देखबामे अबैत छथि। मुदा आब दृष्टिमे परिवर्तन भऽ जाइत अछि। कारक शीसा पोछि पाइ मंगनिहार बालक-बालिकाकेँ पाइ-देने वा बिन देने, मुदा बिनु सोचने आगाँ बढ़ि जाएबला दृष्टिक परिवर्तन। कनियाँ-पुतरा पढ़बाक बाद की हुनकर दृष्टिमे कोनो परिवर्तन नै होयतन्हि? बालक तँ पैघ भऽ चोरि करत वा कोनो ड्रग कार्टेलक सभसँ निचुलका सीढ़ी बनत मुदा बालिका ? ओ सीता बनत आकि द्रौपदी आकि आम्रपाली। जे सामाजिक संस्था, ह्यूमन राइट्स ऑरगेनाइजेशन कोनो प्रेमीक बिजलीक खाम्हपर चढ़ि प्राण देबाक धमकीपर नीचाँ जाल पसारि कऽ टी.वी.कैमरापर अपन आ अपन संस्थाक नाम

प्रचारित करैत छथि ओ ऐ कथाकेँ पढ़लाक बाद ओइ पुरातन दृष्टिसँ काज कऽ सकताह? ओ सरकार जे कोनो हॉस्पीटलक नाम बदलि कऽ जयप्रकाश नारायणक नामपर करैत अछि वा हार्डिंग पार्कक नाम वीर कुँअर सिंहक नामपर कऽ अपन कर्त्तव्यक इतिश्री मानि लैत अछि ओ समस्याक जड़ि धरि पहुँचि नव पार्क आ नव हॉस्पीटल बना कऽ जयप्रकाश नारायण आ वीर कुँअर सिंहक नामपर करत आकि दोसरक कएल काजमे "मेड बाइ मी" केर स्टाम्प लगाओत? ई संस्था सभ आइ धरि मेहनतिसँ बचैत अयबाक आ सरल उपाय तकबाक प्रवृत्तिपर रोक नै लगाओत?

असुरक्षित- ट्रेनसँ उतरलाक बाद घरक २० मिनटक रस्ताक राति जतेक असुरक्षित भऽ गेल अछि तकर सचित्र वर्णन ई कथा करैत अछि। पहिने तँ एहन नै रहैक- ई अछि लोकक मानसिक अवस्था। मुदा ऐ तरहक समस्या दिस ककरो ध्यान कहाँ छै। पैघ-पैघ समस्या, उदारीकरण आन कतेक विषयपर मीडिआक ध्यान छै। चौक-चौराहाक ऐ तरहक समस्यापर नव दृष्टि अबैत अछि, ऐमे स्टेशनसँ घरक बीचक दूरी रातिक अन्हारमे पहाड़ सन भऽ जाइत अछि। प्रदेशक तत्कालीन कानून-व्यवस्थापर ई एक तरहक टिप्पणी अछि।

एकाकी- ऐ कथामे कुसेसर हॉस्पीटलमे छथि। हॉस्पीटलक सचित्र विवरण भेल अछि। ओतय एकटा स्त्री पतिक मृत्युक बाद कनैत-कनैत प्रायः सुति गेलि आ फेर निन्न टुटलापर कानय लागलि। एना होइत अछि। कथाकार मानव जीवनक एकटा सत्यता दिस इशारा दैत आ हॉस्पीटलक बात-व्यवस्थापर टिप्पणी तेना भऽ कऽ नै वरण जीवन्तता देखा कऽ करैत छथि।

ओ लड़की- ऐ कथामे हॉस्टलक लड़का-लड़कीक जीवनक बीच नवीन नामक युवक एकटा लड़कीक हाथमे ऐंठ खाली कप, जे ओइ लड़कीक आ ओकर प्रेमीक अछि, देखैत अछि। लड़की नवीनकेँ पुछैत छै जे ओ केम्हर जा रहल अछि। नवीनकेँ होइत छै जे ओ ओकरा अपनासँ दब बुझि कप फेंकबाक लेल पुछलक। नवीन ओकरा मना कऽ दैत अछि। विचार सभ ओकर मोनमे घुरमैत रहैत छै। ई कथा एकटा छोट घटनापर आधारित अछि...जे ओ हमरा दब बूझि चाहक कप फेकबाक लेल कहलक? आ ओ दृढ़तासँ नै कहि आगाँ बढ़ि जाइत अछि। एकाकी जेकाँ ई कथा सेहो मनोवैज्ञानिक विश्लेषणपर आधारित अछि।

एकटा प्रेम कथा- पहिने जकरा घरमे फोन रहैत छल तकरा घरमे दोसराक फोन अबैत रहैत छल, जे एकरा तँ ओकरा बजा दिअ। लेखकक घरमे फोन छलन्हि आ

ओ एकटा प्रेमीक प्रेमिकाक फोन अयलापर, ओकर प्रेमीकेँ बजबैत रहैत छथि। प्रेमी मोबाइल कीनि लैत अछि से फोन आयब बन्द भऽ जाइत अछि। मुदा प्रेमी द्वारा नम्बर बदलि लेलापर प्रेमिकाक फोन फेरसँ लेखकक घरपर अबैत अछि। प्रेमिका, प्रेमीक ममियौत बहिनक सखी रितु छथि आ लेखक ओकर सहायताक लेल चिन्तित भऽ जाइत छथि। ऐ कथामे प्रेमी-प्रेमिका, मोबाइल आ फोन ई सभ नव युगक संग नव कथामे सेहो स्वाभाविक रूपेँ अबैत अछि।

टाइटल कथा अछि बनैत-बिगड़ैत। तीन टा नामित पात्र। माला, ओकर पति सत्तो आ पोती मुनियाँ। गाम-घरक जे सास-पुतोहुक गप छै, सेहन्ता रहि गेल जे कहियो नहेलाक बाद खाइ लेल पुछितए, एहन सन। मुदा सैह बेटा-पुतोहु जखन बाहर चलि जाइत छथि तँ वएह सासु कार कौआक टाहिपर चिन्तित होमए लगैत छथि। माइग्रेशनक बादक गामक यथार्थकेँ चित्रित करैत अछि ई कथा। सत्तोक संग कौआ सेहो एक दिन बिला जायत आ मुनियाँ कौआ आ दादा दुनूकेँ तकैत रहत। प्रवासीक कथा, बेटा-पुतोहुक आ पोतीक कथा, सासु-पुतोहुक झगड़ा आ प्रेम!

अपन-अपन दुःख कथामे पत्नी, अपन अवहेलनाक स्थितिमे, धीया-पुताकेँ सरापैत छथि। रातिमे धीया-पुताक खेनाइ, खा लेबा उत्तर भनसाघरक ताला बन्द रहबाक स्थितिमे पत्नीक भूखल रहब आ परिणामस्वरूप पतिक फोंफक स्वरसँ कुपित हएब स्वाभाविक। सभक अपन संसार छै। लोक बुझैए जे ओकरे संसारक सुख आ दुःख मात्र सम्पूर्ण छै मुदा से नै अछि। सभक अपन सुख-दुःख छै, अपन आशा आ आकांक्षा छै। कथाकार ओहन सत्यकेँ उद्घाटित करैत छथि, जे हुनकर अनुभवक अंतर्गत अबैत छन्हि। आत्मानुभूति परिवेश स्वतंत्र कोना भऽ सकत आ से सुभाष चन्द्र यादवजीक सभ कथामे सोझाँ अबैत अछि।

आतंक कथामे कथाकारकेँ पुरान संगी हरिवंशसँ कार्यालयमे भेँट होइत छन्हि। लेखकक दाखिल-खारिज बला काज ऐ लऽ कऽ नै भेलन्हि जे हरिवंशक स्थानान्तरणक पश्चात् ने क्यो हुनकासँ घूस लेलक आ तइ द्वारे काजो नै केलक। हरिवंशक बगेबानी घूसक अनेर पाइक कारण छल से दोसर किएक अपन पाइ छोड़त ? लेखक आतंकित छथि। कार्यालयक परिवेश, भ्रष्टाचार आ एक गोटेक स्थानांतरणसँ बदलैत सामाजिक सम्बन्ध ई सभ एतऽ व्यक्त भेल अछि। आइ काल्हि हम आकि अहाँ ब्लॉकमे वा सचिवालयमे कोनो काज लेल जाइत छी, तँ यैह ने सुनऽ पड़ैत अछि,

जे पाइ जे माँगत से दऽ देबैक आ तखन कोनो दिक्कत हुअय तँ कहब ! आ पाइक बदला ककरो नाम वा पैरवी लऽ गेलौं तँ कर्मचारी ने पाइये लेत आ नहिये अहाँक काज हएत।

एकटा अन्त कथामे ससुरक मृत्युपर लेखकक साढ़ू केश कटेने छथि आ लेखक नै, ऐपर कएक तरहक गप होइत अछि। साढ़ू केश कटा कऽ निश्चिन्त छथि। ई जे सांस्कृतिक सिम्बोलिज्म आयल अछि, जे पकड़ा गेल से चोर आ खराप काज केनिहार, जे नै पकड़ाएल से आदर्शवादी। पूरा-पूरी तँ नै, मुदा अहू कथामे एहने आस्था जन्म लैत अछि आ टूटि जाइत अछि। हरियाणामे बापो मरलापर लोक केश नै कटबैत अछि, तँ की ओकर दुःखमे कोनो कमी रहैत छै तैं ? पंजाबक महिला एक बरखक बाद ने सिनूर लगबैत छथि आ ने चूड़ी पहिरैत छथि मुदा पहिल बरख कान्ह धरि चूड़ी भरल रहैत छन्हि, तँ की बियाहक पहिल बरखक बाद हुनकर पति-प्रेममे कोनो घटंती आबि जाइत छन्हि ?

कबाछु कथा मे चम्पीबलाक लेखक लग आयब, जाँघपर हाथ राखब। अभिजात्य संस्कारक लोक लग बैसल रहबाक कारणसँ लेखक द्वारा ओकर हाथ हटायब। चम्पीबला द्वारा ई गप बाजब जे छुअल देहकैं छूलामे कोन संकोच। जेना चम्पीवला लेखककैं बुझाइय रहन्हि जे हुनका युवती बुझि रहल छलन्हि। लेखककैं लगैत छन्हि जे ओ स्त्री छथि आ चम्पीबला ओकर पुरान यार। ठाम-कुठाम आ समय-कुसमयक महीन समझ चम्पीवलाकैं नै छइ, नै तँ लेखक ओतेक गरमीयोमे चम्पी करा लितय। चम्पीवलाक दीनतापर अफसोच भेलन्हि मुदा ओकर शी-इ-इ कैं मोन पाड़ैत वितृष्णा सेहो। फ्रायडक मनोविश्लेषणक बड्ड आलोचना भेल जे ओ सेक्सकैं केन्द्रमे राखि गप करैत छथि। मुदा अनुभवसँ ई गप सोझाँ अबैत अछि जे सेक्ससँ जतेक दूरी बनायब, जतेक एकरा वार्तालाप-कथा-साहित्यसँ दूर राखब, ओकर आक्रमण ततेक तीव्र हएत।

कारबार मे लेखकक भेँट मिस्टर वर्मा, सिन्हा आ दू टा आर गोटेसँ होइत अछि। बार मे सिन्हा दोस्ती आ बिजनेसकैं फराक कहैत दू टा खिस्सा सुनबैत अछि। सभ चीजक मोल अछि, ऐपर एकटा दोस्तक वाइफ लेल टी.वी. किनबाक बाद फ्रिजक डिमान्ड अएबाक गप बीचेमे खतम भऽ जाइत अछि। दोसर खिस्सामे एकटा स्त्री पतिक जान बचबय लेल डॉक्टरक फीस देबाक लेल पूर्व प्रेमी लग जाइत अछि। पूर्व प्रेमी पाइ देबाक बदलामे ओकरा संगे राति बितबय लेल कहैत छै। सिन्हा ऐ कथामे

ककरो गलती नै मानैत छथि, डॉक्टर बिना पाइ लेने किए इलाज करत, पूर्व प्रेमी मँगनीमे पाइ किए देत आ ओ स्त्री जे पूर्व प्रेमी संग राति नै बिताओत, तँ ओकर पति मरि जेतै।

आब बारसँ लेखक निकलैत छथि तँ दरबानक सलाम मारलापर अहूमे पैसाक टनक सुनाइ पड़ऽ लगैत छन्हि। प्राचीन मूल्य, दोस्ती-यारी आ आदर्शक टूटबाक स्थिति एकटा एकाकीपनक अनुभव करबैत अछि।

कुश्ती मे सेहो फ्रायड सोझाँ अबैत छथि, कथाक प्रारम्भ लुंगीपरक सुखायल कड़गर भेल दागसँ शुरू होइत अछि। मुदा तुरत्ते स्पष्ट होइत अछि, जे ओ से दाग नै अछि, वरन घावक दाग अछि। फेर हाटक कुश्तीमे गामक समस्याक निपटारा, हेल्थ सेन्टरक बन्द रहब, ओतय ईंटाक चोरिक चरचा अबैत अछि। छोट भाइ कोनो इलाजक क्रममे एलोपैथीसँ हटि कऽ होम्योपैथीपर विश्वास करय लगैत छथि, ऐ गपक चरचा आयल अछि। लोक सभक घावक समाचार पुछबा लऽ एनाइ आ लेखक द्वारा सभकेँ विस्तृत विवरण कहि सुनओनाइ मुदा उमरिमे कम वयसक कएक गोटेकेँ टारि देनाइ, ई सभ क्रम एकटा वातावरणक निर्माण करैत अछि।

कैनरी आइलैण्डक लारेल कथामे सुभाष आ उपिया कथाक चरित्र छथि। एतऽ एकटा बिम्ब अछि- जेना निर्णय कोसीक धसना जकाँ। ममियौत भाइक चिट्ठी, कटारि देने नाहपर जयबाक, गेरुआ पानिक धारमे आयब, नाहक छीटपर उतारब, छीटक बादो बहुत दूर धरि जांघ भरि पानिक रहब। धीपल बालुपर साइकिलकेँ ठेलैत देखि कियो कहैत छन्हि- “साइकिल ससुरारिमे देलक-ए? कने बड़द जकाँ टिटकार दियौक”। दीदी-पीसा ऐठाम ऐ गपक चरचा सुनलन्हि, जे कोटक खातिर हुनकर बेटीक विवाह दू दिन रुकि गेल छलन्हि आ ईहो जे बेसी पढ़ने लोक बताह भऽ जाइत अछि।सुभाष चाहियो कऽ दू सय टाका नै मांगि पबैत छथि, दीदीक व्यवहार अस्पष्ट छन्हि, सुभाष आश्वस्त नै छथि आ घुरि जाइत छथि।

तृष्णा कथामे लेखककेँ अखिलन भेटैत छन्हि। श्रीलतासँ ओ अपन भेँटक विवरण कहि सुनबैत अछि। पाँचम दिन घुरलाक बाद ट्रेनमे ओ नै भेटलीह। आब अखिलन की करत, विशाखापत्तनम आ विजयवाड़ाक बीचक रस्तामे चक्कर काटत आकि स्मृतिक संग दिन काटत।

छोट-छोट भावनात्मक घटनाक विश्लेषण अछि कथा “कैनरी आइलैण्डक लारेल” आ “तृष्णा”।

दाना कथामे मोहन इन्टरव्यू लेल गेल अछि, ओतय सहृदय चपरासी सूचित करैत अछि जे बाहरीकेँ नै लैत छै, पी.एच.डी. रहितय तँ कोनो बात रहितय। मोहनकेँ सभ चीज बीमार आ उदास लगैत रहय। फुद्दी आ मैना पावरोटीक टुकड़ीपर ची-ची करैत झपटैत रहय। प्रतियोगी परीक्षाक साक्षात्कारमे बाहरी आ लोकल केर जे संकल्पना आयल अछि तकर सम्वेदनात्मक वर्णन भेल अछि।

दृष्टि कथामे पढ़ाइ खतम भेलाक बाद नोकरीक खोज, गाममे लोकसभक तीक्ष्ण कटाक्ष। फेर दक्षिण भारतीय पत्रकारक प्रेरणासँ कनियाँक विरोधक बावजूद गाममे लेखकक खेतीमे लागब। ई सभ गप एकटा सामान्य कथ्य रहलाक बादो ठाम-ठाम सामाजिक सत्य उद्घाटित करैत अछि। एतय गामक लोकक कुटीचाली अछि, जे काजक अभावमे खाली समय बेशी रहलाक कारण अबैत अछि। संगमे आइ-काल्हिक स्त्रीक शहरी जीवन जीबाक आकांक्षा सेहो प्रदर्शित करैत अछि।

नदी कथामे कथ्य कथाक संगे चलैत अछि आ खतम भऽ जाइत अछि। गगनदेवक घरपर बिहारी आयल छै। शहरमे ओकरा एक साल रहबाक छै। गगनदेवकेँ ओकरा संग मकान खोजबाक क्रममे एकटा लड़कीसँ भेँट होइत छै। ओकरा छोड़ि आगाँ बढ़ल तँ ई बुझलाक बादो जे आब ओकरासँ फेर भेँट नै हेतइ ओ उल्लास आ प्रेमक अनुभूतिसँ भरि गेल।

परलय बाढिक कथा थिक, कोसीक कथा कहल गेल अछि एतय। बौकी बुनछेकक इन्तजारीमे अछि। मुदा धारमे पानि बढ़ि रहल छै। कोशीक बाढ़ि बढ़ल आबि रहल छै आ एम्हर मायक रद्द-दस्तसँ हाल-बेहाल छै। माल-जाल भूखसँ डिकरैत रहै। रामचरनक घरमे अन्नपानि बेशी छै से ओ सभकेँ नाहक इन्तजाम लेल कहैत छै। बौकूक घरसँ कटनियाँ दूर रहै। मृत्यु आ विनाश बौकूकेँ कठोर बना देलकै, मोह तोड़ि देलकै। मुदा बरखा रुकि गेलै। बौकू चीज सभकेँ चिन्हबाक आ स्मरण करबाक प्रयत्न करऽ लागल।

बात कथामे सेहो कथाकार अपन कथानककेँ बाट चलिते ताकि लैत छथि आ शिल्पसँ ओकरा आगाँ बढ़बैत छथि। नेबो दोकानपर नेबोवला आ एकटा लोकक बीचमे बहस सुनैत लेखक बीचमे कूदि पड़ैत छथि। नेबोवलासँ एक गोटे अपन छत्ता मांगि रहल अछि जे ओ नीचाँ रखने रहय। दुखक गप, लेखकक अनुसार, बेशी दिन धरि लोककेँ मोन रहैत छै।

रंभा कथामे पुरुष-स्त्रीक बीचक बदलैत सम्बन्धक तीव्र गतिसँ वर्णन भेल

अछि। पुरुष यावत स्त्रीसँ दूर रहैत अछि तँ सभ ओकरा मेनका आ रम्भा देखाइ पड़ैत छै। मुदा जे सम्वादक प्रारम्भ होइत अछि तँ बादमे लेखक कैं लगैत छन्हि जे ओ बेटीये छी। रस्तामे एक स्त्री अबैत अछि। लेखक सोचैत छथि जे ई के छी, रम्भा, मेनका आकि...। ओकरा संग बेटा छै, ओतेक सुन्नर नै, कारण एकर वर सुन्दर नै होएतैक। ओ गपशपमे कखनो लेखककेँ ससुर जकाँ, कखनो अपनाकेँ हुनकर बेटी तुल्य कहैत अछि। पहिने लेखककेँ खराप लगलन्हि। मुदा बादमे लेखककेँ नीक लगलन्हि। मुदा अन्तमे ओकर पएर छूबए लेल झुकब मुदा बिन छूने सोझ भऽ जाएब नै बुझिमे अएलन्हि।

हमर गाम कथामे लेखकक गामक रस्ता, कटनियाँ सँ मेनाही गामक लोकक छिड़िआएब आ बान्हक बीचमे अहुरिया काटैत लोकक वर्णन अछि। कोसिकन्हाक लोक- जानवरक समान, जानवरक हालतमे। कटनियाँमे लेखकक घर कटि गेलन्हि से ओ नथुनियाँ ऐठाम टिकैत छथि। मछबाहि आ चिड़ै बझाबऽ लेल नथुनी जोगार करैत अछि। जमीनक झगड़ा छन्हि, एक हिस्सेदारक जमीन धारमे डूमल छै से ओ लेखकक गहूमवला खेत हड़पऽ चाहैत अछि। शन आ स्त्रीक (!) पाछू लोक बेहाल अछि।

स्त्रीक पाछू बिन कारण लेखक पड़ि गेल छथि जेना विष्णु शर्मा पंचतंत्रमे कथा कहैत-कहैत शूद्र आ महिलाक पाछाँ पड़ि जाइत छथि।

यावत सभ कमलक घूर लग कपक अभावमे बेरा-बेरी चाह पिबैत छथि, फसिल कटि कऽ सिबननक एतऽ चलि जाइ-ए। झौआ, कास, पटेरक जंगल जखन रहय, चिड़ै बड्ड आबए, आब कम अबैत अछि। खढ़िया, हरिन, माछ, काछु, डोका सभ खतम भऽ रहल छै- जीवनक साधन दुर्लभ भऽ गेल अछि। साँझमे जमीनक पंचैती होइत अछि। सत्तोक बकड़ी मरि गेलैक, पुतोहु एकर कारण सासुक सरापब कहैत अछि। सासु एकर कारण बलि गछलोपर पाठी सभकेँ बेचब कहैत छथि। सत्तोक बेटीक जौबनक उभारकेँ लेखक पुरुष सम्पर्कक साक्षी कहैत छथि आ सकारण फेरसँ महिलाक पाछाँ पड़ि जाइत छथि, कारण ई धारणा लोकमे छै। सत्तोक बेटी अखन सासुर नै बसैत छै। सुकन रामक ऐठाम खाइत काल लेखककेँ संकोच भेलन्हि, जकरासँ उबरबाक लेल ओ बजलाह- आइ तोरा जाति बना लेलिअह। कोसी सभ भेदभावकेँ पाटि देलक, डोम, चमार, मुसहर, दुसाध, तेली, यादव सभ एके कलसँ पानि भरैत अछि। एके पटियापर बैसैत अछि। ❑

गुलो (हिन्दी अनुवाद)

गुलो हिन्दी अनुवाद (अंतिका प्रकाशन) क पाठपर आधारित।

पहिने गुलोक हिन्दी अनुवादपर टिप्पणी। (सैद्धांतिक विवेचन लेल देखू हमर पोथी- मैथिली समीक्षाशास्त्रक मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त आ अनूदित साहित्यक समीक्षाशास्त्र, विदेह पेटार http://www.videha.co.in/pothi.htm मे उपलब्ध।)

जेना कोनो हिट फिल्म जेना कन्नड़क "कनतारा" जँ अहाँ पी.वी.आर. मे देख लेने छी तँ की पाँचो मिनट तकरा अहाँ ओ.टी.टी. प्लेटफॉर्मपर देखि सकै छी?

जेना हरिमोहन झा केर "कन्यादान"क हिन्दी अनुवाद (विभा रानी द्वारा) देखि कऽ हुनकर पुत्र राजमोहन झा दुखी भऽ माथ पकड़ि लेने छला, सैक्रेड गेम्सक अनुराग कश्यप द्वारा घटिया वेब सीरीज रूपान्तरण देखि कऽ लेखक विक्रम चन्द्रा दुखी भेल छला, सएह अनुभूति गुलोक हिन्दी अनुवाद देखि कऽ हमरा भेल।

मूल धाराक लोक बिनु अनुवाद सिद्धान्त पढ़ने अनुवाद करैए, मूल धाराक ब्राह्मणवादी आ नव-ब्राह्मणवादी लेखक सभक जखन मौलिक लेखनेमे शब्द-भण्डारक सुखार रहै छै तँ अनुवादक कथे कोन। अनुवादक रमण कुमार सिंह लग ने मैथिलीक शब्द-भण्डार छन्हि आ ने हिन्दीक। अखबारी भाषामे ओ गुलोक अनुवादक पहिले पाँतीमे "तिला सकरांति"क अनुवाद "मकर संक्रान्ति" करैत छथि! की मकर संक्रान्ति मैथिलीक मूल धाराक ब्राह्मणवादी आ नव-ब्राह्मणवादी लेखक सभ नै प्रयुक्त करैत छथि, आ गुलोक पहिल पाँतिमे "तिला-सकरांति"केँ सुभाष चन्द्र यादव "मकर संक्रान्ति" नै लिखि सकै छला?

से जँ अहाँकेँ सुभाष चन्द्र यादवक गुलो केँ हिन्दी आ मैथिली दुनूमे पढ़बाक इच्छा हुअय आ गैसलाइटिंगक सिद्धांतक प्रयोग देखबाक हुअय तँ पहिने हिन्दी अनुवाद पढ़ू आ फेर मूल मैथिली पढ़ू। कारण मूल मैथिली जँ अहाँ पहिने पढ़ि लेलौं तँ अहाँकेँ

सिनेमाकेँ पी.वी.आर.मे देखबाक अनुभूति हएत, आ जँ पहिने अहाँ मूल मैथिली पढ़ि लेब तँ हिन्दी अनुवाद एक्को पन्ना नै पढ़ि सकब, आ तखन गैसलाइटिंग केर प्रयोग केना देखि सकब? हमर इच्छा अछि जे अहाँ ई प्रयोग देखी।

अही सन्दर्भमे २०२१ मे गएर-सवर्णकेँ पहिल बेर देल मैथिलीक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक चर्चा करब आवश्यक अछि। जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास “पंगु” ओतऽ सँ शुरू होइए जतऽ यात्रीक बलचनमा खतम होइत अछि, आ मूल धाराक लोक छड़पटाय लगला जे जगदीश प्रसाद मण्डल यात्रीजी सँ आगू केना बढ़ि गेला आ ओ सभ यात्रीजी सँ आगाँ बढ़ब तँ दूर पाछुए किए जा रहल छथि? २०१८ मे ई उपन्यास विदेहमे ९ खण्ड मे ई-प्रकाशित भेल आ संकलित भेल विदेह सदेह:२१ मे (पृ. ६७७-७७९), फेर ओ पुस्तकाकार आयल ओही बर्ख, आ आब ओ विदेह पेटार मे सेहो उपलब्ध अछि। ऐ पोथीक हिन्दी अनुवाद रामेश्वर प्रसाद मण्डल द्वारा कयल गेल (पल्लवी प्रकाशन) आ हमर अनुरोध अछि जे ई हिन्दी अनुवाद अहाँ मूल मैथिली पढ़लाक बाद पढ़ू, अहाँ पूरा पोथी पढ़ि सकब। पंगुक मूल आ हिन्दी दुनू विदेह पेटार मे उपलब्ध अछि।

फेर घुरू गुलोक हिन्दी अनुवाद पर, से अनुवाद केना भेल आ केना मैथिलीक इन्साइडर व्यू हिन्दी-अनुवाद वर्जनमे आउटसाइडर व्यू बनि गेल नव-ब्राह्मणवादक अनूदित-स्टोरी-साइंसक प्रयोग सँ, से नीचाँ टेबुलमे देल अछि। बहुत ठाम हिन्दी शब्दकोषक अकालक कारण शब्द लेल शब्द नै वरन् विवरण देल गेल अछि, सेहो बहुत ठाम अशुद्ध आ बहुत ठाम अनूदित भेबे नै कएल, आकि अर्थक अनर्थ करैत शाब्दिक/अर्थानुवाद भेल।

मूल मैथिली “गुलो”	अनूदित हिन्दी “गुलो”
तिला-सकरांति	मकर संक्रान्ति
एक्के ससपेन मे मुँह तोड़ि	एक ही सस्पेन से मुँह तोड़
ओकरा टांसलकै	उसका घी बनाया
घरनियो*	पत्नी भी
टुकदुम-टुकदुम	किसी तरह
कबइ	कबई मछली

दबिया	दाब
देखबहक छौड़िए!	देखेगी तू,
देलियह	आपको दिए
अमाठी	आम की टहनियाँ
करची	बाँस की छड़ियाँ
कठुआयल	स्तंभित
दाब-दाब करैत रहै छै	दबाव बनाए रखते हैं
बात उनटा दइ छै**	बात को पलट देती है
पनिजाब	पंजाब
मुँह बाबि कऽ	हताश
सड़लाह खुट्टा	घुन लगे खूँटे
उपरेलक	ढूढ़कर लाई
गज्जन	इज्जत
ओगरइ-ए	देखभाल करता है
रमराहड़ि	अरहर
ठिठुआ***	ठिठुआ
कोय लटेलक	कोई उसे हथेली पर रगड़ता है
भाकन	जलकुम्भी
परचारै छै	ताना देती है
भोटिया	सुजनी
भोमहैर लेतै	काट खाएँगे
हपकुनियाँ	उंकड़ूं
चास, समार आ चौकी***	चास, समार और चौकी
टोन करइ-ए	टुकड़े-टुकड़े करती है

पांगय लागल	काटने लगा
खराय	डंठल सूखकर सख्त
गोसांइ डुमानी	सूर्य डूबने
पछड़ैत-पुछड़ैत	किसी तरह
सिदहा	भोजन की सामग्री
गुलो उकटि देलकै	गुलो ने कहा
जुमा कए	निशाना साधकर
हपसि-हपसि	हाँफ –हाँफ
भासि गेल	हिल गए
पाढ़ि	छप्पर को टेकनेवाला आधार
हटहट	पत्थर
गिरहत दहित रहै	गृहस्थ उदार था
छील-मोठि	छीलकर
हड़ौथ	हड़ौथ बाँस
खढ़ उछाहि देलकै	फूस उड़ गई
कालीबंदीक सेवा	कालीबंदी की पूजा
कुशक कलेप***	कुश का कलेप
पाट	अंतर्धान
आरा	बगीचा
गाछी	आम के बगीचे
गैढ़	काटकर
छौड़ी कए समांगे ने होइ छै	उसकी तबीयत ठीक नहीं है
टाट	घास फूस से बनी दीवार
दोसर बिछेलक	दूसरी बनाने लगा है

आलन	अस्तर
जैराठो	जड़ें
दू गो सुपारी नोत मे आयल छै	निमंत्रण की सुपारी मिली है
बाछय लागल	अलग करके रखने लगा
टिरसि कए	गुस्से में
कननमुँह	रुआँसा
बीट लगाएत	बाँस रोपेगा
सिसोहि लेलकै	तोड़ ले गया
अरिकंचन***	अरिकंचन
लाट मे झुनियो रहै	झुनिया भी थी
अढ़े-अढ़	चुपके से
नौ बजे राति मे	दस बजे रात में
ओलैत	चुनता
झखइ	अफसोस जता रहा
डंगेलक	उसे तैयार किया
टपय	आने
जोगतै	रखवाली कौन करेगा
सात-आठ टा नभका खुट्टा काटि	खूँटे काट रखे
खिखिर	नेवला
पजोठने	लेकर
हाक दाए	बुलाकर
जुआयल***	जुआया हुआ
गलि कए भात भाए जेतौ****	गलकर भात हो जाएगा
तुम्मा***	तुम्मा

अवाच कथा	बुरी बात
भूमकम	भूकम्प*****
भूकम्प	भूकम्प*****
ठठरी***	ठठरी
ऊक	मुखाग्नि
हिन्नू	हिन्दू
करइ छै केना	बोलता क्या है
अरबा-अरबाइन***	अरबा-अरबाइन
झोड़ा	बटुआ
टानि कए	लेकर
अखरा***	अखरा

*सुभाष चन्द्र यादव पत्नी लेल घरनी आ जगदीश प्रसाद मण्डल भनसिया केर प्रयोग करै छथि, दुनू दू-स्थितिमे दू तरहक प्रयोग छै। अनुवादक की दुनू लेल "पत्नी" शब्दक प्रयोग करता?

**बातकेँ पलटि देनाइ भेलै घुमा देनाइ, एतऽ छै छुटिते उनटा जबाब देनाइ।

***अनूदित नै भेल

****शाब्दिक अनुवाद

*****अर्थानुवाद

हिन्दी वर्जनमे अध्याय परिवर्तन सेहो पता नै चलैत अछि, मूल मैथिलीमे नव पृष्ठसँ विवरण शुरू कऽ, आ जतऽ जगह खाली छै ओतऽ फोटो पाड़ि कऽ अध्याय परिवर्तन स्पष्ट कएल गेल छै।

डेनमार्कक शब्दकोष बड विस्तृत छै, प्रायः २३ वोल्यूम सँ बेशीमे छै, आप्रवासी प्रायः ओकर नागरिकता लेल लइ जायबला डेनिस भाषाक परीक्षामे अनुत्तीर्ण भऽ जाइ छथि। एकटा महिला जे डेनिससँ विवाह केने रहथि हुनकर बच्चा डेनमार्कक नागरिक भऽ गेल मुदा ओ कहलन्हि जे भाषा पेपर बड्ड कठिन होइ छै, डेनिस सेहो ओइमे अनुत्तीर्ण भऽ जाइ छथि। जनसंख्या वा क्षेत्रफलक छोट रहब डेनिस वोकाबुलेरी लेल हानिकारक नै भेलै।

हिन्दी जइ हिसाबे अपन भूगोल बढेलक अछि ओइ हिसाबे ओकर शब्दावली नै बढ़ल छै। अमेरिकामे ३५० शब्दक अंग्रेजीक "हाइ प्रेक्वेन्सी" आ ३५०० "बेसिक वर्ड लिस्ट" हाइ स्कूलक छात्र लेल छै जे क्रमशः कॉलेज आ ग्रेजुएट स्कूल (ओतए पोस्ट ग्रेजुएटकेँ ग्रेजुएट स्कूल कहल जाइ छै) धरि पहुँचलापर दुगुना (गएर भाषा फेकल्टीक छात्र लेल) भऽ जाइ छै। साहित्यक विद्यार्थी/ साहित्यकार लेल ऐ सँ दस गुणा अपेक्षित होइत अछि। हिन्दीमे अपवाद, जकरा हिन्दीक पुरोधा लोकनि उपहासमे आंचलिक उपन्यास/ लेखन कहैत छथि आ एक तरहेँ नकारैत छथि, केँ छोड़ि हिन्दीक कवि आ उपन्यासकार अठमा वर्गक २००० शब्दक शब्दावलीसँ साहित्य (पद्य, उपन्यास) रचै छथि आ मैथिलीक किछु साहित्यकार ऐ बेसिक २००० शब्दक वर्ड लिस्ट धरि सीमित रहए चाहै छथि, जखन कि जापानी अल्फाबेटक चेन्ह ५०० धरि पहुँचि जाइ छै।

जइ भाषामे रामलोचन शरण १४-१५ हजार पाँतीक श्रीरामचरित मानसक अनुवाद सन् १९६८ (वि. २०२५) मे पूर्णभाव रक्षित मैथिली रूपमे केलन्हि ओत सन् २०२१ (वि. २०७८) मे गुलोक ऐ तरहक हिन्दी अनुवाद मोनकेँ विखिन्न करैत अछि।❑

गुलो केर आमुख “आखिरी विपन्न मनुक्खक गाथा”- लेखक केदार कानन

मूल मैथिली गुलोक प्रारम्भसँ पूर्व एकटा आमुख अछि “आखिरी विपन्न मनुक्खक गाथा”। ई अछि मूल धाराक कन्नारोहट आ ऐ बेर ओइ कन्नारोहटक भार छन्हि केदार काननक कान्हपर, आ ई लिखल गेल अछि तिला-संक्रान्ति दिन!

मुदा सुभाष चन्द्र यादव तँ आखिरी विपन्न मनुक्खक गाथा लिखबे नै केने छथि। ई आमुख सुभाष चन्द्र यादवक लेखनीकेँ ओइपार ठाढ़ करबाक कुत्सित प्रयास अछि। ओ तँ लिखने छथि गुलो मण्डलक जीवनी, ओ गुलो मण्डल जे कहैत छथि-

“हमरा चिन्है छिही? ने चिन्है छिही तऽ चीन्ह ले। हम छिऐ गुलो मण्डल। अही चौक पर घर छै। हमरा संगे ठेठपनी केलही तऽ बूझि ले। हम छिऐ गुलो मण्डल।“

आ केदार कानन कऽ रहल छथि ठेठपनी गुलो मण्डलक सङ।

“बड़का-बड़का ठोप-चानन कयनिहार भाषा कें दूषित करब मानैत छथि।“- केदार कानन लिखै छथि।

मुदा ओइ ठोप-चानन कयनिहारक नाम लेबाक साहस केदार काननमे नै छन्हि।

केदार कानन सभटा लाभ साहित्य अकादेमी आ मैथिली अकादेमीक ठोप-चानन कयनिहारसँ लैत छथि। आ आब जखन ओ ठोप-चानन कयनिहार मरनासन्न छथि, किछु वास्तविक रूपमे मरियो गेल छथि, तँ ओ अपनाकेँ ओकरासँ अलग देखाबय चाहैत छथि।

आ ठोप-चानन कयनिहारक बाल बच्चा सभ जँ केदार काननकेँ, वीणा ठाकुरकेँ, अशोक अविचलकेँ आ आन लाखक-लाख टाकाक अनुवाद/ सम्पादनक

असाइनमेण्ट आ साहित्य अकादेमीक बाल/ अनुवाद पुरस्कार लेनिहार कैँ कृतघ्न कहि रहल छन्हि तँ ओ हुनका लोकनिक आपसी मामिला छन्हि। मुदा ठोप-चानन कयनिहारक बाल बच्चाक पुरखाक कृपासँ हुनका सभकेँ ई सभ भेटलन्हि से तँ सत्य छैहे।

संगहि जँ अहाँ ठोप-चानन नै कऽ रहल छी, बा धोती-कुर्ता नै वरन् पेण्ट-शर्ट पहिरै छी बा नव-ब्राह्मणवादी छी तँ अहाँकैँ सभ छल-प्रपञ्चक अधिकार स्वतः भेटि जाइत अछि, से केदार काननक आमुख सँ जनतब भेटैत अछि।

गुलो २०१५ मे प्रकाशित भेल केदार कानन जी केर आमुखक संग।

२०१९क साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार केदार कानन जी कैँ हिन्दी कविता संग्रह "अकाल में सारस" (लेखक- केदार नाथ सिंह)क मैथिली अनुवादपर देल गेल। आब अहाँ पहिने हमरा बताउ जे के एहन लोक अछि जे हिन्दीक कविता संग्रह नै पढ़ि सकैए आ से ओकरा मैथिली अनुवादक खगता छै? आ ऐ मे केदार काननकैँ अनुवाद असाइनमेण्ट आ पुरस्कार, डबल फएदा भेलन्हि सएह ने। कारण रमता जोगी (२०१९) मे केदार कानन निपत्ता छथि, मडर (२०२१) मे कोनो आमुख नै अछि।

मुदा भोट (२०२२) मे केदार कानन बैक-कवरमे ८ पाँति लिखने छथि- मुदा एक्कोटा क्रान्तिकारी पाँति ओइमे नै अछि, किए?

आब "गुलो" उपन्यासक सङ साहित्य अकादेमी की केलक।

२०१६-२०२० मे प्रकाशित रचनाकैँ साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०२२ मे देल जयतै। माने गुलो रेससँ बाहर।

माने गुलोक क्रान्तिकारी आमुख लिखनिहारकैँ साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार आ गुलो रेससँ बाहर।

तँ गुलोक आमुख ब्लैकमेलिंग छल? बुझि तँ सएह पड़ैए।

गुलोक आमुखमे आर बहुत रास कन्नारोहट अछि।

'देसिल बयना सब जन मिट्ठा', मूल धाराक सभकैँ ई रटल छै, से केदार काननकैँ सेहो रटल छन्हि। मुदा अवहट्ठ तँ साहित्यिक भाषा छल।



मुदा ज्योतिरीश्वर-पूर्व विद्यापति संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुरः सँ भिन्न छथि। सम्भवतः बिस्फी गामक बार्बर कास्टक श्री महेश ठाकुरक पुत्र। समानान्तर परम्पराक बिदापत नाचमे विद्यापति पदावलीक (ज्योतिरीश्वर पूर्वसँ) नृत्य-अभिनय होइत अछि। ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापतिक विवरण- कश्मीरक अभिनव गुप्त द्वारा (दशम शताब्दीक अन्त आ एगारहम शताब्दीक प्रारम्भ) लिखल ग्रन्थ अछि "ईश्वर प्रत्याभिज्ञा- विभर्षिणी" जइमे ओ विद्यापतिक उल्लेख करै छथि। श्रीधर दासक सदुक्तिकर्णामृत- (रचना ११ फरबरी १२०६, देखू मध्यकालीन मिथिला, विजय कुमार ठाकुर)- श्रीधर दास विद्यापतिक पाँच टा पद एतऽ उद्धृत केने छथि जे विद्यापतिक पदावलीक भाषा छी। "जाव न मालतो कर परगास तावे न ताहि मधुकर विलास।" आ "मुन्दला मुकुल कतय मकरन्द"। ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०) षष्ठः कल्लोल- ॥अथ विद्यावन्त वर्णना॥ अष्टमः कल्लोलः- ॥अथ राज्य वर्णना॥ मे बिदापत केर उल्लेख करैत छथि। से विद्यापति ततेक प्रसिद्ध भऽ गेल रहथि जे ज्योतिरीश्वर तकर उल्लेख नाचक रूपमे केलन्हि। (विद्यापतिक चित्र: विदेह चित्रकला सम्मानसँ पुरस्कृत पनकलाल मण्डल द्वारा)।

केदार कानन तकर बाद गुलो उपन्यासक सारांश लिखै छथि। लगैए ओ ठीकसँ उपन्यास पढ़लन्हि नै बा अर्थ बुझि नै सकला। ओ लिखै छथि- "अनवरकेँ बूझल छैक जे बुढ़िया (सुखबाक माय) लग पाइ छैक। ओकर कोनो प्रयास निरर्थक नै हेतैक। .. ऐंठ लेत" आर की की।

मुदा उपन्यासमे से छैहे नै, अनवरे नै आनो पात्र एहेन नै करैए जे केदार कानन बुझाबय चाहै छथि। पलाइबला पाइ दैए जखन सभकेँ होइ छै जे ओ नै देत। पंखाबला पंखा बदलि कऽ दऽ दैए जखन गुलोकेँ सेहो आशंका रहय जे ओ नै बदलत। अनवर तँ

कतेक बेर मदति केलकै, बादमे सतर्को केलकै जे गिद्ध सभ पाइ लेल मड़रा रहल छै। हँ कताक बेर पाइ नै भेटलापर/ भेटैमे देरी भेलापर एक बेर ओ अनठेने जरूर रहै।

गुलो केर भाषासँ केदार कानन अचम्भित छथि, मूल धारा केर लोककेँ हेबाको चाही। मुदा से हुनकर मैथिली साहित्यसँ १५ सालसँ दूर हएब मात्र दर्शित करैत अछि।

केदार काननकेँ आनो बहुत चीजपर आश्चर्य होइ छन्हि, उपन्यासक एकटा झगड़ाक बादक स्थितिपर ओ लिखै छथि जे "तथाकथित भद्र समाजमे एतबे टा घटना की सँ की कऽ दैत अछि मुदा सामान्य लोकक घरमे एहन घटना रहरहाँ..."।

केदार काननक ऐ तरहक अचम्भित होयबाक स्वाङ करब हास्य उत्पन्न करैत अछि, मूलधाराक ऐंठीक रूपमे हम एकरा देखैत छी। लगैत अछि जे ओ कोनो दोसर ग्रहसँ आयल छथि आ सुपौलक एकटा बड़का महलमे रहै छथि, दीन-दुनियाँ सँ दूर।

९ पन्नाक ई आमुख गुलोक पाठमे व्यवधान उत्पन्न करैत अछि। से अहाँसँ आग्रह जे पृ. सं १७ सँ सोझे गुलो पढ़नाइ शुरू करू। एक निसाँसमे उपन्यास पढ़ि जाउ। फेर घुरि कऽ ई आमुख बा कन्नारोहट हास्य आलेखक रूपमे पढ़ू। गुलोक हिन्दी अनुवादमे केदार काननक आमुख “आखिरी विपन्न मनुक्खक गाथा” केर अनुवाद उपन्यासक अन्तमे देल गेल अछि आ तइ लेल गौरीनाथ धन्यवादक पात्र छथि। ❑

गुलो (मूल मैथिली)

गुलो मे गिरहत आ मालिकक चर्च मात्र भेल अछि, जिनकर कलम-गाछी छन्हि, मुदा बस चर्चे अछि, आ एक बेर बभना कहि कऽ सम्बोधन अछि, माने ओ ब्राह्मण थिका।

मात्र गुलोक मरलाक बाद डाक्टर मलिक अबै छथि, जे कानैत कहैत छथि जे आब हुनका मालिक के कहतन्हि, मानि लिअ ओ कायस्थ छथि, मुदा ऐ उपन्यासमे हुनकर जातिक विवरण नै अछि। से एकटा गिरहत/ मालिक दू-चारि बेर आ डाक्टर साहेब एक बेर।

आ सभसँ पाइबला छथि पलाइ मिलक मालिक- दशरथ मण्डल।

ई उपन्यास मोटा-मोटी १४ खण्डमे विभक्त अछि, आ फ्लैशबैकक संग गुलो मण्डलक जीवनक विवरण ओकर लगक वातावरणक विवरणक संग दैत अछि। उपन्यासक उद्देश्य काल-स्थानक विस्तारपूर्ण विवरण देबाक नै अछि, आ से समाज बा अर्थव्यवस्थाक अन्तर्निहित समस्याक विश्लेषण ई नै करैत अछि। गुलो मण्डलक चारू कात ई घुमैत अछि। गुलो मण्डलक आँखि, गुलो मण्डलक आभासी बा वास्तविक उपस्थिति जतऽ जतऽ ओ जाइत अछि ततऽ ततऽ ई उपन्यास विचरैत अछि। कने काल लेल एम्हर-ओम्हर गेबो कएल तँ फेर आपस। मृत्युक बादो जखन लोक अनुकम्पा राशिमे अपन हिस्साक लेल जोगार कऽ रहल छथि, लेखक रिर्नियां लग घुरि अबैत छथि आ गुलोक हाक रिनियाँकेँ सुनाइ पड़ै छै, ओ बाबाक एकटा आर हाकक आसमे कान पथने अछि। "अकानैत रहइ-ए।" आ उपन्यास खत्म होइत अछि- "बबा तए चलि गेलइ। रिनियां कानइ-ए।"

ई पोथी सामान्य उपन्याससँ भिन्न शब्द आ वाक्यक पाठ्यता (टेक्स्टुएलिटी) क रूपमे विश्लेषण मंगैत अछि। जुलिया क्रिस्टोवाक अनुदैर्घ्य सम्बन्ध बला धूरी जे लेखक आ पाठककेँ जोड़ैत अछि आ उर्ध्वाधर धूरी जे ऐ पाठकेँ दोसर पाठ संग जोड़ैत अछि।

गुलो अध्यायमे विभक्त नै अछि, ई एकटा धार सन बहैत जाइत अछि, मुदा

टाइपोग्राफीक प्रयोगसँ प्रिण्ट वर्सनमे अध्याय वा खण्ड पाठकक सुविधा लेल सम्भव कएल गेल अछि। ओना कए बेर खण्डक भीतर पैराग्राफ-स्पेस दऽ कऽ खण्डक भीतर उपखण्ड सेहो बनाओल गेल अछि।

आब एकबेर गुलो केर पुनर्पाठ करी।

गुलोक पहिल खण्ड

पाठ शुरू होइत अछि तिला सकरांति सँ, मकर संक्रान्तिसँ नै! (अनुवादकक लेल ई गप अछि।)

आङन नीपि रहल अछि रिनियां (गुलोक छोटकी बेटी), गीत गाबि रहल अछि। की अहाँकेँ कन्नारोहट बा कोनो हीन भावना गुलोक परिवारमे देखा रहल अछि। सिनोमेटोग्राफिक अनुभव लिअ, सोचू-गुणू, गीत गबैत नीपब, फेर पानिक फाहा जकाँ ओस, पछिया हवा, बड्ड जाड़, रिनियां पहिरने अछि खाली सलवार आ फराक आ मायक हाक- "ई छौड़ी हमरा जीअय नै देत। गे चद्दरि ओढ़ि ने ले।" आ करू ऐ दृश्यक मंचन। मुदा नीपै कालमे चद्दरि लेटा जेतै, मैल लेटेलाक बाद हेतै (अनुवादकक लेल ई गप अछि।)

आ आब सोचू जे ई गुलो मण्डल नै तथाकथित भद्र समाजक गुलो काननक घर अछि।

तथाकथित भद्र समाजमे सेहो अहिना भोर होइ छै, अहिना तिला सकरांति बाजल जाइ छै, अहिना नीपल जाइ छै, आ अहिना माय चिचिआइ छै "ई छौड़ी हमरा जीअय नै देत। गे चद्दरि ओढ़ि ने ले।"

गुलोक परिवारक भोरुका आन सभ बात सेहो अहाँकेँ एतऽ भेट जायत।

गुलोक दोसर खण्ड

“हमरा चिन्है छिही? ने चिन्है छिही तऽ चीन्ह ले। हम छिऐ गुलो मण्डल। अही चौक पर घर छै। हमरा संगे ठेठपनी केलही तऽ बूझि ले। हम छिऐ गुलो मण्डल।“

फ्लैशबैक एक पाराग्राफमे, गुलोक बाप मुनीलाल, गुलोक दूटा छोट बहीन, ओकर मायक मरब, बापक रेलवेक नोकरी छोड़ब, सहरसाक रेलवेक बड़ाबाबू बनरजी साहेबक मोन नै रहै जे मुनीलाल नोकरी छोड़य, ओकरा बड़का-बड़का जिन्दा कबइ के देतै? मुनीलालक जेठकी बेटीक मांग तीन संतानक बाद पोछाय गेलै, मुनीलाल सभकेँ

अपने लग लाए आनलक। नाति चरफर-चलाक रहै (महेन्दर).. बासडीह लिखा लेलकै। गुलो भागि कऽ कोसी चौक, सिपौल आबि गेल। बिहार सरकारक जमीनपर बसि गेल।

रेलवे मे रहैत मुनीलाल लोहा-लक्कड़क बहुत सामान बनबेने रहय। छोट-पैघ खुरपी, कोदारि, खंती, दबिया, कुड़हरि, भाला, बरछी। ई सब अखनियो गुलोक घर मे छै। इएह ओकर बपौती छिऐ। बाप-पुरखाक छोड़ल और कुइछ नै छै।

फेर रिनियांक चंचलता। ओकरा स्कूलमे पाँच सय टाका भेटल रहइ, पोशाक राशि। दीदीजी कहने रहइ- 'जुत्ता कीन लिहे।' मुदा गुलोक दोसर बेगरतामे से खर्च भऽ गेलै, रिनियाँ कहै छै.. सभटा चाटि गेलह।

गुलोक तेसर खण्ड

छोटुआ (गुलोक छोटका बेटा) आ रिनियांक काजक प्रति दृष्टिकोणक द्वन्द्व।

गुलोक चारिम खण्ड

एक मास पहिने गुलोक बड़का बेटा अरजुनमा पनिजाब (पंजाब नै-अनुवादकक लेल टिप्पणी) चलि गेलै। कंदाहावाली (अरजुनमाक बौह) आ सुजीत (अरजुनमाक बेटा)।

रिनियाँक पेटमे चाली छै कारण ओ पचपच थूकै छै।

नया साल दिन माछ बनल रहय, कारण नया साल आब उत्सवक दिन बनि गेल छै सभक लेल। ओइ दिन रिनियाँ माछ बोकरि देने रहय। ओना रिनियाँक आग्रह रहै मौंस खेबाक।

गुलोक बगले मे अनवर एगो कठघरा मे बैठइ-ए। ऊ सुइया दै छै। एगो सुइया दइ के दस टका लै छै।

गुलोक ससुरारि छै बेला आ ओकर पत्नीक नाम छै बेलावाली।

पहिने गुलोकेँ गाजा पीऐत-पीऐत दम्मा उखड़ि गेलै। माने चारू कात गाजाक नशाक व्यापार होइत हेतै। से बेलासँ ओकर सरहोजि अपन ननदि माने गुलोक पत्नीकेँ देखय आयल छै आ कहै छै- "ई गजपीआ हमर बहीन कए मारि देलक।"

कंदाहावाली जरना उपरेलक (जोगार केलक, ताकि कऽ नै अनलक-अनुवादकक लेल टिप्पणी)।

भगिनाक बियाहक नोत पुरबाक क्रम, साड़ी, साया, बिलाउज आ दू सय एकावन टाका दिअ पड़तै। ओ सोनक जाइए, छोटुआ आ रिनियां संग छै। गुलोक

बड़की बेटी रुनियाँ सेहो सासुरसँ सोझे ओतऽ आयल छै, बहीन रिनियाँकेँ अपन सासुर लऽ जाय चाहै छै। मुदा ओ मना कऽ देलकै, लोक कहतै जे बाप रोगाह भऽ गेलै, दिन टगि गेलै तँ पेट पोसै लए आयल छै। ओ बड्ड कानल, गुलो केँ छगुन्ता होइ छै, छौड़ी ई सब बात केना बूझि गेलै। कनियाँ दब छै मुदा मना करितै तँ कोनो गज्जन बाँकी रहितय (कोनो कर्म बाँकी रहितय, इज्जत तँ छोट शब्द छै- अनुवादकक लेल टिप्पणी), "मारियो खइतौं..।"

रिनियाँ लेल सोनक कोनो तीरथसँ कम नै कारण ओ अखैनधरि रेलगाड़ियो नै देखने-ए, माने चढ़ल तँ नहिये अछि, देखबो नै केने अछि, माने मात्र सुनने अछि। से दूटा इण्डिया छै।

गुलोक पाँचम खण्ड

घूर-धुँआ। "अनवर कोनो जवाब नै दै छै। ऊ पहिने कएक बेर मदद केने छै, टाका देने रहै, दवाइ देने रहै, सुइया देने रहै। ... गुलो घुरबै के नाम नै लै छै।"

गुलोक छअम खण्ड

राजिनदर डीलर आ ओकर समदाही इनरा गानही। इनरा गानहीक जेठका डोमा किराना के दोकान करै छै। दोसर बेटा के पानक दोकान छै, सब तरहक चार्जर राखने-ए आ एकटा मोबाइल चार्ज करइ के पाँच टका लै छै। पुनरबास मे बहुत कए बिजली नै छै। तेसर बेटा मोबाइल रिचार्ज करइ-ए, फिलिम आ गाना डाउनलोड करइ-ए। फोटो एसटेट करइ-ए। फोटो खींचइ-ए। चारिम बेटा बरजेश दवाइ के दोकान करइ-ए। ओकर कहब छै- 'कोनो डाक्टर आ हमरा मे फरक एतबे छै जे डाक्टर कए डिगरी छै आ हमरा डिगरी नै छै।

गुलोक सातम खण्ड

कंदाहावालीकेँ मलहदक चाँपमे मखानक कमौनीक नव-रोजगार भेटलइ-ए।

सुखबा अपन माय कए घर सए निकालि देलक। ओ छै इनरा गानहीक पितिया सासु।

सुखबा माय कए घर लाए आनलक।

गुलोक आठम खण्ड

मूंगक बीया बाउग हेतै, हरवला चास, समार आ चौकी दइ के अढ़ाइ सय मांगै छै।

कल ठीक करेबाक छै।

"एमपी के एलेकशन छिऐ। कांगरेस रंजीता रंजन कए ठाढ़ केने-ए।" नरेशबा रंजीता रंजनसँ गुलो कैँ एक हजार टका दिएतै, गुलोक घरमे छहटा भोट छै। मुदा नरेशबा निपत्ता भऽ गेलै। मुदा फुलबा मोदीकैँ जितेतै, मुदा गुलो नै जाएत मीटिंगमे "तोरा (फुलबाकैँ) मोटका गड्डी भेटल हेतौ। तू कर गे (मीटिंग)।"

फेर घरक झगड़ा, कंदाहावाली ससरफानी बनेलक आ गरदनि मे फँसा लेलक। कंदाहावाली बोइनवला गहूम डराममे बन्न कऽ ताला लगा नैहर चलि गेल।

गुलोक नअम खण्ड

गुलोक दूटा घर भासि गेलै।

बाबा कहलकै, घरपर मरछाउर छीट देने छह। जंतर देलकै, मुदा ओ कोनो काजक नै।

कालीबन्दीक सेवा, भगैत, फुलहासि। आब कुशक कलेपो नै लगतै।

गुलोक दसम खण्ड

छोटुआ काज करैए पिलाइ मालिक दशरथ मण्डल ओइठाम। कल ठीक करबैले १२०० टाका एडवांस मांगैए, १००० भेटै छै। मुदा कल ठीक करेबाक बदला ओ साइकिल कीनि लैए कारण अरजुनमा अपन पाइसँ कीनल साइकिल बेचि लेने रहै। ओकरा देखेबाक छै।

अनवर रिनियांक बोखार उतारबाक लेल गोली देलकइ।

गुलोक दसम खण्ड

गुलो कैँ दूटा सुपारी दूटा नोत मे आयल छै- एकटा लालो पण्डित के पोती के बियाह, दोसर सारि के जैधी के बियाह।

गुलोक एगारहम खण्ड

गुलो मालिकसँ टॉर्च मांगत, ओ नै देतै तऽ एक्को गो आम कि लुच्ची भोग नै हुअय देत।

बाँस डेढ़ सय सए कम मे नै भेटै छै, गुलो चोरा कए बेचत तैं एक्के सय मे दिअय पड़तै। पाच टा बाँसक पाइ भेटलै, पान सय मे रिनियाँ पाठी किनलक। घड़िए घंटा मे पाठी रिनियाँ कए चीन्ह गेलै।

गिरहत टौर्च नै देलकै, अपना पचास टका लगा कए किनलक।

चोरबा सौंसे गाछक लुच्ची सिसोहि लेलकै। एकटा ठकुरबा सेनियल चोर छै।

रिनियां, झुनियां आ बरस्सेरवाली लुच्ची चोरबैए।

'पकड़लकह नै?'- रिनियाँ पुछलकै।

'ऊ बभना हमरा पकड़त? ..'' (बरस्सेरवाली)

गुलोक बड़की बेटी रुनियाँ बीनामे बियाहल छै। अनवरक मोबाइलपर फोन एलै ओकर। गुलो ओतऽ जाइए, छोटुआ सेहो सङ जाइ छै। रिनियांबला लुच्ची सनेस बनि जाइ छै।

मूंगक पहिल तोड़ रिनियां सतलरेनमार्कें देलक, ओ बीस टाका देलकै।

रुनियाँ के दीयर नेरहू एलै, ओ चुपचाप रिनियां के देखैत रहइ-ए आ मुस्की छोड़इ-ए।

दशरथ मण्डलक साढ़ूक लड़का नेपालमे छै, रिनियां लेल कथा अबै छै। मुदा गुलो चारि मासक टेम मंगैए, अरजुनमा नालायक छै मुदा तैयो ओकरासँ पुछतै।

गुलोक बारहम खण्ड

अनवरक मोबाइलपर फोन एलै अरजुनमाक, ओ रबाड़ि दै छै।

गुलोकेँ खोंखी होइ छै, दू सय टाकामे दू कट्ठा थोकड़ा ओलइ के बात भेलै। कतेक गरदा फेफड़ामे गेल हेतइ। खौंत बाड़ि देलकै, दस टाकाक पंखा टूटि गेलै मुदा नंगड़ा दोसर बदलि देलकै।

गुलोक तेरहम खण्ड

एक बेर रिनियाँ गछपक्कू आम लाए कए गेल रहै तऽ मालिक पचास गो टाका देने रहै। मलिकानि खाइ लए देने रहै।

बेलावालीक बोखार उतरिते नै छै। कोन छौड़ा, कोन मौगी काए टा आम लाए गेलइ।

गुलो भरि राति छटपट करैत रहल। दम फुलइ आ खोंखी होइ।

"बुढिया कए बोखार लागल छै। ओकरा (गुलोकेँ) अपना उठले ने होइ छइ।.. छौड़ी असकरे कखून घर तऽ कखनू गाछी दौड़ैत रहइ छइ। छौड़ा आठ बजे धरि सुतले रहै छै।"

गुलोक अन्तिम खण्ड

गुलो सात-आठ टा नभका खुट्टा काटि कए राखने-ए। .. आब तऽ सके ने लागइ छै जे कुछो करत।

रिनियाँक पाठी खाइ-पीअइ नै छै। नै जानि की भाए गेलै।

आन बेर गुलो रातिओ कए गाछी ओगरैत रहय। अइ बेर नै ओगरि भेलै। आब ओते पैरुख नै छै..

...कंदाहावाली पहुँच गेलइ।– 'पपा, कल वला मिसतरी कए बजा आनथिन। ठीक काए देतै।'

गुलो बाजल- 'कनियाँ, ओइ मे एक हजार लागतै। हमरा हाथ पर एक्को गो टका नै छै।'

'बजा कए आनथिन ने। जे लागतै से देबै।'

अरजुन पनिजाब सए घूरि आयल।

भगिना महिनदर जे बेइमानी सऽ गुलोक घराड़ी गुलोक बाप सऽ लिखबा लेने रहै से ठकहरबा भगिना सुनलकै जे ममा बेमार छै त भेंट करय एलै। गुलो ओकरा अवाच कथा कहि देलकै।

महिनदर सतलराएन भगवानक पूजा करेलक। रिनियां ओतऽ गेल, भौजी रातिमे रोकि लेलकै। रिनियांकेँ पता चललै जे गुलोक मन बहुत खराप छै। ओ भोरे आबि गेल।

ऐ उपन्यासक महा-अन्त... कला देखू..

माय रतुका पूजा दिआ पुछलकै। औतौका हाल सुनबइ मे रिनियां कए मन नै लागलै। माए कए कहलक- 'माय, पैसा दही ने। बबा कए गोली लाबि दइ छिऐ।'

...

रिनियां कनहा पकड़ि कए डोलेलकै- 'बबा!'

कुइछ नै। कतौ कुइछ नै।

'माय, दौड़ गे। देखही ने बबा कए की भेलै गे! बबा हौ! हौ बबा! बबा हौ बबा!'

...

'हंसा उड़ि गेलै।'

फेर पाइक अभावमे लकड़ी नै आ लकड़ीक अभावमे गुलोकेँ गाड़ि देल जेतै।

"... भूमकम होइ छै हौ!" परमेसर बाजल।

...

भूकम्प फेर एलै।

ऊक दइतिए ता दू गोटे मोटरसाइकिल सए एलै, कन्हैया आ जगदीस।

फेर मृत गुलो अस्पताल जाइए, ओकर पोस्टमार्टम होइ छै, भूकम्पसँ गुलो मरलै से पहिनहियेसँ अस्पतालमे हल्ला रहै, से कागच बनि गेलै।

फेर दोबारा गुलोकेँ असमसान आनल गेलै। ऊक देलकै छोटुआ, दुनू कोदरवाह माटि सए गुलोकेँ तोपि देलकै।

किछु खरहू आ जनीजाति जे मुसलमान रहै से आगि दैत आ दफनो होइत देखि बाजै छै- ई हिन्नू हइ कि मुसलमान.. हिन्नुओ के कोनो धरम हइ!... धरम ले के की होतइ? पैसा होइ हइ त बालोबच्चा गुजर करिहइ।...

नेता/ मंत्री सभक भूकम्पक बाद अनुकम्पा राशि देबाक प्रतियोगिता। कोनो प्राकृतिक आपदा एलापर केना मुइल लोककेँ अनुकम्पा राशि देबालेल आपसमे प्रतियोगिता होइ छै आ से न्यूज मे रहबाक लेल, से लेखक एतऽ देखबऽ चाहै छथि।

वाड कमिशनर पनरह सौ टाका..

एमपी .. पाँच हजार टाका..

मंत्री... दस हजार..

सरकारी आदमी.. चारि लाखक चेक..

आ फेर ओइ पाइ लेल रगड़ा..

जगदीस केँ ओइमे सँ एक लाख चाही। मुदा लेखक घुरै छथि रिनियाँ लग।

"रिनियां उदास अय। बबा मन पड़ै छै।.. दाइ गे! कते साफ अबाज रहै।.. ओकरा भेलै जे हाक दइ- बबा! हौ बबा!.." ❑

रमता जोगी

यात्रा विवरणी, डायरी रूपमे। लेखक लिखै छथि-[०५.०३.२०१९] "मैथिलीमे अखनधरि जे यात्रा साहित्य लिखल गेल अछि, ताहिमे अधिकांश नीरस आ बेजान अछि। अनावश्यक विवरण आ महत्वहीन सूचनाक भण्डार अछि। ओहिमे इतिवृत्तात्मकता बेसी आ आख्यानपरकता कम छैक। डायरी शैलीमे लिखल ऐ वृत्तांतमे इतिहास आ पुरातत्वक बारीक आ ब्यौरेवार अन्वेषण नै अछि। विभिन्न देशक जीवन-शैली आ संस्कृतिकेँ आलोकित करऽवला रोचक मानवीय प्रसंग अछि।"

लेखक आस्ट्रेलियासँ प्रभावी छथि- ‘आस्ट्रेलिया विकसित, समृद्ध, स्वच्छ, शुद्ध आबोहवा आ उन्नत जीवन स्तर बला देश अछि।.. गरीबी, अशिक्षा आ सामाजिक भेदभाव नै रहलाक कारणे ओतौका जीवनमे बहुत शान्ति छैक।’

हमरा मोन पड़ैए जे एकटा हमर संगी कोनो परीक्षा दइले दरभंगा गेल आ यूनिवर्सिटी एरिया घूमि कऽ चलि आयल, कहलक जे दरभंगासँ नीक शहर तँ पूरा बिहारमे कोनो नै छै। ओना तँ लेखक कहै छथि जे हुनकर ऐ यात्रावृत्तान्तमे इतिहास आ पुरातत्वक बारीक आ ब्यौरेवार अन्वेषण नहि अछि, मुदा उपरका अनुच्छेदक आलोकमे हम ऐपर ध्यान दिआबऽ चाहब जे जखन सन् १७७८ मे ब्रिटेन अमेरिकाक कॉलोनीसँ हाथ धो लेलक तँ अपराधी सभकेँ पठेबा लेल वर्जीनिया आब ओकरा लग नै रहलै। से कैप्टन फिलिप तीन जहाजमे पशु, बीआ, भेड़ा, हर आ ६ टा छोट जहाज आ १४०० महिला पुरुष जइमे सँ अदहा अपराधी रहथि, लऽ कऽ २६ जनवरी १७८८ कैँ वर्तमान सिडनीक तटपर पहुँचला, आ आस्ट्रेलियाक चारू कात समुद्र तटसँ मूल आदिवासीकेँ भीतर परती दिस आस्ते-आस्ते धकेल देल गेल। मूल निवासीक वाटरहोल (जलस्रोत) पर कब्जा कऽ लेल गेल, आ आइयो जखन २६ जनवरीकेँ ओतऽ ऑस्ट्रेलिया दिवस मनाओल जाइए, मूल आदिवासी ओइ दिन शोक दिवस मनबैत छथि, आब ओ

रिजर्वेशन (अधूसूचित बोन) मे रहैत छथि। मुदा जेम्स कुक जखन न्यूजीलैण्ड गेला तँ ओतुक्का मूल निवासी माओरी सभक संग नीक व्यवहार केलन्हि।

आब आउ रमता जोगी पर-

[३०.०९.२०१८] अपन पुत्र कुमार सौम्य संगे बिजनेस क्लासमे ओ मेलबॉर्न बिदा भेलाह।

पैघ बेटा संतोष कुमारकेँ पहुँचलापर फोटो पठबैत छथि। बेटा कुमार सौम्य सी.ए. छथिन्ह आ पुतोहु मधुलिका (मधु) सॉफ्टवेयर इंजीनियर, बेटा जातियेमे बियाह केने छन्हि से देखेबा लेल लेखक निम्न वाक्यक प्रयोग करैत छथि- "भाटा-अदौरीक तीमन बनल छैक। अदौरी मधुलिकाक मम्मी जयमाला यादव..."।

सैंक्चुअरी लेकक किछु भारतीयक दोकानक चर्चा अछि आ पतंजलि उत्पादक सेहो। चारि माससँ सौम्य कैंसर पीड़ित मायक मृत्योपरान्त सेवा केलन्हि आ आब पिताकेँ संग अनने छथि। सौम्य कहै छथिन्ह जे संतोलाकेँ ऑस्ट्रेलियामे ऑरेन्ज नै मेंडेरिन कहैत छैक। प्वाइंट कुक मेलबर्नक पछबरिया भाग छिऐक। एतय इंडियन आ अफ्रीकन बेसी रहैत अछि, क्राइम सेहो होइत छैक (तँ होइत छैक- से लेखक नै लिखने छथि।)

स्वस्तिका गोयनका (सी.ए.) आ आनन्द गोयनका (सॉफ्टवेयर इंजीनियर)क चर्चा अछि। हिन्दी फिल्म 'सुईधागा'ऑस्ट्रेलियामे लागल छै। डोसा हटमे सब सुन्दर भारतीय युवती वेट्रेस छै। एकटाक मुस्की लम्बा छलै... लेखक सोचैत छथि- ओ किएक मुस्कायलि?... जे हो, सुखायल जीवनमे एहन तरल आत्मिक अनुभूति किछु क्षणक लेल सुख दऽ जाइत छैक।

भारतसँ सुखद समाचार एलनि, यूनिवर्सिटी पेंशनक बकाया राशिक भुगतान लेल तत्पर भेल। दूर-दूर जाइबला ट्रेनकेँ एतऽ बिलाइन ट्रेन कहल जाइत छैक, ताहूमे दुर्घटना नै घटैत छैक। सिटीमे ट्राम चलैत छैक, कलकत्ते टामे ट्राम नै छै, मुदा एतुक्का ट्राम नीक छै।

केदार काननक भातिज राहुल वत्ससँ गप भेलनि। ओ आ हुनकर पत्नी अश्विनी, दुनू इंजीनियर छथि आ मेलबर्नमे नोकरी करैत छथि, बेटी अयस्का। किशनपुरक अहमद नोमानीसँ सेहो गप भेलनि।

दू टा हब्सी आ महिलाक चिचियायब सुनलन्हि। निग्रो आ हब्सी अपमानजनक

शब्द छिऐ जेना मधुबनीक सिमराक गिदरमाड़ा, ओकरा बंजारा कहियौ, जेना पाकिस्तानमे पश्तूनकेँ अपमानित करैलेल पठान कहै छै, मुदा भारत मे लोक पठान टाइटल सेहो राखैए। आगाँ जा कऽ लेखक मुदा हब्शी शब्दक कहलासँ अपनाकेँ दूर करै छथि।

ससुर पुतोहुक (सासु-पुतोहु नै) केर सम्बन्ध फरिछायल अछि। "कतेक गार्जन धियापूता लग गेल तऽ ओहि देशक मुद्रा पहिनहि कीनि लेलक। अहूँ जँ ओहिना करितहुँ तऽ हमरा बड्ड खराब लगैत। मधु थोड़े आउट स्पोकेन छथि।"

मेलबर्नक रॉकबैंडक दुर्गापूजा। -ऐठाम हिंसाक कोनो स्थान नै छैक। चारि साल पहिने केदार कानन, सुस्मिता, टुस्सी आ रमण कुमार सिंह संगे तारानन्द वियोगी लग महिषी महाअष्टमी मे गेल रहथि, माँ ताराक दर्शन, बलि प्रदान, फेर कारूथान , लोक दूध चढ़बैत अछि। वियोगी कहैत छथि- ताराथानमे रक्त बहैत छैक आ कारूथानमे दूध बहैत छैक!

कार ड्राइवर बेसी महिले।

"ऑफिसक शराब पार्टी, मधु हैंगओवरमे छलीह।"

सौम्य ऑस्ट्रेलियामे बसय चाहैत छथि तीन साल भेल छन्हि, चारि साल पूरा हेतन्हि तँ नागरिकता लेल अप्लाइ करताह।

एक्केटा चद्दरिमे एक दोसरसँ सटल दू टा स्त्री सड़कपर चलल जाइत छलि। बहुत सम्भव जे लेस्बियन हो।"

शशि कपूर अपन विदेशक अनुभवमे कहने छलाह जे हुनकर दोस्त सभ एक दोसरासँ छूबि कऽ हँसी मजाक करैत छला तँ ओतुक्का लोककेँ होइ छलै जे ओ सभ गे छथि। से लेखक ठीके भजियेने हेताह।

सौम्य ओतऽ बसऽ चाहैत छथि मुदा मधुकेँ डर होइत छन्हि।

लेखकक प्रोफेसर महेन्द्र झा सँ गप भेलनि, जून-जुलाइक पेंशन आयल छन्हि। ओ चाहै छथि आ केदार, कामता, विनय कुमार झा, वैद्यनाथ झा चाहै छथि जे ओ ओतऽ खूब साहित्य लिखथि। मडर उपन्यासक पहिल अंश अंतिकामे मार्च २०१६ मे आयल, फेर नै आयल। २४.१०.२०१८ केँ एकटा नव उपन्यास लिखब प्रारम्भ केने छथि। नाम फुरायल नै छन्हि। सच्चिदानन्द सच्चूकेँ 'मडर' के अंश बहुत नीक लागल छलनि। मैसेज पठौने छलखिन्ह।

लेखकक पुनर्वास (सुपौल) वला खेतक धान कटि जेतन्हि, बटाइ देने छथिन्ह। भरेबाक छन्हि, जँ बटेदार फेर किछु बाउग कऽ देलकन्हि तँ फेर कए मास लटकि जेतन्हि। दू गोटेसँ गप भऽ रहल छन्हि, पाइ टानि कऽ ठकि लेतन्हि तकरो चिन्ता छन्हि।

मधु तीन गिलास ह्वाइट वाइन (देसी शराब)क ऑर्डर दैत छथिन्ह, स्वादा ताड़ी जकाँ छैक।

सौम्य एकटा जापानी व्यंजन सुसी (बसिया भात आ मुर्गाक बनल) ऑर्डर करैत छथि।

समुद्री माँछ बारामुंडी, मुदा पोखरि, चांप आ धारक माछ सन स्वाद नै। रमण कुमार सिंहकैँ 'फेरसँ हरियर' काव्य संग्रहपर कोनो पुरस्कार भेटल छन्हि (पुरस्कारक नाम नै लिखल छै), ओ गुलो केर हिन्दी अनुवाद कऽ रहल छथि (२८.१०.२०१८)।

२९.१०.२०१८- चारि पेज लिखलन्हि एतबो रोज लिखि लेताह तँ एक मासमे उपन्यास तैयार (जापानी उपन्यासकार हारुकी मुराकामी प्रतिदिन बिनु नागा केने १० जापानी पन्ना लिखैत छथि- मोटामोटी १६०० शब्द)।

नगर परिषदकैँ ऐठाम विनढम कहैत छै। अफ्रीकी अभिवादन- मुट्ठीपर मुट्ठी टकरेलक। माइकी कार्डसँ अहाँ मेट्रो, बस आ ट्राममे सफर कऽ सकैत छी। एकटा स्टेशनक अजीब नाम- एयरक्राफ्ट।

डिब्बामे एकटा मांगैबाली चढ़ल, सौम्यकैँ भेलनि जे ओ ड्रग्स केर खातिर मंगैत होयत। फेर नीचाँमे ओकरा देखलनि, सिगरेट मुँहमे दबेने अबैत, छातीकैँ मललक जेना लाइटर ताकि रहल हो.. भरिसक कामुक इशारा..।

लेखककैँ हेमोग्लोबिनक स्तर सामान्य राखक लेल मासमे एक बेर एनफो इंजेक्शन लेबऽ पड़ैत छनि।

आइ नोत अछि। विकास, प्रियंका, अभिषेक, निधि आ अश्विनी..। विकास आ अश्विनीक नोकरीपर खतरा छैक। टाटासँ निधिक मायक फोन आयल छैक।

नौआक दोकान... एकटा महिला दोकानक हिसाब-किताबमे लागल अछि। तकलक.. बुझेलै जे हम पहिनहिसँ देखि रहल छिऐ। ... ओ हमरा दिस तकलक। हम ओकरा दिस तकलिऐ। हमरा डर भेल। ओकरा की भेलै?

अफ्रीकनकैँ जँ हब्शी या ब्लैक कहबै तऽ ओ नाराज भऽ जायत। सब अफ्रीकन कारी आ लंबा होइत अछि। बहुत कम्मे एहन होइत अछि जकर गढ़नि नीक

होइत अछि। ई संयोगे छिऐ जे रेस्त्राँमे महजूद अफ्रीकी युवती सुन्दर छलि।

सौम्यक मित्र जसवंत सिंह, बियाह ईसाइ एंजेलीनासँ। धर्म परिवर्तन केर कोनो चक्कर नै, यज्ञो हेतै आ चर्चमे प्रार्थना सेहो।

सौम्य आ मधु स्नोरकेलिंग..स्कूबा... दुनूमे भाग लै छथि। रीफक दर्शन, बोटक पेनीमे शीसा लागल छै।

जेस टिया आ बेकी बॉलडॉक.. एक दोसरसँ गला मिलैत छी। आरम्भ जेस टिया करैत अछि। बेकी के आलिंगनमे एकटा चुम्बकीय तरंग छैक।

फ्रॉग्स रेस्त्राँमे घड़ियाल के माउस खा सकैत छी। कंगारू के खाल कीनि सकैत छी। आस्ट्रेलियाई आदिवासीकेँ प्राचीन डिजेरिडू वाद्य बजबैत सुनि सकैत छी।

एतऽ अपनेसँ पेट्रोल भरय पड़ैत छैक।

आइ पहिल दिन पोर्क (सुग्गरक माउस) खा रहल छी।

पैंग्विन पैरेड...

भोरे केदार के मैसेज देखलहुँ। डी एम साहेब गप्प करऽ चाहैत छह।... हुनका खाली जिज्ञासा रहनि जे मेलबर्नमे कोना छी। हमहूँ निश्चिन्त भेलहुँ।

देखलिऐ दूटा लड़की एक दोसरकेँ कसिकऽ पकड़ने चुम्मा-चाटी लऽ रहल अछि। बुझाइ-ए लेस्बियन अछि। आस्ट्रेलियामे समलैंगिकता वैध छै। गे गे संगे आ लेस्बियन लेस्बियन संगे विवाहो कऽ सकैत अछि।

अंकुर आयल छथि। ओ मधु संगे पढ़ै छलाह।

दूटा जनानी डिब्बामे चढ़लि। मधु बतेलथि ई सभ रेभलर्स अछि। निशां वला सुइया लऽ कऽ मस्ती करैत रहैत अछि।

दू बीत के गोलमटोल झबरा कोआला एगो ठाढ़िपर गबदी मारने बैसल अछि... आलसी जीव।

कंगारू.. सहमिलू

एमू चिड़ै.. उज्जर पेलिकन..लायर बर्ड.. तस्मानिया डेविल्स (लुप्तप्राय)।

ऑस्ट्रेलियासँ कुआलालम्पुर फेर होची मिन्ह सिटी। एक करोड़ जनसंख्या बला शहरमे ७० लाख दुपहिया।

दक्षिण वियतनाम, मैकोंग नदी। पहिल बेर धानक कटनी मशीनसँ देखलिऐ।

वियतनाममे साँपो, कुकुड़ो खाइत छैक। कुत्ता के माउंस पुंसत्व बढ़बैत छै से ओतऽ विश्वास छै।

वियतनाममे महाप्रकाश बड्ड मोन पड़ि रहल अछि..

सिटी टूर, चीनी पगोडा, जकरा बाल बच्चा नै होइ छै से चिड़ै कीनि कऽ उड़ा दैत छै। मधु एकटा चिड़ै कीनि कऽ उड़ा दैत छथि।

होची मिन्ह सिटीसँ हनोइ, उत्तरी वियतनाम। ओतुक्का नदी रेड रीवर।

मधु के सखी रुचि आ पति गौरव ओतऽ भेटलन्हि।

यात्रा वृत्तान्तबला नोटबुक हेरा जाइ छन्हि फेर भेट जाइ छन्हि।

रुचि ब्राह्मण छथि आइ.ए.एस. ऑफिसरक बेटी, गौरव राजपूत। प्रेम विवाह केने छथि। रुचिक पिता ऐ विवाहक घोर विरोध केलनि।

कठपुतली, कखनो सोंसि तऽ कखनो बोच बनैत अछि।

रुचि संगे विदाइ के आलिंगन होइत अछि।

कम्बोडिया अंगकोर वात हिन्दू आ बौद्ध धर्मक सम्मिश्रण अछि। भाइ योगेन्द्र पाठक वियोगी अंगकोर वातक बहुत सूक्ष्म आ विस्तृत अन्वेषण कयने छथि।

पब स्ट्रीट के चौराहा.. पैंतीस सालक आदमी.. वांट गर्ल सर? थर्टी डालर फॉर वन आवर। सिक्सटी डालर फॉर वन नाइट।.. नो आइ डोंट वांट।स्पेनिश महिला.. उनोस, दोस, त्रेस... (एक दू तीन)

पुछलिऐ- दोंदे भिभा उस्तेद (अहाँ कतय रहैत छी?)

कहलक- एसपान्या (स्पेन)।

..रातिमे तरल बेंग चिखैत छी।

बैंकाक, सुवर्णभूमि एयरपोर्ट.. बीचमे समुद्र मंथन के बिम्ब ठाढ़ करैत मूर्ति.. हिन्दीओमे चेतावनी लिखल छै.. कोई टिप्स नहीं। बैंकाकक लम्बा वात अरुण मन्दिर।

पटाया.. कृशकाय जर्जर बुद्ध.. बुद्धक एहेन मूर्ति नै देखने छलिऐक। रातिमे एक बजे मुम्बई पहुँचब। सम्राट रिसीव करताह। [०४.०१.२०१९]

परिशिष्ट- अंडमान डायरी

सितम्बर २०१२- माझिल बालक संजय सपत्नीक पोर्ट ब्लेयर जा रहल छथि, बजेलथि। हम सहरसासँ ओ मुम्बईसँ, पोर्टब्लेयर एयरपोर्टपर भेंट होयत।

टैस्की लऽ कऽ अन्नादुर्रै ठाढ़ अछि, ओ चेन्नैमे घर बना रहल अछि, ओकरा होइ छै अंडमान कहियो समुद्रमे डूबि जेतै। ओकर राँचीक ड्राइवर बादमे अबै छै उदय। पोर्टब्लेयरमे राँची नाम्ना एकटा मोहल्ले छै। अंडमानमे सभसँ बेशी बंगाली अछि फेर तमिल।

नॉर्थ बे, बिसटकही नोट पर जे फोटो छपैत छैक से अही टापूक पहाड़ आ जंगल के। एतऽ स्नोरकेलिंग, स्कूबा डाइविंग, स्पीड बोट सभ छै। कोरल रीफ छै। ग्लासबोट (पेनीमे ग्लास) बैसल-बैसल सागरक जीवन देखि सकै छी।

जॉली ब्वायमे प्लास्टिक प्रतिबन्धित छै।

बरटंग जारवा अदिवासी। मित्र लल्लन (विनय कुमार झा, आइ.ए.एस.) बहुत जोर देने रहथि, जारवाकेँ जरूर देखिहेँ।

हैवलॉक आइलैंड। ❑

मडर

साहित्यप्रेमी सम्राट आ नेहा लेल सपर्पित ई पोथी पुरुष-स्त्री सम्बन्ध आ पुरुष प्रतिनायक मदनक संदेह केना ओकरा हत्यारा बना दै छै, तइपर आधारित अछि। फेर अपराधी बैकग्राउण्डक सम्बन्धी ओकरा शरण दै छै, से मदनक दुरुपयोग कएल जेतै ओइ सम्भावना आ मदनक मानसिक उद्वेलनक संगे उपन्यास खतम होइत अछि।

मदनक पत्नी राधा सिलाइ-फड़ाइ कऽ कय घर चला रहलि अछि। ओकर बड़की बेटी शनिचरी शनि दिन जनमल रहै। मुदा ओकर कत्तौ पता नै, गम्हरियाबालीक ब्लाउज सिया गेल छै, से दऽ अबितै तँ बीस टाका भेटितिऐ आ चाउर-अल्हू बेसाहि कऽ लऽ अनैत। अपने जायत तँ मदन जँ देखि लेलकै तँ ओदबाद कऽ देतै, ओ राधाकेँ कत्तौ जाय नै दै छै। ओकर माथामे संदेहक कीड़ा घुरघुराइत रहै छै।

मुदा पहिने एना नै रहै, मदन तकतान करैत रहै जे राधाक तेल-साबुन सठलै कि छै। ओकर बाप कामेसर आजाद अपन जमानाक इण्टर पास। बाप-पित्ती जरे रहै, पचास-साठि बिगहाक जोतदार। मुदा मुदा कामेसरक पित्तीक मृत्युक बाद भिन-भिनाउज आ कामेसरक हिस्सामे पाँच बीघा जमीन पड़लै, दू-बेटा, दू बेटी आ अपने दू परानी। सामाजिक काज रोगीक इलाजमे कामेसरकेँ बड मोन लागै। दुनू बेटा जेना-तेना बी.ए. केलक। मदन बम्बइ भागि गेल, ओतऽ राधा मोन पड़ै। ओतऽ बड्ड खटनी से घुरि आयल, राधा नैहर चलि गेल रहै। ओ सासुर गेल, राधा सिनेमा देखऽ गेल रहै, ओकर जेठका साढ़ू संगे आ अत्तैसँ संदेह शुरू भेलै।

राधाकेँ विदागरी करा कऽ कामेसर आनलक। शनिचरी भेलै, करमू भेलै। मुदा मदनक संदेह कम नै भेलै, पहरा आ मारि-पीट शुरू।

मदन आ किशोर दुनू भाय भिन्न भाय गेल। कलममे आड़ापर एकटा शीसोक गाछ सूखि गेलै, ओकर दाम-छाप केलक मुदा किशोर अड़ंगा लगा देलक, गहिकी भड़कि गेलै।फेर बिकेलै।

मदन आ कमलामे मारि बझलै, मदन ओकर कान काटि पड़ा गेल। कमला केस काय देलकै, कामेसर २-३ सय टाका दय पुलिसकेँ शान्त केलक। पीसा मदनकेँ टेम्पो जोगार काय देलकै, पिपरासँ सिपौल आ सिपौलसँ पिपरा चलबऽ लागल।

कामेसर राधाकेँ विदागरी करा कऽ आनि देलक मुदा माय ओकरा लेसि देलकै- “ओकरा सैंत, नै तँ नाक कटा देतौ।“ फेर मारि-पीट आ राधा नैहर तिनटोलिया चलि जाइए। राधा के पएर भारी रहै।

मैट्रिक पास केला पर राधा इंटर मे नाम लिखेने रहय। तकर परीक्षा के फारम भराइ छै। ओकर सखी सासुर सए अही खातिर आयल छै। कौलेज राघोपुर मे छै। राधा फारम भरइ-ए..

एकटा एहनो समय रहइ जे ... मदन ओकरा निर्वस्त्र काए दइ। .. अइ सए बढ़ि कए और कोनो आनन्द जीवन मे नइँ छै। लेकिन आब नइँ। आब तकलीफ होइ छै। राधा कए होइत रहै कतहु भागि-पड़ा जाय। ककरो संगे उढ़रि जाय। अशोक.. ओकर आँखि मे अपना लेल सिनेह देख इ-ए।... राधा कए शनिचरी मोन पड़ै छै। करमू मोन पड़ै छै। कोर के दुधपीवा बच्चा कय की हेतै?

राधा कए कैक टा लड़का मोन पड़ैत छै जे ओकरा चाहैत रहइ।.. बेर तोड़इ, जिलेबी तोड़इ, आम दइ जामुन दइ।.. ने कहियो देह मे सटइ।... करजइन वला अपन बहनोइयो...। मिठबोलिया छै। एक बेर जाड़ मे नेपाल सए बड़ सुन्नर कनटोपी आनने रहइ।

इंटर के रिजल्ट निकललै। राधा कए इंटरो मे फस्ट डिविजन भेलै (माने मैट्रिकोमे फस्ट डिवीजन भेल रहै)। राधा के ससुरारि पथरेमे महावीर के घर सए थोड़े हटि कए छै। पथरा के दू टा लड़की इंटर के परीक्षा देने रहइ। मगर ककरो फस्ट डिवीजन नै भेलइ। महावीर के फस्ट डिवीजन भेलै, पथरा पंचायत के प्राइमरी इसकूलमे मास्टरी लए दरखास देत। मुखिया कहलकै हाकिमके कने पैसा-तैसा दिअ पड़तै, जँ ४-५ हजार लगतै तँ पनरह सौ मानदेय भेटतै, ३-४ महीनामे टका ऊपर भाए जेतै। ओ तिनटोलिया अपन बहीन के विदाइ करबय आयल-ए। महावीर ओकरा कहलकइ जँ दरखास देत तए राधा कए पथरा इसकूल मे मास्टरी भेट जेतइ। ससुरो समाद पठेने रहइ। राधा कए अपनो मोन रहइ।

इंटर के परीक्षा खतम होइते राधा कए एगो बेटी भेल रहइ।

राधा नौकरी धाए लेलक। आब मदन गारि-मारि बिसरि गेल रहय। महावीर कए ओही इसकूल मे नौकरी भेट गेलै। रेखा सेहो ओतहि आबि गेलै, ऊ राधाक बहिना रहय, ओकरो ससुरारि पथरे रहइ।

मुदा मानदेयक खोज पुछारीक बहन्ने मदन राधाक पहरेदारी करय। ..एगो रघुनाथ सहनी रहइ। ऊ सब कए कहने घुरइ- गोढ़नीक कोनो बिसबास नै!.. रघुनाथ

निछच्छ बताह रहइ। मदन बताह नै छै। ...नोकरी छोड़बा देलकै। राधा घर बैठ गेल। मदन ममहर गेल मदति लेल मुदा पान सय टाका भेटलै। मास्टरक मानदेय बढ़ि कऽ चारि हजार भऽ गेलै। राधा बेसी पछताय लागल। फेरसँ नोकरी भऽ जाइ, महावीर कहलकै हेडमास्टर आ मुखिया सऽ भेँट करइ लेल, हेडमास्टर कहलकै मुखिया सऽ भेँट करइ लेल। कामेसर मुखिया लग गेल, मुदा मुखिया साफ नकारि गेलै कारण बहुत दिन भाए गेलै।

मदन महावीर सऽ राधाक भेँटपर शंकालु होइ छै। कामेसर चरचित लैत रहै छै। की घटलइ, कोन दुख तकलीफ छै। ससुर संगे ओ किए खुसुर-फुसुर करैए, मदन पुछै छै। राधाकेँ दुख होइ छै।

मदन बहीन लग गेल। बहनोइ राजकुमार इंटर कौलेज मे पढ़बइ छै। दरमाहा नै भेटै छै। लेकिन टीसन खूब चलै छै। बहनोइ पुछलकै- कनियाँ कए नौकरी किए छोड़ाय देलिऐ?.. अहाँ बलौ संदेह करइ छिऐ।

मदन चैल देलक। घर पहुँचल.. राधा.. मटिया तेल ढारि कए देह मे आगि लगाय लेने रहइ। कामेसर जे राधा के सेवा केलकइ.. दुनू मे जरूर कोनो लटपट छै।

मदन बहीन लग जाइत रहय तए राधा भनभनाइत रहय- ससुरो-भैंसुर कए नै छोड़लक।.. आगि लगा लेब...

.. कामेसर छौंड़ा कए लाए जाइ छै। .. राधा लेल टॉनिक कीनै छै। ओकर बाप ओइ दुनू लए एतेक चिन्ता.. मदन सोचैत रहइ-ए। ओकर संदेह पक्का भेल जाइ छै।

राधा कहइ छै- पिपराही वाली दीदी सए चाउर लाए ने आबौ।

दीदी पाँच किलो चाउर देलकै.. मदन कए रीस उठलै। अपन चाउर राख..

खाली ई मौगी केलक। बुढ़बा भतार लग सूतइ खातिर बैलाय देलक।.. बापक हाथमे दबिया देखि शनिचरी कए डर भेलै- माय कए नै मारहक हौ पप्पा।.. राधाक गरदनि कटि गेलै।

मदन निकलि गेल। रामपुरमे मदन के मामक ससुरारि छै। ममा के मझिला सार तए अपराधी सभक सरदार छिऐ। ऊ ममाक जेठका सार लग गेल जेठका के कनियाँ डरि गेलै। मझिला ओत्तहि रहइ। बाजलै- एकरा हम राखबै। पड़ल-पड़ल कखनू आँखि लागि गेलइ। राधा फेर आयल छै। उज्जर नूआँ पहिरने। गला मे खूँट लपेटने।

निन्न टूटि गेलइ। राधा कतौ नइँ छै। लेकिन ओकरा बुझाइ छइ राधा सामने ठाढ़ छै। ❑

भोट

भोटमे लेखक- प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) कैं भातिज (ओ प्रोटैगोनिस्टक भातिज छथिन्ह तकर खुलासा बादमे होइए) यदुवंश्, जे बहुत पहिने एमेले एक बेर भेल रहय (एकरो चर्चा बादमे छै) कैं लोक विधायकजी कहै छै, केर फोन अबैत छन्हि। प्रोटैगोनिस्ट सुभाष जी क नीक लोकमे गिनती छन्हि से ओ हिनकासँ सहायता मांगैत छन्हि। करिहो पहुँचै छथि। राजद नेता राजिनदर कहै छन्हि जे सबहक ऐठाम एक-एक कप चाह पीबि लेता तहीमे बेड़ा पार।

एमेले चुनावमे राजद, जदयू आ कांगरेस पाटी के गठबंधन छै। यदुवंश कुमार यादव पिपरा विधान सभासँ उम्मेदवार छिऐ, ई राजद के हिस्सामे पड़ल छै। करिहो पहिने सुपौलमे पढ़ैत रहइ। अइ बेर काइट कए पिपरा विधान सभामे दाए देलकइए, विजेनदर यादव एतऽ सऽ जितैत रहइ, तैं एतौका बेसी भोटर जदयू के छै। राजिनदर यादव एतऽ सऽ मुखिया के एलेक्शन लड़ल रहय। जीत नै सकल, मुदा योग्य आदमी छै, गएर सरकारी कौलेजमे नाम छै, मासमे दू-चारि दिन कौलेज जाइए आ हाजरी बना कऽ चैल आबइए। जहिया कहियो अनुदान आबै छै तए थोड़े आमदनी भाए जाइ छै। लाट बना कऽ सभ घूमैए। प्रोटैगोनिस्ट सेहो सङमे घूमै छथि। हरदी के परोग्राम बनत तऽ प्रोटैगोनिस्ट कामता (जदयू) संगे निकलि जेता, मुदा ने दीना पाठक (जदयू)कैं किछु पता छै ने एकटा आन कांगरेसीये कैं। प्रोटैगोनिस्ट कामताकैं कहै छथि जे ऐ तरहैं सोचलासँ राजद, जदयू आ कांगरेसक गठबन्धन कमजोर भऽ जेतै। कामता हरदी जाइले तैयार भऽ जाइए। फेर हरदासँ करिहो। एलेक्शनक परचारक प्रोटैगोनिस्टक ई पहिल अनुभव छन्हि। यदुवंश कहै छन्हि जे पैसा नइ अय। प्रोटैगोनिस्टकैं ई चिन्तित करै छन्हि। बिनु पाइक चुनाव केना लड़त? प्रोटैगोनिस्ट कतेक चन्दा दऽ सकतिन्ह ५-१० हजार, ओइसँ तँ नीक जे परचारमे ओत्तेक खर्च कऽ देथि, चाह-पानमे की कोनो कम खर्च होइ छै! सोचै छथि जे करिहोक खर्चाक भार उठा लेथि, मुदा फेर होइ छन्हि जे नै जानि कत्ते खर्च हेतइ। प्रोटैगोनिस्ट आ कामता सुपौलमे पढ़ैत रहथि आ यदुवंश रफीगंजमे, तकर एकटा खिस्सा प्रोटैगोनिस्ट सुनबै छथि, कामताक साइकिलसँ

प्रोटैगोनिस्ट आ यदुवंश एकडारा गेलथि ओत्तऽ साइकिल चोरि भऽ गेलै, कामता यदुवंशकेँ मोन पाड़ैत अछि, यदुवंश आब ओकरे क्षेत्रक एमेले बनतै, एक दोसर के बेगरता पड़तै। मुदा पाटी लाए कए दूरी छै, शीर्ष नेता सभ समझौता कऽ लेलकै मुदा एतेक दिनक कटुता तुरन्ते भाफ जकाँ केना उड़ि जेतै? बिन्दुलाल दास मखौलिया अय। खिस्सा सुनबै छै, चाह दोकानबलाक नाम बीडियो छै, घूस जे लेलकै, से ससपेन भाए गेलै। तहिया सए चाह बेचइ छै। सभ भभारो हँसलै, बीडियो मिडिलो पास नइ-ए। बीडियोसँ प्रोटैगोनिस्ट पूछै छथि, ओ ककरा भोट देत, मुदा ओ टेढ़ जबाब दइ छन्हि- ककरा देबै आ ककरा नै देबै, से तोरा कहि कए! बीजेपी के कंडीडेट विश्वमोहन छिऐ, एक बेर एमपी भएल रहइ, दोसर बेरा हारि गेलै, एतुक्क एमेले ओकर कनियाँ सुजाता छिऐ। विश्वमोहन कीयट छिऐ। एक बेर दिलेसर कामत जीतल रहै, ओहो कीयटे रहइ। ओना सोशलिस्ट पाटी के नेता विनायक यादवक जमाइ दीनबन्धु यादव सेहो एक बेर जीतल छै। पिपरामे कीयट के जनसंख्या बेशी छै। दोसर नम्बरपर धानुक आ तेसर नम्बरपर जादव छै। धानुक जातिके अपन कोनो कंडीडेट नै छै, से ओकर भोट बँटतै, चौधरी भेलै बनियाँ आ बीजेपी भेलै बनियां पाटी, ऊ बीजेपी छोड़ि कतय जेतै? हँ पाइ पर कियो ढूइल जाइ तँ.. समाजवादी पाटी के कंडीडेट सत्यनारायण गुप्ता, ऊ तेली छिऐ, तेली के बेसी भोट ओकरे जेतै। वामपंथी के उमेदवार नागेसर यादवक कोनो चरचा नै छै। मुसलमान बीजेपी सए भड़कै छै, ऊ सब छेहा गठबंधन के भोटर छिऐ। तहिना बाभन गठबंधन सए भड़कै छै। सुखदेव बीजेपी मे छै, ओना ओकर उमेदवार सए जनता नराज छै। शिवजीक चाहक दोकान छै, नै नीक चाह बनबै छै, निशांमे रहै छै, परधानमंतरी तक के गारि दै छै, प्रोटैगोनिस्टकेँ कहै छन्हि खरचा करै ले- तोरे कोन कमी छह! ओकर बेटी लछमी जीन्स आ टॉप पिन्हइ छै। लिट्टी चाह बनबइ आ गैंहकी सम्हारइमे ओस्ताज भाए गेल छै। प्रोटैगोनिस्टकेँ शिवजी लछमीसँ पढ़ाइक टेस्ट करबैत अछि, प्रोटैगोनिस्ट पूछै छथिन्ह पुष्प माने की? उत्तर- फूल। शिवजी, बेटी पढ़ैमे तेज छौ! प्रोटैगोनिस्ट कंडीडेट संगे अपन सम्बन्ध सभकेँ बता देनहि छथि, ता बात पसरइ छै, दस दिनुका बाद फेर एता। घरनी कहै छथिन्ह- घुचघुच जाय कए की हेतै। अहाँ के कहने लोग भोट दाए देतै? दाइ सकइए। सौ-पचास भोट के फरक पड़तै। तए फैदा हेतै यदुवंश कए। अहाँ कए यदुवंश की देत?.. अपन काम करतै तए दू गो पैसो हेतै। परचार केने सए पेट भरतै? सब कुइछ पैसे नै ने छिऐ। नै छिऐ तए जाउ। ओनही बैठल रहब।.. आइ हम नै काम देबै तए काइल्ह ऊ हमरा काम देतै? जे मन होइ-ए सएह

करू- घरनी आजिज भेल कहइए।

यदुवंश नामांकन दाखिल केलक। प्रभास प्रभारी छिऐ। चुनाव लगिचा गेलै, प्रोटैगोनिस्ट करिहो पहुँचै छथि। कामता मंत्रीजी के परचार करय गेल अय, ओ ओकर पाटी जदयू के उमेदवार छिऐ, क्षेत्र बदैल गेलै, लेकिन पाटी तए नै बदललै। बिन्दू मास्टरी करइए। पराइविट। .. पचास टके मेहीना। .. कोय दइ छइ, कोय नइ दइ छइ। .. जैह भेटल, सैह लाए लेलक। चाउरे देबें, दूधे देबें, जरने देबें..। एक बेर ऊ पंचायत समिति के सदस्य भेल। मुखिया कए कहि कए पब्लिक के कोनो-कोनो काम.. इनरा आवास तए ककरो बिरधा पिलसिन। काम भए गेला पर.. कोय दस, कोय बीस।.. लेकिन अगिला चुनाव जातीय गोलबन्दी के ओजह सए हाइर गेल।

मन्नू.. मालजाल के पैकारी करइ-ए। खाली खरचा-पाइन के इंतजाम केने जाहक.. मन्नू हमरा मुल्हा तए ने बूझ्झ रहल अय। मन्नू भाय, पहिने चुनाव कते चिक्कन आ शान्त होइत रहइ।.. आब स्वार्थ के उठा पटक छै।

आइ सभक टारगेट मुसहरी आ डोमराही रहै। करिहोमे मुसहर के दूटा घनगर टोल छै।.. सटले डोमराहियो छै।.. सब भोटर के दुआर पर जाउ।.. हमरो भेलू देलक। हमरो पुछलक। करिहो के दुनू टोल आ बगहीओ के मुसहरी धांगलिऐ।.. साँझ पैड़ गेलै।.. चंदेसरी चाह-पान के पैसा तए हमरा सए लेबे केलक; मुसहरी के एगो नेता खातिर सौ टका और लेलक।.. नीतीश कुमार भोटर के नाम जे अपील केने छै से, सात निश्चय बला घोषणा-पत्र, बैलेट पेपर के नमूना आ कलेंडर लाए कए निकलै छी।.. भाइजी गड्डी के गड्डी आनने छह।.. हम अपन आटा गील काए रहल छी।.. महिला कए ठीक सए बुझाबहक। कहिहक नीतीश आ लालू मिल गेलै। दुनू एक भाए गेलै। अइ बेर एतय तीर के निशान नै रहतै। लालटेम रहतै।.. अइ बेर लालटेमो मे देबहक तए नीतीशे जिततै। पुछलक- नीतीश मुखमंतरी बनतै ने? महिला खातिर बहुत कुइछ केलकइए। जनीजाति नीतीश के कट्टर समर्थक छै।

सफीना आयल हइ!- जमील सुनबइए। सफीना केहन-केहन के आँड़ गलाय दइ छै। फेर सफीनाक एकटा खिस्सा।.. मुखियोमे ठाढ़ भेल। लोक चिन्हलकै। चंदेसरी सफीना के भक्त रहय, संगे घूमइमे चंदेसरी कए खूब मन लागइ। ओकरा भोट के देतै! चंदेसरी सोचइए.. कहिया काम पर भोट देतै? सफीना बेसी पढ़ल लिखल नै छै, फोकानियां पास छै,..।

विश्वमोहन के घर कटैये छै। ओतय पान सय टका भेटै छै। संजय आ

जयप्रकाश दुनू बीजेपी के समर्थक छिऐ। अखबारमे रोज समाचार.. गड्डी के नोट आ शराब के बोतल पकड़ल जाइ छै। गगना- दारू आ माँस चलै छै। बीजेपी जितले छै।

सिपौल.. राहुल गाँधी के भाषण रहइ। पूरा गांधी मैदान भरल रहइ.. कहलकइ मोदी चोर छइ.. दंगा करबै छै, हिन्नू-मुसलमान कए लड़बै छै।.. गठबंधने जिततै। समाजवादी पाटी.. सत्यनारायण साह.. कामता खौंझाइए.. भोटकटुआ.. विश्वमोहनो के झाड़लक कामता.. जदयू.. फेर राजद.. कहियो बीजेपी कहियो बंगला छाप.. नीतीश महिला लए बड्ड काज केलकै, सौ मे तैंतीस टा सीट, साइकिल देलकै।

पाठक टोल के छै.. परचा घुराय देलक। लालटेन नै, कमल। हम- लालटेम। ऊ- कमल।कमल।

मोदी की कहलकइ। लालू कए बदनाम करइ वला बात। अपहरण, बलात्कार आ हत्या.. साँझ पड़ैत लोग घर मे बन्न.. लोक मोदी आ लालू के नकल करइ छै।

.. बीजेपी जिततै तए रिजरभेसन खतम काए देतै।.. समीक्षा हेबाक चाही से गप मोहन भागवत बाजलइए।.. मतलब एक्के.. मंडल के विरोध मे कमंडल..।

एमेलसी हारुण रशीद- बाभन के जनसंख्या कते? दूइए-अढ़ाइ परसेंट ने? आ नौकरी मे.. सगरे तए वएह छै!

चंदेसरी.. सफीना बेसी गोर भाए गेल छै.. सब पाटी पैसा लै छै, तब टिकट दै छै। ओकरा लेट भाए गेलै। ताधैर टिकट बिक गेल रहइ।.. चंदेसरी.. सफीना के अंग-अंग निहारय लागल।.. बीजेपी मुसलमान कए भगबय चाहय छै। मुसलमान डरल छै- सफीना कहलकइ।.. जेना हिटलर यहूदी कए कतल केलकै, तहिना मोदियो मियाँ कए काइट देतै।.. अइ देस मे गिद्ध उड़तै।

बीजेपी अनधुन खरचा काए रहलइए।..जमील.. मोदी तए एक नम्मर के झुट्ठा छै! रामधन बात लोकइ छै।

आइ परभास आयल रहइ। बूथ-खरचा के सात हजार टका दाए गेलइ। दूटा बूथ छै।

राम मन्दिर तए बीजेपीए बनेतै।.. चुनलकै से मंदिरे बनबै लए?.. हम मोदिए कए भोट देबै।.. पकिया अंधभक्त..

सूर्यनारायण कौमनिस्ट.. नीतीश गनगुआइर छिऐ.. एगो मुँह भाजपा.. दोसर राजद।

कमल दास बीजेपी समर्थक छिऐ। ..छप्पन इंच के छाती.. पाकिस्तान कतौ भारत मे ठठलइए!... चीन के लगही भाए जेतै.. रामदेव के गप पर सब हँसइए।

भोट खातिर मोदी पाकिस्तान पर हमलो काए सकइए। .. बीजेपी लड़ाइ किए करतइ? हिन्दुए खातिर ने करतै?.. मुसलमान के पाकिस्तान भेजल जाए। लाल पाठक विस्फोट केलकै।.. राष्ट्रवादी लाल तए आइबिए गेल! आब मनुवादिए टा के कमी छै। दीना पाठक.. मोदी पर भ्रष्टाचार के आरोप नै लागल.. मोदी तए महाभ्रष्टाचारी छै। सुधीर चाह दहक- कामता के ई उदारता माहौल कए एकदम बदैल देलकै।

परचार खतम भाए गेलइ।.. शान्त.. सब चीज भुम्हूर जकाँ तरेतर सुनगै छै।

लोग एक घण्टा पहिनइ लाइन मे लागय लागल। बेचना ककही दाए कए महिला भोटर पटियाबैत रहइ, सिपौल बजार मे पोलिंग कम भाए रहलइए। ई समाचार बीजेपी समर्थक कए चिन्तित केलकइ। शहरमे कमल के भोटर बेसी छै।

सफीना भोट गिरबै लए आयल छै। .. काइल्ह एबह- कहि कए चंदेसरी निकैल गेल। सफीना मुस्कुरायल। बिहान भने चंदेसरी नवटोल गेल। सफीना संगे चुनाव के गप होइत रहलै।.. भाजपा कहै छै हम जितबै। गठबंधन कहै छै हम जितबै। आब जे होइ।सफीना दू-तीन दिन मे दिल्ली चैल जायत। चंदेसरी पुछलकै- एबहक कहिया? सफीना बाजलै- भाजपाई रोज नया-नया काण्ड करै छै।.. चंदेसरी- एना हीया हारने जिनगी चलतह? सफीना छगुनैत रहल.. लड़ैत-लड़ैत मैर गेनाइ नीक छै।.. मरनाइए, जिनाइ छिऐ। ❑

घरदेखिया, राजकमल मोनोग्राफ (नित नवल राजकमल), बनैत बिगड़ैत, गुलो, रमता जोगी, मडर आ भोटक पुनर्पाठ

ऊपर देल गेल घरदेखिया, राजकमल मोनोग्राफ (नित नवल राजकमल), बनैत बिगड़ैत, गुलो, रमता जोगी आ भोटक सैपलसँ अहाँकेँ सुभाष चन्द्र यादवक शैली, प्रतीक आ प्रतीक चिन्हक प्रयोग, सदा परिवर्तित होइत वृत्तक केन्द्र, दृश्यात्मक आ ध्वन्यात्मक चित्र ई सभ स्पष्ट भऽ गेल हएत। सलहेसक भगता सन लोकदेवता लेखकक भीतर प्रवेश करैत छन्हि आ ओ टीपऽ लगै छथि, खोंचारि कऽ सभ चीज-बौस्तु बहार आनऽ लगैत छथि, अभिलेखित करऽ लगै छथि।

तँ सुभाष चन्द्र यादवक शैली भेल भगता शैली।

मुदा घरदेखियाक महिमामे (सन् १९७५ मे लिखल) सुखदेव भोटमे कतेक गोटे सँ टाका ठकने रहै। से भोट उपन्यास बनल २०२२ मे, १९७५ सँ २०२२ मे किछु अन्तर तँ एलै कारण प्रोटैगोनिस्ट कहै छथि भोट (२०२२ मे)- मन्नू भाय, पहिने चुनाव कते चिक्कन आ शान्त होइत रहइ।.. आब स्वार्थ के उठा पटक छै। मुदा १९७५ मे सेहो ओ कहै छथि- अछरकटुआ भऽ कऽ सुखदेव केन एत्ते कमा लै छै। भोटमे कतेक गोटे सँ टाका ठकने रहै। घरदेखियेक धुंधमे घटना (सन् १९७१ मे लिखल) 'वेटिङ फॉर गोडो'(सेम्युल बेकेट) क मोन पाड़लक से कोनो पोस्टमॉडर्न उपन्यास बनि सकैए। हुनकर घरदेखियाक तर्जपर जगदीश प्रसाद मण्डल लिखलन्हि अपन तर्जक घरदेखिया। से पाठ एकटा दोसर लेखसँ सम्वाद स्थापित केलक जे उमेरमे तँ हुनके बराबरक छथिन्ह (एक साल पैघे) मुदा लेखन हुनकासँ तीस साल बाद शुरु केलन्हि।

से हुनकर पाठ काल-स्थानमे अपन पाठसँ सम्वाद करैए, तँ दोसर लेखकक पाठसँ सेहो।

सुभाषचन्द्र यादवक घरदेखिया-

लड़का हालेमे कलकत्तासँ गाम आयल छलै एखन तुरते समाद पठाकऽ मङौनाइ खर्चाक घर भऽ जेतै। लगनसँ दस दिन पहिने आबि जेतै, जिनका देखऽ के

हेतै, देखि लेतै।

जगदीश प्रसाद मण्डलक घरदेखियाक ई अंश देखू-

"दुनू जोड़ धोती नागेसर आंगनसँ आनि आगूमे रखि देलकनि। धोती देखि डोमन बजलाह- ''समैध, कतबो गरीब छी तैँ की मुदा इज्जति बचा कऽ रखने छी। बेटीक दुआरपर कोना धोती पहिरब?'' टाटक भुरकी देने लुखिया देखैत रहिथ। डोमनक बात सुनि दोगसँ बाजलीह- 'समैधकेँ कहिअनु जे जखन बेटी आओत तखन ने बेटीक घर हेतिन, ताबे तँ हमर छी कीने। हम दैत छिअनि'। ठहाका दैत डोमन बजलाह- ''जखन हमर बेटी एहि घर आओत तखन ने ओ समधीन हेतीह आकि अखने?''

जेना रिनियाँ अमाठी, करची, पतलो, जहिया भेटि गेलै आनैए, तहिना सुभाष चारू कातसँ तथ्य एकट्ठा करैत छथि आ आख्यान, महाआख्यान सृजित करैत छथि। से गुलोक नायक गुलो नै रिनियाँ अछि, रिनियाँसँ प्रारम्भ, रिनियाँ सँ अन्त। आ से रिनियाँ ई स्थान अपनेसँ बनेलक, लेखक ओकरा लेल एकटा सह-कलाकारक भूमिका निर्धारित केने रहथि, मुदा ओ अपन समर्पणसँ लेखककेँ विवश कऽ देलक नायिका बनाबै लेल। गुलोक बेटी आ गुलोक छोटका बेटाक घरक काजक प्रति दृष्टिकोणक द्वन्द्व। छौड़ी असकरे कखून घर तऽ कखनू गाछी दौड़ैत रहइ छइ। छौड़ा आठ बजे धरि सुतले रहै छै।

मुदा फेर जखन बाँस चोरा कऽ ५०० टाकामे गुलो बेचैए तखन ओइ पाइसँ रिनियाँ पाठी कीनैए। लेखक से नै लिखै छथि जे ई वएह ५०० टका छिऐ, मुदा गुलो जइ आसानी सँ रिनियाँकेँ ओ पाइ दऽ दैत अछि तइसँ रिनियाँक आत्मविश्वास सोझाँ अबैत अछि।

गुलोक बाप गुलो लेल छोड़ि गेलै छोट-पैघ खुरपी, कोदारि, खंती, दबिया, कुड़हरि, भाला, बरछी। घूर-धुँआ, छल प्रपंच, आ गुलोकेँ सरकारी जमीनपर बसऽ पड़लै।

गुलोक मरलाक दुखो सभसँ बेशी रिनियेँकेँ भेलै, से लेखक प्रारम्भ आ अन्त दुनूमे रिनियाँक उपस्थिति रखने छथि।

गुलोक बड़का बेटाक रोजगार लेल पनिजाब पलायन। पूरा बजार राजिनदर डीलरक समदाही इनरा गानही आ ओकर चारिटा बेटा। फेर बजारसँ बाहर आउ, बेला, बीना आ सोनक। आ तखन गुलो केँ दूटा सुपारी दूटा नोत मे आयल छै- एकटा लालो

पण्डित के पोती के बियाह , दोसर सारि के जैधी के बियाह। गुलोक ससुरारि छै बेला आ ओकर पत्नीक नाम छै बेलावाली। पहिने गुलोकेँ गाजा पीऐत-पीऐत दम्मा उखड़ि गेलै। चारू कात माने गाजाक नशाक व्यापार होइत हेतै। भगिनाक बियाहक नोत पुरबाक क्रम, साड़ी, साया, बिलाउज आ दू सय एकावन टाका दिअ पड़तै। ओ सोनक जाइए, छोटुआ आ रिनियां संग छै। गुलोक बड़की बेटी रुनियाँ बीनामे बियाहल छै। रुनियाँ सेहो सोझे बीनासँ आयल छै, बहीन रिनियाँकेँ अपन सासुर लऽ जाय चाहै छै। मुदा ओ मना कऽ देलकै, लोक कहतै जे बाप रोगाह भऽ गेलै, दिन टगि गेलै तैँ पेट पोसै लए आयल छै। ओ बड्ड कानल, गुलो केँ छगुन्ता होइ छै, छौड़ी ई सब बात केना बूझि गेलै। आ अन्तिममे बेटी रिनियांकेँ पता चललै जे गुलोक मन बहुत खराप छै। ओ भोरे आबि गेल।माय रतुका पूजा दिआ पुछलकै। औतौका हाल सुनबइ मे रिनियां कए मन नै लागलै। माए कए कहलक- ‘माय, पैसा दही ने। बबा कए गोली लाबि दइ छिऐ।'

भगिनाक बियाहमे गुलो सोनक जाइए। गुलोक ओतऽ चलती छै ओतऽ ओकर बॉडी लैंगुएज बदलल छै। कनियाँ दब छै मुदा ओ डाँटि-डपटि दैए, बियाह हेतै, नै तऽ गज्जन होइतै।

कोन कोन रोजगार छै से देखाबैले उपन्यासकार पुतोहु कंदाहावालीकेँ मलहदक चाँपमे मखानक कमौनीक नव-रोजगार भेटलइ-ए, ओतऽ लऽ जाइ छथि। छोटुआ काज करैए दशरथ मण्डलक पिलाइ मिलमे। मूंगक बीया बाउग हेतै, हरवला चास, समार आ चौकी दइ के अढ़ाइ सय मांगै छै। फेर गुलोक मृत्युक प्रारम्भ एना करै छथि गुलोकेँ खोंखी होइ छै, दू सय टाकामे दू कट्ठा थोकड़ा ओलइ के बात भेलै।

पारिवारिक सम्बन्ध, वृद्धावस्थाक समस्याक विवरण देखैले सुखबा लग जाउ, ओ अपन माय कए घर सए निकालि देलक, फेर बदनामी भेलापर आपस लऽ गेल। ओ छै इनरा गानहीक पितिया सासु।

स्थानीय संस्कृति देखबैले कालीबन्दीक सेवा, भगैत, फुलहासि। आब तकरा बाद कुशक कलेपो नै लगतै।

गुलो मालिकसँ टौर्च मांगत, ओ नै देतै तऽ एक्को गो आम कि लुच्ची भोग नै हुअय देत। आ एतबी नै आर देखू- बाँस डेढ़ सय सए कम मे नै भेटै छै, गुलो चोरा कए बेचत तैं एक्के सय मे दिअय पड़तै।

आ चोर सेहो छै। चोरबा सौंसे गाछक लुच्ची सिसोहि लेलकै। एकटा ठकुरबा

सेनियल चोर छै। से गुलोक बाँसक चोरि आ ठकुरबाक चोरिमे अन्तर छै। गुलोक मुख्य धंधा छै चाहक दोकान, बाँसक चोरि तँ सालमे एकाध बेर मुदा ठकुरबा सेनियल चोर छै। रिनियां, झुनियां आ बरस्सेरवाली लुच्ची चोरबैए। ‘ऊ बभना हमरा पकड़त? ..' (बरस्सेरवाली) से सभटा गाछी बभना लग छै।

गाछीक मालिक कियो आन छै। आदिवासी इलाकामे ओ सरकारक रहै छै आ फॉरेस्ट एक्टमे आदिवासीकेँ ओतऽ जाड़नि, महुआ, वन्य-उत्पाद बिछबाक अधिकार देल गेल छै। मुदा सिपौलमे गाछी सरकारक नै छिऐ। से एतुक्का सर्वहाराक स्थिति आरो खराप, फॉरेस्ट एक्ट एतऽ लागू नै अछि। से एक बेर रिनियाँ गछपक्कू आम लाए कए गेल रहै तऽ मालिक पचास गो टाका देने रहै। मलिकानि खाइ लए देने रहै।

रुनियाँ के दीयर नेरहू एलै, ओ चुपचाप रिनियां के देखैत रहइ-ए आ मुस्की छोड़इ-ए।

दशरथ मण्डलक साढ़ूक लड़का नेपालमे छै, रिनियां लेल कथा अबै छै। मुदा गुलो चारि मासक टेम मंगैए, अरजुनमा नालायक छै मुदा तैयो ओकरासँ पुछतै। दशरथ मण्डल पाइबला छै, मुदा एक्के बेरमे गुलो हँ नै कहलकै, अरजुनमासँ पुछतै। माने संस्था वर्तमान छै।

से रिनियां तऽ लग छैहे गुलोक, पुतोहु जे झगड़ा कऽ कय गेल रहै सेहो एकदम्मे दूर नै छै, देखू एतऽ- ..कंदाहावाली पहुँच गेलइ। ‘पपा, कल वला मिसतरी कए बजा आनथिन। ठीक काए देतै। जे लागतै से देबै।’

लेखक अहाँकेँदूर आ लग सभ ठाम लऽ जाइ छथि। केन्द्र कखनो गुलो रहैए, कखनो रिनियां आ कखनो कन्दाहावाली।

रमता जोगीमे सुभाष चन्द्र यादव किछु एहेन चीजक अनुभव करै छथि जे बहुत लोक आनो ठाम करैत अछि (भारतकेँ छोड़ि कऽ), जेना जेब्रा क्रॉसिगपर मनुक्खकेँ जाइत देखि गाड़ी सभक रुकि जायब, जेना सिंगापुरमे। यूरोपमे जँ अहाँ जाइ तँ सड़कक तिराहाबला कॉर्नरपर अहाँकेँ देखि दोसर गाड़ी सभ ठाढ़ भऽ जायत, अपन ऐठाम लोक अपन गाड़ी आगाँ बढ़ा लैए, ऐ आशामे जे दोसर पाछाँ आबैबला सदाशयता देखाओत। लेखक सिगरेट बहुत पीबै छथि, से हुनका ईहो बुझना गेलन्हि जे ओतय निअम छै जे पूरा बा अल्प घेराबाबला जगहपर अहाँ सिगरेट नाइ पीबि सकै छी, मुदा सार्वजनिक स्थलपर सिगरेट नै पीब आब भारतोमे स्वीकृत भऽ गेल छै, पहिने

लोक ऑफिसमे सिगरेटक धुँआक छल्ला बनबैत छल आ आब जँ बाथरूमोमे नुकाकेँ पीबऽ चाहैए तँ लोक आँखि गुराड़ि कऽ देखै छै। घरदेखिया कथा संग्रहक प्रोटैगोनिस्ट सेहो खूब सिगरेट पीबैए, से सिगरेट पीबाक हिस्सक लेखकमे पुरान बुझाइत छन्हि, आ तेँ पुतोहु मधुलिका सेहो ऐ लऽ कऽ चिन्तित होइत छथिन्ह। फेर सुपौलसँ फोन अबिते रहैत छन्हि, डी.एम. गप करै छन्हि, खाली केना छथि से पुछै छन्हि तखने जा कऽ निश्चिन्त होइ छथि। माने पुलिस-प्रशासन कुशल क्षेम पुछत से अखनो लोककेँ विश्वास नै होइ छै।

घरदेखियाक 'एक दीनक घर (१९७३)'मे मनोविश्लेषणात्मक पद्धतिक प्रयोग कएल गेल छल, घरदेखियेक **'तीर्थ (१९६९)' मे कथाकार लिखै छथि** बलबाबालीक अंगनाक खिस्सा। कोनो डाक्टर ओकरा बताहि नै कहतैक... मुदा ओ बताहि अछि।

मडर (२०२१) मे ई पद्धति विस्तार पेलक। !.. रघुनाथ निछच्छ बताह रहइ। मदन बताह नै छै। ... आ स्त्री-विमर्श, मदनक कनियाँ राधाक फर्स्ट डिविजनमे पास हएब मुदा चाहियो कऽ अपन शरीरपर अधिकार जतबैत मदनकेँ रोकि नै सकब, घुरब, नोकरी छोड़ब, मुदा ओकर हत्या। आ ओइ हत्याक प्रयासकेँ रोकबा लेल लेखक शनीचरीकेँ आगाँ करैत छथि- "माय कए नै मारहक हौ पप्पा।" लेखक मदनकेँ मुदा बेनीफट ऑफ डाउट नै दै छथि, ओ घोषित कऽ दै छथि जे मदन बताह नै छै। मुदा ओकरा शरण भेट जाइ छै, मामाक ससुरारिमे, ओ सभ दबंग छइ, मझिला सार तए अपराधी सभक सरदार छिऐ। आ ओ शरण दऽ दै छै। ओ किए शरण दै छै, पाठक बूझि जाइए, ओकरासँ अपराध करबेतै तेँ ने। से लेखक माहौल बना कऽ कथाक पाठ आ पुनर्पाठ करबा लेल पाठककेँ छोड़ि दै छथि।

आ डेरीडाक विखण्डनवाद तँ छोड़ू एतऽ खेतक विखण्डन सेहो भेल छै- मदनक बाप कामेसर आजाद अपन जमानाक इण्टर पास। बाप-पित्ती जरे रहै, पचास-साठि बिगहाक जोतदार। मुदा मुदा कामेसरक पित्तीक मृत्युक बाद भिन-भिनाउज आ कामेसरक हिस्सामे पाँच बीघा जमीन पड़लै।

आ से भाषामे सेहो हेतै। जे ठेंठी/ पचपनिया बाजै बला पनिजाबकेँ पंजाब बाजबे करत आ लिखबे करत आ केदार काननक कथित अभिजात्य वर्ग सेहो जखन डेंगू बजै छथि तँ अंग्रेजी बाजैबला ओकरा डेंगी कहि सुधार कऽ दैत छन्हि। लैटिन आ संस्कृत व्याकरण भषाकेँ स्थिर केलक मुदा आधुनिको कालमे संत ज्ञानेश्वरक मराठी ज्ञानेश्वरी पढ़ैले मराठी भाषीकेँ भाष्यक मदति लेबऽ पड़ि रहल छन्हि।

डेरीडाक विखण्डनवाद भाषाक संगे ध्वनि, इतिहास आ संस्कृतिकेँ पाठक अंग

मानैत अछि।

गुलोमे अहाँकेँ लागत जे ने कियो शोषक छै ने कियो शोषित, आ से भाषासँ लागत, गुलो एक्को टा लुच्ची मालिककेँ भोग नै हुअ देतै, बाँसो काटि लेलकै आदि आदि। मुदा तखने अहाँकेँ वातावरण मोन पड़त जे सिपौल तँ फॉरिस्ट एरिया छिऐ नै आ बभना मालिक छिऐ। मुदा पलाइ मिल दशरथ मण्डलक छिऐ, चौक चौराहापर सौंसे व्यापार गएर बाभन कऽ रहल छै। बाबा कहलकै, घरपर मरछाउर छीट देने छह। जंतर देलकै, मुदा ओ कोनो काजक नै। जंतर मे ठका गेलै तमसेबो केलै, अहाँकेँ लागत जे अन्धविश्वास खतम भऽ गेलै मुदा फेर कालीबन्दीक सेवा, भगैत, फुलहासि। आब कुशक कलेपो नै लगतै। से संस्कृतिमे सेहो परिवर्तन भेलै, अर्थशास्त्रमे सेहो।

घरदेखियाक काठक बनल लोक अहाँ पढ़ब तँ लागत जे गुलो पढ़ि रहल छी। घरखस्सीक पाइ सरकार देतै। मडरमे देखेबे केलौं जे स्त्री विमर्श कोना राधाक इण्टरमे फेर फर्स्ट डिवीजन भेलैसँ सोझाँ आयल माने मैट्रिकोमे आयल हेतै। एक्के पाठकेँ अहा~ कएक तरहेँ पढ़ि सकै छी। गुलो मण्डलक जाति नै बतायल गेल छै, टाइटिल सँ जे अन्दाज लगेबाक हुअय लगाउ, मंडल कमीशनक मंडल यादव रहथि आ पश्चिम बंगालमे मंडल दलितमे अबैत छथि। केदार कानन गुलोक चाह दोकानपर सुभाष चन्द्र यादव जी केँ देखने छथिन्ह आ कुमार पवनक 'पइठ' सभ पढ़लक मुदा हुनकर गौँआ सभ कहलक जे अहाँ सभ ओ कथा पढ़ने छी हम सभ सद्यः देखने छी, अपन गाममे घटित होइत। मडरमे तँ लेखक आरो सतर्क छथि, कामेसरक बाप पित्ती लग ५०-६० बिगहा जमीन रहै, मडर केलाक बाद मदन मामाक ससुरारि गेल, ओ सभ दबंग सभ छै। तँ गुलोक कएक तरहक पाठ भऽ सकैए आ मडरक सेहो आ सएह जेक्स डेरीडाक विखण्डनवाद कहै। दक्षिण भारतमे कतेक आदिवासी समाजक पुरोहित ब्राह्मण बनि गेला, कालीबन्दीक सेवा, भगैत, फुलहासि पुरोहित अबैत छथि, गएर ब्राह्मण हेता ब्राह्मणो भऽ सकै छथि, जे फील्डवर्क बिनु केने बजता से कहता ब्राह्मण केना गहबर आ भगता बनत, मुदा ग्राम-रुद्रपुर (भाया तुलापतगंज, जिला मधुबनी) मे गहबरक सेवा ब्राह्मण भगैत करैत छथि। मिथिलामे पसरल सतार (संथाल) समुदायमे मुर्मु पण्डित लयमे सिन्धु नदी घाटी सभ्यताक कालक ग्रन्थक बिनती पढ़ैत छथि, से संथाल समुदायक लोक अहाँकेँ बतेता। ई एकटा तरीका अछि अपन लिपि, इतिहास आ सभ्यताक पुरातनता आ निरन्तरता सिद्ध करबाक। से रहि रहि कऽ दू टा द्वन्द्व आपसमे वार्तालाप प्रारम्भ करऽ लगैत अछि, आ से स्थान, समय आ लोकक अनुसार मुदा कोनो स्थिर केन्द्रक बदलैत रहैत अछि। साहित्य, लोक संस्कृति, मौखिक परम्परा,

इतिहास आ विज्ञान मिज्झर भऽ जाइत अछि।

अंग्रेजक गेलाक बाद भारतक लोक अपन इतिहास, संस्कृति आ एकर सैद्धान्तिक आधारक नव परिभाषा बनबय लगला। मुदा ऋगवैदिके कालसँ भारतमे नाराशंसीक रूपमे, आख्यानक रूपमे समानान्तर परम्परा रहल छै। मुदा मैथिलीमे सभटा स्पेस एकटा खास मानसिकताक लोक लेबऽ चाहलक। अपन अज्ञानताक भारसँ ओइ स्पेसकेँ दलमलित करऽ चाहलक। मुदा मिशेल फोकोक डिसिप्लिनरी संस्था सभक अछैत आब ओ सम्भव नै छै, आ तइ लेल अन्तर्जालक अपन महत्व छै। मुदा देखल गेल जे महिला आ वंचितक अन्तर्जालमे उपस्थिति सभ भाषायी स्पेसमे कम छै, से मैथिलीक समानान्तर धारा ओइपर बेसी काज केलक, आ आइ परिणाम सभक सोझाँ अछि। जे मूलधारा समानान्तर धाराक नोटिस नै लै छल, काने-बात नै दै छल आइ समानान्तर धारा द्वारा नोटिस लेल जयबाक आकांक्षी भऽ गेल अछि।

आ से आयल डेमोक्रेसीसँ, आ से अछि भोट आधारित। आब 'भोट' पर आउ। एकरो कएक तरहक पाठ भऽ सकैए। कतेक तरहक समीकरण बनैत देखने हएब ऐ उपन्यासिकामे। कोनो केन्द्र स्थायी नै। जमीनी स्तरपर सभ एक दोसराक विरोधी मुदा ऊपरमे निर्णय किछु आरे भऽ गेल।

स्त्री विमर्श आब पलटी मारलक, मडरमे राधा फर्स्टे डिविजन करै छली मुदा दबियासँ गरदनि उतारि देल गेल। मुदा नीतीश महिला लेल बड्ड कऽ रहल छै। फिफ्टी पर्सेंट भोट ओकर छै तँ किने। रिनियाँकेँ पोशाकक ५०० टाका भेटल रहै से अहाँ गुलो मे पढनहिये रही। आब भोटमे ३३% रिजर्वेसन महिला लेल, साइकिल बचिया सभ लेल। आ तँ जखन राजद, कांग्रेस आ जदयू केर महागठबंधनक कैंडीडेट ठाढ़ भेलै तँ प्रोटैगोनिस्ट कहै छथि- लालटेनो केँ भोट देलासँ नीतिशे मुख्यमंत्री बनतै से महिला सभकेँ बतेनाइ जरूरी छै। भोट आ इलेक्शनमे लाख कमी होइ, मुदा ई सभ ५ सालपर एकटा नव सामाजिक तत्त्वकेँ हिलोड़ैत अछि आ तइसँ जे वंचित वर्ग अछि, महिला जइमे सम्मिलित अछि तकरा शक्तिशाली हेबाक अनुभव होइ छै। मुसलमान बी.जे.पी. सँ भड़कै छै, बाभन महागठबन्धनसँ भड़कै छै, बी.जे.पी. बनियाँक पार्टी छिऐ, सभ पार्टी टिकट बेचै छै, ई सभटा गप पिपराक चाहोक दोकानपर होइ छै आ दिल्लीक लुटयन्स जोनमे सेहो। 'चिल्लर पार्टी' फिल्मक ओइ बाल मजदूरक गप मोन पड़ि गेल जे कहैत अछि- सभकेँ सिखायल जाइ छै जे झूठ नै बाजू आदि आदि, मुदा पैघ होइए तँ सभ झूठ बाजैए आदि आदि, तखन की फर्क पड़लै साब जे क्यो पढ़लक आ कियो नै पढ़लक! ❑

गुलो : कला आ भाषा

'गुलो: कला आ भाषा' सम्पादित केने छथि नव-ब्राह्मणवादी तारानन्द वियोगी आ ब्राह्मणवादी केदार कानन, दुनू साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत आ मोटगर-मोटगर असाइनमेण्ट प्राप्त।

आ तेँ पचपनिया बा ठेंठी लिखनिहार एकोटा व्यक्तिकेँ ऐ पोथीक आलेख लिखबा लेल निमंत्रित नै कएल गेल कारण ओ सभ समानान्तर धारासँ छथि जे सम्पादक द्वयक ब्राह्मणवादी आ नव-ब्राह्मणवादी दुनुक काल अछि आ तेँ दुनू विचारधाराक लोक आपसमे तँ गारा-गारी करै छथि मुदा समानान्तर धाराक बेरमे मिलि जाइ छथि, आ तेँ ई भतबरी (ई आगाँ जा कऽ आर स्पष्ट कएल जायत)।

६७ पन्नाक 'गुलो' मे ९ पन्नाक आमुख लिखने रहथि केदार कानन (आखिरी विपन्न मनुक्खक गाथा), आब से भार 'गुलो: कला आ भाषा'मे तारानन्द वियोगीक कान्हपर छन्हि (५ पन्नाक भूमिका)। सुभाष चन्द्र यादवक अनुसार तारानन्द वियोगीक विचारधारा (आइडियोलोजी)मे स्थिरता नै छै, मुदा हमरा विचारे हुनकर आइडियोलोजी स्थिर छन्हि, आ से छन्हि वएह केदार काननक ब्लैकमेलिंग बला। ब्राह्मणवादी संस्था सभमे बहुत रास दुर्गुण छै, आ सएह ओकरा सभकेँ ब्लैकमेलिंग लेल वलनरेबल बनबै छै। कोनो ब्राह्मणवादी संस्था नै अछि जकरा तारानन्द वियोगी दू-चारि मासपर गरियाबै नै छथिन्ह आ सम्मान भेटलापर फेर ढाकीक ढाकी प्रशंसा नै करैत छथिन्ह। उदाहरण स्वरूप चेतना समिति आ साहित्य अकादेमीक उदाहरण देल जा रहल अछि। ओ एकठाम लिखै छथि- *'ब्राह्मणवादक जन्मदाता भने ब्राह्मण होथि मुदा एकर गछाड़ मे पचपनियां सेहो छथि, दलित सेहो। ने तं ई कोना होइतय जे दू सौ के करीब संख्या मे दलित-पचपनियां लोकनि मैथिली मे लिखैत ठीक-ठीक वैह बात, ओही भंगिमा मे लिखि रहला अछि जे ब्राह्मणवादक इष्टसिद्धि मे साधक छैक।* एहन दलित लोक कें अहां ब्राह्मणसभा मे अध्यक्षता करैत सेहो देखि सकै छियनि, सम्मान पबैत सेहो। ' आ अहाँकेँ लागत जे ई सभ गप ओ अपनेपर लिखि रहल छथि, हुनकर भाषा, हुनकर साहित्य, हुनकर विषय-वस्तु, हुनकर कथित गजल सभ, छल-प्रपंच, पुरस्कार

लोलुपता, व्यवहार सभ विशुद्ध ब्राह्मणवादी अछि, हुनके ब्राह्मणवादी संस्थाक सभामे अध्यक्षता करैत सभ देखै छन्हि, आ सम्मान पबैत सेहो।

मुदा सुभाष चन्द्र यादव अड़ल रहलाह। कारण हुनकर एकटा आइडियोलोजी छन्हि।

'गुलो: कला आ भाषा'क ५ पन्नाक भूमिका सेहो गुलोक समीक्षाकेँ आगाँ नै बढ़बैत अछि वरन् ओ ब्राह्मणवादी संस्था सभक ब्लैकमेलिंगक एजेण्डाकेँ आगाँ बढ़बैत अछि, आ ऐ बेर हुनकर लक्ष्य छन्हि 'मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, कलकत्ता'। मुदा ऐ बेर हुनकर प्रयास व्यर्थ जेतन्हि किए से आगाँ स्पष्ट हएत।

पहिल जे हरिमोहन झा ब्राह्मणवादी संस्था आ व्यक्तिक निशानापर रहथि, यात्री नै। रमानाथ झाक दुश्मन रहथि हरिमोहन झा, से ओ हुनकर गैसलाइटिंग केलखिन्ह आ साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक प्रवेशक बाद हरिमोहन झा मैथिली लिखनाइ छोड़ि देलखिन्ह, पुरस्कार देबाक तँ कोनो प्रश्ने नै! (विशेष विवरण देखू हमर पोथी Rajdeo Mandal- Maithili Writerमे जे विदेह आर्काइवमे http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर सेहो उपलब्ध अछि)।



महाकवि विद्यापति ठाकुर १३५०-१४३५ (मैथिलीक आदि कवि ज्योतिरीश्वर-पूर्व विद्यापतिसँ भिन्न, संस्कृत आ अवहट्ठमे लेखन), विद्यापति ठक्कुरः विषएवार बिस्फी-काश्यप (राजा शिवसिंहक दरबारी) आ संस्कृत आ अवहट्ठ लेखक। कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरुष परीक्षा, गोरक्षविजय, लिखनावली आदि ग्रंथ समेत विपुल संख्यामे कालजयी रचना। ई मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व)सँ भिन्न छथि। चित्रक आधार मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कोलकाता द्वारा कोनो कलाकारसँ बनबाओल, कलाकारक नाम ६०-७० सालसँ अज्ञात कारणसँ गुप्त राखल गेल अछि।

मुदा ई संस्था मिथिला सांस्कृतिक परिषद यात्रीक नजदीकी संस्था रहन्हि।

यात्रीजीक नजदीकी रमानाथ झासँ सेहो रहथिन्ह आ साहित्य अकादेमीसँ सेहो रहन्हि। ओ तँ ब्राह्मणवादी संस्था सभक मुख्य अतिथि रहै छला, ब्राह्मणवादी संस्था सभकेँ हरिमोहन झा सँ समस्या रहै यात्रीसँ नै।

तारानन्द वियोगी लग मिथिला सांस्कृतिक परिषदपर यात्रीक कोनो तरहक आरोपक प्रमाण नै छन्हि, से ओ गपाष्टक शुरू करै छथि आ मोहन भारद्वाजक खचरपनी बला भाषाक प्रवेश करबै छथि। मोहन भारद्वाज आ तारानन्द वियोगी द्वारा मिथिला सांस्कृतिक परिषदपर खचरपनीक आरोप आ पाण्डुलिपि हरा देबाक आरोप क्रिमिनल एक्ट अछि। मोहन भारद्वाज बा तारानन्द वियोगी लग प्रमाण छन्हि? उत्तर अछि नै। मिथिला सांस्कृतिक परिषदमे आर बहुत रास कमी छै मुदा यात्री आ मणिपद्मक साहित्यकेँ मिथिला सांस्कृतिक परिषद बिना कोनो सरकारी मदतिक प्रकाशित केलक, आ से नैतिकता ने मोहन भारद्वाजमे छन्हि आ ने तारानन्द वियोगीमे। मोहन भारद्वाज तँ माफी मांगैले जीवित नै छथि मुदा जँ तारानन्द वियोगीमे किछुओ नैतिकता बाँकी छन्हि तँ ओ अविलम्ब मिथिला सांस्कृतिक परिषदसँ माफी मांगथि। मिथिला सांस्कृतिक परिषद पर तारानन्द वियोगी अनेरे समय व्यर्थ कऽ रहल छथि, ओ घोषित ब्राह्मणवादी संस्था छिऐ तहिना जेना चेतना समिति आ विद्यानाथ झा विदित जकर ओ काज सुतरलाक बाद ढाकीक ढाकी प्रशंसा करैत छथि। मुदा ओकर आर्थिक स्थिति एहन नै छै जे चट पाण्डुलिपि दियौ आ पट छापि देत। बलचनमाक लेखक नागार्जुनकेँ ओइ पोथीसँ कोनो समस्या नै रहन्हि नहिये हुनकर पुत्र शोभाकान्त (जकरा यात्रीजी शोभा मिसर कहैत छला) ओइ पोथीकेँ मैथिली पोथी मानै छथि आ तेँ 'यात्री समग्र' (राजकमल प्रकाशन) मे ओ संकलित नै अछि। मिथिला सांस्कृतिक परिषद चेतना समिति सन पाइबला संस्था नै अछि, चन्दा भेटै छै तखने ओ पोथी छापै छै, कोनो कंस्पिरेसी थ्योरी लेल कोनो स्थान नै। फेर ओ किशोरीकान्त मिश्रक नवीन प्रिण्टिंग प्रेसमे एकटा कोठली मासमे एक बेर मासिक 'बैसार' लेल खोलै छै। तेँ ऐ संस्थाक ब्लैकमेलिंगसँ कोनो सम्मानक आशा सेहो बेकार। तेसर जे ओ बिहारमे नै छै, से बिहारक ब्राह्मण सभ बिहारक वर्तमान राजनीतिकेँ देखैत कने मने डेराइयो जाइत अछि मुदा कलकत्ताक ऐ संस्थाकेँ तकरो भय नै।

आब हुनका मोन पड़ैत छन्हि जे ई समीक्षाक पोथी तँ अछि सुभाष चन्द्र यादवक 'गुलो'पर जिनकर पाइपर ओ छहर-महर कऽ रहल छथि तखन ओ गुलोपर घुरैत छथि- मुदा फेर ओ जगदीश प्रसाद मण्डल नाम लेने बिनु (ब्राह्मणवाद आ नव-ब्राह्मणवादमे मे नाम नै लेबाक दूटा कारण छै, दू नै तीनटा कारण छै, पहिल साधंश नै

हएब, दोसर प्रमाणक अभावमे किछु लोक आदिक बाजि कऽ अपन एजेण्डा रूपी स्टोरी चलायब आ तेसर कारण छै हीन भावना, जे हम नाम लऽ लेबै तँ ओइ व्यक्तिक चलती बढ़ि जेतै, तीनू तीन भिन्न स्थितिमे होइ छै) बाइ मे आबि जाइ छथि- "जेना थोकक हिसाबे मैथिली मे उपन्यास बहराइत अछि.."। ई अछि तारानन्द वियोगीक नव-ब्राह्मणवादी होयबाक एकटा आर प्रमाण, हमरा अलाबे दोसर गएर ब्राह्मण केना साहित्य अकादेमी पुरस्कार लऽ लेलक, हम तँ टैलेण्टेड छी जन्मना, मुदा ओ.. मुदा नाम नै लेब। सएह तँ केदारो कानन केलन्हि जखन ओ सुरेन्द्र झा 'सुमन', चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', रमानाथ झा, विद्यानाथ झा 'विदित', मायानन्द मिश्र आदिक बिनु नाम लेने लिखलन्हि- "बड़का-बड़का ठोप-चानन कयनिहार भाषा कें दूषित करब मानैत छथि।" भऽ सकैए आगाँ जा कऽ हुनकामे हिम्मति एतन्हि। मुदा ऐमे सँ सभ सम्पादक द्वयक करीब छथि/ रहथि, तखन अपनाकेँ कतिआयल कहब लोककेँ कोना अरघत, ई सभ तथ्य इतिहासक शुद्धता लेल अभिलेखित कएल जा रहल अछि। ब्राह्मणवाद आ नव-ब्राह्मणवाद एक्के रङ छल-प्रपंचक सङ एक दोसराकेँ पल्लवित-पुष्पित कऽ रहल अछि, आ दुनू समानान्तर धाराक विरोध करबामे एक दोसराक सहयोगी अछि।

तारानन्द वियोगीक ऐ 'गुलो: कला आ भाषा'क भूमिकाक ५ पन्नामे गुलोक विषयमे मात्र ५ पाँती लिखल गेल अछि।

केदार नाथ चौधरी आलेख लिखबामे असमर्थता व्यक्त केलन्हि। मुदा फणीश्वर नाथ रेणुक चिट्ठीक चर्चा नीक लागल।

मंत्रेश्वर झा पन्ना पुरेलन्हि। हुनका गुलो मर्मस्पर्शी लागलन्हि, सटीक चित्रण बुझेलन्हि, मुदा ऐ लेल कागत खर्च करबाक कोनो बेगरता हमरा नै बुझाइत अछि।

गंगानाथ गंगेशक प्रिय कथाकार राजमोहन झा सेहो रहलखिन्ह अछि, सम्पादक द्वय ऐमे एडिट कऽ सकै छला, सरकार जहिया राजमोहन झा कैँ ई दुनू गोटे सम्पादित करता तहिया लिखब, मुदा सुभाषो चन्द्र यादव गंगानाथ गंगेशक प्रिय छथिन्ह से देखि शाइत पाँती नै काटलखिन्ह। मुदा ई पोथी तँ सुभाषो चन्द्र यादवोपर नै छन्हि मात्र हुनकर गुलो पर छन्हि। आ आब अहाँ बुझि गेल हेबै जे ६९ पन्नाक गुलोपर ५ पन्नाक समीक्षा आ २०२ पन्नाक आलेख सम्पादक द्वय कोना पुरेलन्हि। ओना ओ डेढ़ पन्नाक बाद गुलोपर अबै छथि।

शोभाकान्त (प्रायः शोभा मिसर) स्वयं स्वीकार करै छथि जे ओ साहित्यक कोनो विधाक लोक नै छथि, मुदा ओ नीक जकाँ सारांश लिखने छथि।

रामलोचन ठाकुर मिथिला दर्शनमे गुलोकेँ छपने छला, आ से ओ संस्मरण

लिखलन्हि, पहिने मिथिलाक विषयमे किछु तथ्य देलाक बाद।

अशोक मूलतः कथाकार छथि से ओ रस लेलन्हि अछि, मुदा समीक्षा नै कऽ सकल छथि। नारायणजी संस्मरण सेहो घोसियेने छथि।

केदार काननक संस्मरण जापानी उपन्यासकार हारुकी मुराकामीक 'नोवेलिस्ट एज ए वोकेशन' उपन्यास केना लिखल जाइत अछि, सन लागल। ओना समीक्षाक दृष्टिसँ ऐ मे किछु नै छै, मुदा पाठककेँ ई पाठ सुभाष चन्द्र यादव बा आन उपन्यासकार देथि तँ ओ एकटा नवीन गप हएत।

तारानन्द वियोगी की लिखऽ चाहै छथि हुनका स्वयं तकर ज्ञान नै छन्हि। पन्ना पुरेलासँ हुनकर मतलब रहैत छन्हि, लोक, किछु लोक आदि लिखि कऽ ओ स्कोप बरकरार राखै छथि। रमानाथ झा केर बाद मैथिली समीक्षा बुरबक बाट पकड़लक सँ हम आंशिक रूपमे सहमत छी, रमानाथ झाये सँ मूलधाराक समीक्षा, जइमे तारानन्द वियोगी सेहो सम्मिलित छथि आ हुनकर सहयोगी मोहन भारद्वाज सेहो, (प्रमाण- देखू साहित्य अकादेमी प्रायोजित 'मैथिली पत्र पत्रिका' पोथी जइ मे ऐ महानुभाव सभक ब्राह्मणवादी आ नव-ब्राह्मणवादी दृष्टिकोण आर फरिच्छ भऽ गेल अछि, मोहन भारद्वाज मिथिला सांस्कृतिक परिषदपर खचरपनीक आरोप लगबै छथि मुदा सएह ओ सभ ऐ पोथीमे केलनि अछि), बुरबक बाट पकड़लक। (विशेष विवरण देखू हमर पोथी Rajdeo Mandal- Maithili Writerमे जे विदेह आर्काइवमे http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर सेहो उपलब्ध अछि)। एतऽ सेहो तारानन्द वियोगी आ सुभाष चन्द्र यादवक विचारधाराक विपरीतता सोझाँ अबैत अछि, सुभाष चन्द्र यादव नित नवल राजकमलमे रमानाथ झा केर समीक्षाकेँ परम्परावादी कहने छथि, आ ईहो जे ओ राजकमल चौधरी संग न्याय नै कऽ सकल छलाह।

रमेश ललित-किसुन-मायानन्द कहि एक्के तराजू पर सभकेँ राखि दै छथि, कतऽ ललित आ कतऽ किसुन आ मायानन्द। मुदा बैलेंस बनेबाक छन्हि नै तँ आलेख छपबे नै करतन्हि, मूलधारामे समीक्षा माने बड़ाइ।

कृष्णमोहन झा 'मोहन' फेर सारांश लिखै छथि, वैद्यनाथ झा केँ तँ मैथिली उपन्यासकार सभ नामो नै बुझल छन्हि, कुमार मनीष अरविन्द अखने गुलो समाप्त केने छथि आ समीक्षाक नाम पर ओ बैलेंस बनबै छथि- 'उपन्यासक शैली कोनो बेशी उन्नत नै छैक। एकर गढ़नि सेहो बहुत संगठित नै। एक दिस सँ सभटा बात केँ बेरा-

बेरी कहि देल गेलैक अछि। सांठबाक कोनो प्रयास नै छैक। मुदा भाषा तेहेन सटीक छैक..।“ आ फेर बैलेंस, ई भाषा ईएह भाषा सुच्चा। समानान्तर धाराक मैथिली नै पढ़लासँ सोझे कलम उठा कऽ लिखब आरम्भ कऽ देलासँ हुनका सन लेखक अचम्भित होइते रहैत अछि।

ऐ संग्रहक एकमात्र काजक आलेख अछि विद्यानन्द झा केर “लटकल छी मुदा बाँचल छी: बाँचल रहबाक महाआख्यान, गुलो”, केदार कानन, तारानन्द वियोगी आ अनका मुँहपर ओ प्रहार करै छथि जखन ओ कहै छथि जे-“दुखक पॉरनोग्राफी नै छी।“ पोथीक क्षीणकाय होयबापर सार्थक टिप्पणी आयल अछि। ई विपन्न वर्गक नै वरन् मिथिलाक महाआख्यान अछि। विद्यानन्द झा कैँ आलोचनामे एबाक चाहियनि मुदा मूल धाराबला सभ द्वारा बारि देबाक डरसँ ओ से नै कऽ सकताह, कारण ओ सरल मार्गक अभ्यासी छथि। मुदा ओ जे प्रहार केलन्हि अछि तकर गूँज सम्पादक द्वयकैँ बहुत दिन धरि सुनाइत रहतन्हि।

रमण कुमार सिंह तारानन्द वियोगी सन पेट्रोनाइजिंग करबाक अभ्यासी छथि, आलोचक लोकनि ई सोचताह, हरबिर्रो मचि गेल आ “यदा यदा हि धर्मस्य..” हएत तारानन्द वियोगी आ रमण कुमार सिंहक आगमन हएत आ संसार बचि जायत। आ जे हुनकर आलोचना/ समालोचना करताह से भेला ब्राह्मणवादी। आ अही तरहक लोककैँ हम कहै छ्ऐ नव-ब्राह्मणवादी। ई मुख्यतः पुस्तक परिचय लिखै छथि जकरा ओ समीक्षाक नाम दैत छथि, कवर नीक, कथ्य नीक, सुन्दर चित्रण, भाषा नीक। सभटा बड्ड नीक बड्ड सुन्दर।

नव-ब्राह्मणवादी सभक कन्नारोहटक बीच मुदा अरुण कुमार सिंह लिखै छथि- “१९८३ मे प्रकाशित ‘घरदेखिया आ २००९ मे प्रकाशित ‘बनैत बिगड़ैत’मैथिली कथा संग्रहक भाषा मादे विद्वान लेखक सँ हुनक मैसूर प्रवासक

दौरान हमर जिज्ञासोपरांत ओ कहने छलाह जे हुनक कथा मे भाषाक पाछु जनपदीय माहौल रहैत अछि, जकरा हम धरतीक माहौल कहैत छी।“ से विद्यानन्द झा केर समीक्षा सेहो उघार केलक जकरा हम सम्पादक द्वयक मुँहपर प्रहारक रूपमे वर्णित केलौं।

सतीश वर्माक “मेहनतकश बहुजन समाजक महाकाव्य” मे ओ दुनियाँक सभ इकोनोमिक सिद्धांत के फेल होइत देखबैत छथि। ओ उद्धृत करै छथि-

गुलोक बेटा छोटुआ मुँह मे ऊक देलकै। गुलो कें माटि सँ तोपि देल गेल। कुछ

जनीजाति जे ई सब तमाशा देखैत रहै, ओहि मे सँ एगो मुसलमान दोसर मुसलमान सँ बाजल 'ई सब हिन्नू हई कि मुसलमान? आगो दै हइ आ दफनो करइ है। दोसर मुसलमान बाजल'या अल्लाह! तू देखलहू ना। एक बार गाड़ के ले गेलइ, फेनू से गाड़लकै हइ। कहाँ दुन पैसा भेटतइ। हिन्नुओ के कोनो धरम हई।' तेसर मुसलमान बाजल 'धरम ले के की होतइ? पैसा होइ हइ त' बालो-बच्चा गुजर करिहइ।'

आ अपन निर्णय दैत छथि- "कबीर जकाँ समाज संगे धार्मिक-राजनीतिक संवाद सेहो स्थापित करैत छथि। "आ ई निर्णय ठीक अछि, मुल्ला बांग दे बला, पहिने मुस्लिम सुपीरियोरिटी लऽ कऽ एक गोटेक बाजब फेर दोसर द्वारा ओकरा पोलिटिकली करेक्ट करब, आ ओ दोसर सतीश वर्माक हिसाबे कबीर सुभाष चन्द्र यादव छथि।

अरुणाभ सौरभक 'यातनापूर्ण विपन्नताक यथातथ्" मे फेर कन्नारोहट शुरू। "मैथिली साहित्य मे उपन्यास कम लिखल जा रहल अछि।" भऽ गेल निर्णय जखन कि तथ्य एकर उलट अछि, आइ काल्हि कविताक बाद सभसँ बेशी उपन्यास लिखल जा रहल अछि। मुदा हुनका शंको छन्हि जे कहीं लिखाइतो हेतै तँ से तकरो इन्तजाम- "जौं लिखले गेल अछि त'पाठकक मोनक कछमछी आ छटपटी सँ सोझे जुड़बा मे बहुत समर्थ नै बुझाएल।" बिनु पढ़ने बिनु अध्ययनक आलेख लिखबामे यएह सभ समस्या छै। दू तीन पन्नाक कन्नारोहटक बाद हिनको मोन पड़ैत छन्हि जे गुलोक विषयमे सेहो लिखबाक अछि। गलती हिनकर नै सम्पादक द्वयक छन्हि जे सम्पादनकेँ मात्र प्रूफ रीडिंग बुझैत छथि। तकर बादो कन्नारोहट खतम नै भेल अछि जे हुनकर अध्ययनक अभावकेँ देखार करैत अछि खास कऽ समानान्तर साहित्यक अध्ययनकेँ।

आशीष चमन लिखैत छथि- "ऐ कथाक जे पृष्ठभूमि अछि से 'समाजक आखिरी विपन्न आदमी'कथा सँ आयल छैक ओकर वर्णन हू-ब-हू ओकरे सभक मुँह सँ कएल गेल छैक।" हम पहिनहिये लिखने छी जे गुलोक केदार काननक आमुख गुलोक पाठकेँ बाधित करैत अछि, से बाधिते नै विकृत आ प्रभावित सेहो केलक अछि से आशीष चमनक आलेखसँ देखबामे आओत।

रघुनाथ मुखिया 'गुलोक बहन्ने मैथिली भाषा पर विचार' करैत छथि मुदा सभटा भार छन्हि सुभाष चन्द्र यादवक कान्ह पर आ समानान्तर धाराक कान्हपर, रघुनाथ मुखिया अपने तारानन्द वियोगी सन 'विशुद्ध' मैथिली लिखैत रहताह।

तारानंद वियोगीक मोन नै भरल छन्हि, ओ एकटा आर आलेख "पचपनिया मैथिली: एक जमीनी परिचर्चा- फेसबुक पोस्ट आ ताहि पर प्रतिक्रिया आ विवाद" लऽ

कऽ अबैत छथि, ओना ओ कोन नोकरी करैत छथि से नै जानि, भरि दिन फेसबुक ओगरने रहैत छथि। मुदा मैथिलीमे फेसबुकपर ओ कोनो डिसकसन करै नै छथि, ओ तुरत्ते कन्ना-खिज्जी करऽ लगैत छथि, जे डिसकसन होइतो छै (मूलधारामे) से तइमे ५-१० टा सँ बेशी कमेण्ट नै, विदेह फेसबुक ग्रुपमे २०० सँ बेशी ब्राह्मणवादी आ नव-ब्राह्मणवादी आइ.डी. हम सभ बैन केने रही, आ आइक तिथिमे ओ सभ इनैक्टिव अकाउण्ट छै, कारण चोरि पकड़ि लेलिऐ, मुदा ई सभ कहियो एक्टिव मोडमे आबि सकैए, से ऐ स्लीपर सेल सभपर समानान्तर धाराक नजरि छै। मुदा फेरो वएह गप जे ब्राह्मणवाद आ नव-ब्राह्मणवाद कोनो काज तँ करैत नै अछि खाली माहौल बनेबापर विश्वास करैत अछि आ तकरा देखार करबा लेल हम ई अभिलेखित कऽ रहल छी जे ५-७ टासँ बेशी लोक कोनो डिसकसनमे नै रहै छै आ ई प्रतिक्रियाकेँ विवाद कहब आ अपन पीठ अपने ठोकब भेल। आ फेर वएह गप हमरा दोहराबऽ पड़ि रहल अछि- "मुदा सभटा भार छन्हि सुभाष चन्द्र यादवक कान्ह पर आ समानान्तर धाराक कान्हपर, रघुनाथ मुखिया आ तारानन्द वियोगी विशुद्ध मैथिली लिखैत रहताह।" मुदा अपनाकेँ विक्टिम देखायब आ अपनाकेँ पचपनिया मैथिली संग जोड़ब, सुभाष चन्द्र यादवक जे गैसलाइटिंग केलन्हि तकरा संग मिलि प्रपंच आ तइयो अपनाकेँ सुभाष चन्द्र यादवक विचारधाराक कहब, से कतेक झूठ हिनका बाजऽ पड़ैत छन्हि आ तइ लेल कतेक निर्लज्जता चाही, से सभक लेल सम्भव नै। तारानन्द वियोगी टा सँ से सम्भव अछि। ओना ब्राह्मणवादी आ नव-ब्राह्मणवादीक बीचक ई कन्नारोहट अहाँकेँ पढ़बाक चाही। ई दुनू वर्ग स्प्लिट पर्सनेलिटीक शिकार अछि, आपसमे रगड़घस करैत रहैत अछि, आपसमे गारा-गारी करैत रहैत अछि (कारण गरिखर अछि) मुदा समानान्तर धाराक विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलनक विरुद्ध ई सभ एक भऽ जाइत अछि। ब्राह्मणवाद आ नव-ब्राह्मणवाद छल-प्रपंचमे तरा-उपरी अछि मुदा दुनू एक दोसराकेँ पल्लवित-पुष्पित करैत रहैत अछि।

आ अन्तमे "पचपनिया मैथिली" मे सुभाष चन्द्र यादव पुनः साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त सम्पादक द्वयपर प्रहार करै छथि जखन ओ लिखैत छथि-

"एक बेर प्रोफेसर इन्द्रकान्त झा फोन केलनि- अहाँ कें साहित्य अकादेमी पुरस्कार पहिनहि भेटि जेबाक चाही छल। अहाँ डिजर्व करैत छी। अहाँक कथाक हम प्रशंसक छी। अहाँक 'बनैत-बिगड़ैत'रेस मे शीर्ष पर अछि। मुदा एकर भाषा ठीक नहि अछि। पुरस्कारक लेल अहाँ कें एकटा और संग्रह देबय पड़त, जकर भाषा दोसर हो।"एहि प्रसंग मे उल्लेखनीय तथ्य ई अछि जे 'बनैत बिगड़ैत' मे पहिल कथा

अभिजात मैथिली आ शेष समस्त कथा पचपनिया मैथिली मे लिखल गेल अछि।

आ समय मोन पड़ल? ई वएह समय छल जखन वएह साहित्य अकादेमीक दल "विदित"क नेतृत्वमे नङटे नाचि रहल छल, आ ओही समय मे तारानन्द वियोगीकेँ वएह दल पुरस्कृत केने छल, हुनकर 'विशुद्ध' मैथिली भाषापर, आ ओइ विदितक ढाकीक ढाकी प्रशंसा केने छलखिन्ह तारानन्द वियोगी। ओइ "बनैत-बिगड़ैत"क आमुख लिखने छलौं हम, जकर बलि-प्रदान कएल गेल छल।

ओ छथि "काठक बनल लोक" कथाक लेखक जे हम पढ़ने रही १९८३ आ १९८४ मे नौमा आ दसमामे, ओ अड़ल रहता। घरदेखियाक बाद बनैत बिगड़ैत २५ सालक बादो ओ अड़ल रहथि, आ आब गुलो, मडर आ भोट। आ देखियौ लीला, इन्द्रकान्त झा केर गालपर समधानि कऽ प्रहार तखन पड़ल जखन जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ ठेंठी/ पचपनिया वर्तनी पर 'पंगु' उपन्यास लेल मैथिलीक साहित्य अकादेमीक मूल पुरस्कार २०२१ देल गेल।

आ अन्तमे "पचपनिया मैथिली" मे सुभाष चन्द्र यादव पुनः साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त सम्पादक द्वयपर प्रहार करै छथि जखन ओ लिखैत छथि-

डॉ. रमानन्द झा 'रमण'अपन नोटबुक मे टिपने छलाह-'ब्राह्मण कहैत छथि सोइत छी, सोल्हकन कहैत अछि बाभन छी। हम की कही जे की छी?' एहि टीप मे सोल्हकन लेल जे निरादर व्यक्त भेल अछि, से आर किछु नहि; जातीय विद्वेष आ घृणाक भाषिक अभिव्यक्ति थिक।

सुभाष चन्द्र यादवकेँ उत्तर देलखिन्ह रमानन्द झा 'रमण' १० दिसम्बर २०२२ केँ हमर विदेह मे 'नित नवल सुभाषचन्द्र यादव (भाग-१)' ०१ दिसम्बर २०२२केँ ई प्रकाशित भेलाक बाद आ तकर विरोध केलखिन्ह नेपालसँ दिनेश यादव आ समर्थन केलखिन्ह भारतसँ ललितेश मिश्र।

रमानन्द झा 'रमण' - बिना पढ़ने अमीनी:

खेतक नापी अमीन करैत छथि। अमीनी गीत नहि थिक जे केओ गाबि लेत वा रिरिआ लेत। ओ एक विद्या थिक, बिना अमीनी विद्या सीखने जड़ी-कड़ीक महत्त्व की छैक, से नहि बूझि सकैत छी। एक कड़ी एमहर-ओमहर भेलापर भाइ-भाइमे कपर-फोड़ौअलि भए जाइत अछि। ओहिना भाषाक नापी केनिहारकेँ भाषाशास्त्र वा भाषाविज्ञानक ज्ञान अर्जित करए पड़ैत छनि। ***ओएह कहि सकैत छथि ई भाषा थिक, ई भाषिका थिक, ई मिश्रभाषा भेल, ई क्रिओल थिक आदि।*** *ओएह कहि*

सकैत छथि जे उच्चरित भाषा आ लिखित भाषा, सामान्य भाषा आ साहित्यिक भाषा, पात्रक भाषा आ लेखकक भाषामे की अन्तर छैक।

रमानाथ झा मानैत छथि जे 'मिथिला भाषा आजुक भाषा नहि थिक। जकर स्वरूप कालक्रमेँ स्थिर होएत। छओ सए वर्षसँ लिखल जाइत परम्परा एम्हर आबि एहि पचास वर्षमे हिन्दीक प्रभावसँ भ्रष्ट भेल जाइत अछि। लिपि पहिने गेल, आब भाषाक स्वरूप नष्ट होएबा पर अछि। भाषा एक गोटाक थिकैक नहि जे सभ व्यक्ति सभ रंगक लिखत, तखन भाषा रहत नहि।'

सामाजिक सम्पत्तिक सुरक्षा आ उपयोगक लेल एक अनुशासन होइत छैक। जेना खेतक पटौनीक लेल पौटी आवश्यक अछि, ओहिना राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय मंचपर भाषाक प्रतिष्ठा आ स्वीकार्यताक लेल पौटीक महत्त्व अछि। मिथिला भाषाक अमीन सभ ई काज कएने छथि।

जॉर्ज अब्रहम ग्रिअर्सन मिथिला भाषाकेँ भाषावैज्ञानिक आधारपर चिन्हि एक स्वतन्त्र भाषा घोषित कए, ओकर भाषिका सभक विशेषता निर्धारित कएलनि। महावैयाकरण दीनबन्धु झा, म.म. उमेश मिश्र, आचार्य रमानाथ झा, डा. सुभद्र झा, पण्डित श्री गोविन्द झा, डा. रामावतार यादव, उदयनारायण सिंह 'नचिकेता, योगेन्द्र प्रसाद यादव, डा. सुनील कुमार झा आदि ओहि शास्त्रक अध्ययन कए वैश्विक स्तरपर मिथिला भाषाकेँ व्याप्ति आ प्रतिष्ठा दिऔलनि। किन्तु, सम्प्रति एहन धुक्कर उठल अछि वा उठाओल गेल अछि जे केओ ककरो मोजर नहि दैत अछि। ने ओ पण्डित श्री गोविन्द झाकेँ मानैत छथि आ ने डा.रामावतार यादवकेँ। ओ मैथिलीक कवि छथि, कथाकार छथि, उपन्यासकार छथि, आलोचक छथि, राजनीति प्रेरित सामाजिक कार्यकर्ता छथि, आ सबसँ बढ़ि बिना शास्त्र पढ़ने भाषावैज्ञानिक बनि गेल छथि।

दिनेश यादवक उत्तर देखू:

सर्वप्रथम,भाषा खौका सभके खोजी कयल जाए, निष्कर्ष पर शिघ्र पहुँचबाक आसानी होएत। ब्याकरण चाहि मुदा केहेन, मानक चाहि मुदा निर्धारण कोनाके करी ? बभनौटी शैली, भाष्य किंवा मानक आब लोकजन अस्वीकार कए देलैथ। मैथिलीभाषी लोकजन आब पहिने जका निछाह मुर्ख नै रहला, सभ बुज्नुक भऽगेला अछि। हम मैथिली लिखैत आ पढैत छी, मुद्दा हमर बोली, शैली आ भाषिका के मानक जातिवाला महानुभाव लोकैन मान्यता नय दैत छैथ..... ! तई अइ तरहे पुरातन सोच , आ दरिद्र मानसिकताके परित्याग करैत नव शिरा सऽ आगा बढबाक जरूरी छैक। आब

स्तुति, गणेश परिक्रमा कके पुरस्कृत होमेवाला परिपाटिके अन्त्येष्ठी करैटा पड़त। समाजशास्त्रीय, मनोविज्ञानशास्त्रीय दृष्टिकोण जाधरि नै बनत,ताधरि मैथिली जातिय दर्शन, मान्यता आ विचारके घेराबन्दीमे रहत। जै घेरासऽ मैथिलीके मात्र क्षति आ क्षति होएत। वैज्ञानिक सोच, समान व्यवहार, सर्वजातिय मान्यता, विविध भाषिकासऽ समेटनाइ आदि मैथिलीके हुकहुकी बचेबाक दबाई थिक, एकरा अंगिकार कके आगा बढल जाय त अखनो विलम्भ नै भेल अछि। मैथिली चमकत आ दमकत !

मुदा ललितेश मिश्रक समर्थन भेटल रमानन्द झा 'रमण' कैँ, मुदा हुनकर कुटिलता, जे ओ एहेन स्वांग करै छथि जे ओ ई सुभाष चन्द्र यादवकैँ नै नवतुरिया/ फेसबुकिया दिया कहि रहल छथि। तँ हम हुनकर ऐ व्यवहारकैँ 'पौराणिक समीक्षा'क नाम देने छी, मंच सापेक्ष। जेहेन मंच तेहेन समीक्षा, गरुड़ पुराणमे गरुड़ ब्रह्मा-विष्णु-महेशसँ ऊपर आ मत्स्य पुराणमे मत्स्य ब्रह्मा-विष्णु-महेशसँ ऊपर।

ललितेश मिश्रक रमानन्द झा 'रमण' क समर्थन

... सभहि कें मार्ग दर्शनक अवश्यकता नहि छनि. ओएह जन अपनेक मार्ग दर्शन क'देताह. ओ लोकनि सभ बिषयक वेत्ता स्वयं कें मानैत छथि. कोनो भाषाविद्क हुनका प्रयोजन नहि. मैथिलीक बेस विकास भेलैक अछि.नव ज्ञान संपन्न युग अएलैक अछि.आब रास्ता देखयबाक जरूरति नहि छैक. ज्ञान बखारब गंजन कें आमंत्रित करब होएत.

मुदा हमर मायो कम नै- मैथिलीक लोकोक्तिक किताबमे लिखल रहै- "दस ब्राह्मण दस पेट, दस राड़ एक पेट" तँ ओ सिखेलन्हि जे ई गलत छै, ई ब्राह्मण कहै छै, ब्राह्मण लेल दोसर वर्ग कहै छै- "दस ब्राह्मण एक पेट।" रमानन्द झा 'रमण' आ ललितेश मिश्रकैँ कोन तरहक शिक्षा भेटल छन्हि नै जनि।

मुदा दुनू गोटे की कऽ रहल छथि से हुनका सभकैँ बुझल छन्हि, आ तकरा एत्तऽ उघार कएल जा रहल अछि। रमानन्द झा 'रमण' लिखै छथि- **ओएह कहि सकैत छथि ई भाषा थिक, ई भाषिका थिक, ई मिश्रभाषा भेल, ई क्रिओल थिक आदि।** अहाँकैँ कोनो षडयंत्र ऐमे देखा पड़ैए? तँ देखू ई कोन षडयंत्र अछि।

अंग्रेजी सेहो बाजल जाइए कएह तरहक मातृभाषा आ द्वितीय भाषा केर रूपमे, आ तकर अतिरिक्त कएक तरहक पिडगिन अंग्रेजी आ क्रेयोल अंग्रेजी सेहो छै। पिडगिन अंग्रेजी सेहो दू वर्गमे विभक्त छै- अटलांटिक पिडगिन आ प्रशान्त पिडगिन। अटलांटिक पिडगिन अंग्रेजी पश्चिमी अफ्रीकामे विकसित भेल आ दास-व्यापारक

माध्यमसँ वेस्ट इण्डीज आ अमेरिका पहुँचि गेल, मुदा ऐ क्षेत्रमे पिडगिन बाजनहारकेँ मूर्ख आ सुस्त मानल गेल। मुदा से प्रशान्त पिडगिन लेल सत्य नै अछि, ई हवाइ, पापुआ न्यू गिनी आ दोसर ब्रिटिश उपनिवेशमे विकसित भेल, व्यापारक विवशताक कारण, न्यू गिनीमे क्रेयोल ओकर राष्ट्रिय भाषा छै, कारण ई विकसित भऽ गेल, अपन शब्द भण्डार बढ़ा लेलक आ वाक्य संरचना सेहो। आ पिडगिन छिऐ की? ई एकटा संचार माध्यम अछि जे दू तरहक लोकक बीचमे, जे दू विभिन्न भाषा बजैत छथि, संचारक माध्यम बनैत अछि, पिडगिन ककरो मातृभाषा नै अछि। कालान्तरमे पिडगिन किछु लोकक मातृभाषा बनि जाइत अछि, आ तखन ओकरा क्रेयोल कहल जाइत अछि। अंग्रेजी आधारित पिडगिन आ क्रेयोल ब्रिटिश उपनिवेशमे पसरल जतऽ ई अंग्रेज मालिक आ स्थानीय लोकक मध्य संचारक माध्यम बनल। पिडगिन आ क्रेयोलकेँ अंग्रेजीक अमानकीकृत रूप कहल जाइत अछि। ई सभ सीमित व्यवस्था सन अछि, जइमे संरचना आ शब्द भण्डार सेहो सीमित रहैत अछि। आब हम बूझि रहल छी जे अहाँकेँ रमणक अज्ञानतापर हँसी लागि रहल हएत, जे २००० शब्दक शब्द भण्डार आ ५० टा वाक्य संरचनाक आधारबला मैथिलीकेँ मूल आ लाख शब्दसँ ऊपर शब्द भण्डार आ हजारसँ ऊपर वाक्य संरचनाबला समानान्तर धाराबला मैथिलीकेँ क्रेयोल कहि रहल छथि। मुदा अहाँ पेट पकड़ि कऽ बैसल रहू कारण अहाँकेँ रमानन्द झा 'रमण' आ ललितेश मिश्र अज्ञानतापर आर हँसी छूटयबला अछि।

हवाइ केर पिडगिन

अंग्रेजी-समटाइम्स देयर इज अ गुड रोड.

हवाइ केर पिडगिन- समटेम, गुड रोड गेट

अंग्रेजी- समटाइम्स थेयर आर थिन्गस लाइक बेण्ड्स, एंग्ल्स, राइट?

हवाइ केर पिडगिन- समटेम, ओलसेम बेन गेट, एनगुरू गेट, नो?

कैमरून केर पिडगिन

अंग्रेजी- गो.

कैमरून केर पिडगिन- गो. (कोनो परिवर्तन नै)

अंग्रेजी- डॉण्ट गो.

कैमरून केर पिडगिन- नो गो.

अंग्रेजी- दे कैन गो.

कैमरून केर पिडगिन- डेम फिट गो.

अंग्रेजी- दे काण्ट गो.

कैमरून केर पिडगिन- डेम नो फिट गो.

अंग्रेजी- नोबडी केम.

कैमरून केर पिडगिन- नो मैन नो बिन काम.

नाइजीरियन पिडगिन

अंग्रेजी- गवर्नमेण्ट! ऑल आवर रोड्स आर रुइण्ड कम्प्लीटली.

नाइजीरियन पिडगिन- गोफ्रूमेण्ट! ऑल आवर रोड्स डोन यामुटु फिनिस.

अंग्रेजी- प्लीज मेक समबडी कम फ्रॉम द गवर्नमेण्ट ईवन इफ इट इज फ्रॉम कानो.

नाइजीरियन पिडगिन- बिको मेक समबडी गोफूमेण्ट एफेन इ फिट फ्रॉम कानो कम सेफ.

अंग्रेजी- अनीवन हू इज अवलेबल सर, लेट हिम जस्ट गेट समथिंग डन.

नाइजीरियन पिडगिन- अनीवन्स एट ऑल अफलाबुलु सा, मेक इ जुस फाइण्ड समटिन्स डन फॉर.

अंग्रेजी- ऑल दीज रोड्स आर इन अ वोफुल स्टेट.

नाइजीरियन पिडगिन- ऑल दिस रोड डेम वे डन वोवो फिनिस.

चीनक तटीय पिडगिन

अंग्रेजी- ही इज/ वाज वेरी सिक.

चीनक तटीय पिडगिन- ही प्लेण्टी सिक.

अंग्रेजी- आइ एम द चीफ बॉय.

चीनक तटीय पिडगिन- मै ब्लोन्ग नेम्बर- वान बोज.

अंग्रेजी- दिस इज एन एक्सेलेण्ट बुक.

चीनक तटीय पिडगिन- दिस अ नोम्बा वान गुड बुक.

(क्रिस्टल डी.: द इंग्लिश लैंगुएज, पेंगुइन बुक्स, इंगलैण्ड, १९९०)

आब आउ षडयंत्रपर। से रमानन्द झा 'रमण' कहऽ की चाहै छथि? मालिक नोकरक सम्बन्ध भाषामे, बा पिडगिन मैथिली क्रेयोल मैथिली बनि गेल अछि से? बा ओ किछु नै कहऽ चाहै छथि कारण ऐ विषयपर हुनका कोनो ज्ञान छन्हिये नै, अज्ञानतासँ मात्र दलमलित करऽ चाहै छथि? ऐ तरहक गपकेँ हमरा गाममे बकथोथी कहल जाइ छै आ नीक नै मानल जाइ छै। आ तँ रमानन्द झा 'रमण' जे बिना पढ़ने अमीनी कऽ रहल छथि आ अपना पक्षमे जे रामावतार यादव, योगेन्द्र प्रसाद यादव, सुनील कुमार झा आदिक नाम गनौने छथि (जकरा दिल्लीमे नेमड्रॉपिंग कहै छै आ नीक नै मानल जाइ छै) से ई सिद्ध करैत अछि जे ओ बिनु हुनकर सभ पोथी पढ़ने बिबलियोग्राफी बनौने छथि, गूगल सर्चमे कीवर्ड दऽ कऽ। योगेन्द्र प्रसाद यादवक तँ अंग्रेजी आलेख विदेहमे सेहो ई-प्रकाशित भेल अछि, सएह पढ़ि लेने रहितथि तँ दृष्टि किछु फरिच्छ भेल रहितन्हि, सुभाष चन्द्र यादवक पक्षमे रामावतार यादवक शोध अछि, तखन बिनु पढ़ने अमीनी के कऽ रहल अछि से स्पष्ट भेल।

सुभाष चन्द्र यादव लिखै छथि-

मैथिलीक वैयाकरण सभ संस्कृताह आ हिंदिआह व्याकरणिक ढाँचा तैयार कयलनि। ओ सभ दलित मैथिलीक विशिष्टता आ भिन्नता कें विचार-योग्य नहि बुझलनि। डॉ. रामावतार यादव एकमात्र एहन भाषाशास्त्राी छथि जे एहि पर थोड़े विचार कयने छथि।

सुभाष चन्द्र यादव पुनः लिखै छथि-

एक बेर अनुग्रह नारायण सिन्हा सामाजिक संस्थान, पटना मे एकटा कार्यक्रम भेल। केन्द्रीय भाषा संस्थान, मैसूर एहि कार्यक्रमक आयोजन कयने छल। कार्यक्रमक मूल चिन्ता मैथिली भाषाक विकास छल। विकास कोना हो, ताहिपर अनेक वक्ता अपन-अपन वक्तृता देलनि। डॉ. मेघन प्रसाद सेहो अपन विचार रखलनि। हुनक भाषा मे ओतेक आदरसूचकता नहि छलनि, जतेक विद्वत समूह कें अपेक्षा रहनि। फल ई भेल जे हुनक भाषिक स्खलन लेल भाषणक बिच्चहि मे बहुत अशिष्टतापूर्वक हुनकर हँसी उड़ाओल गेल। ई दृश्य हमरा विचलित कयने छल आ एहि तरहक भाषिक असहिष्णुताक प्रतिकार हम तत्क्षण कयने रही।

अही केन्द्रीय भाषा संस्थान, मैसूर क सेमीनारक एकटा आलेख जे मेघन

प्रसाद पढ़ने छला, से रमानन्द झा ‘रमण’क कथित लिटेरेरी एसोशियेसनक पत्रिका ‘घर बाहर’ मे बिनु पहिल पैराग्राफक छपल (ऐ काजमे रमानन्द झा ‘रमण’ उस्ताद छथि), मुदा ओ आलेख अविकल रूपमे विदेहमे बादमे ई-प्रकाशित भेल। आ अहाँकेँ बूझल अछि जे ओइ कुटिलता द्वारा कोन तथ्य सेंसर कएल जेबाक प्रयास छल? मेघन प्रसाद लिखने छला जे ओ कएक बेर साहित्य अकादेमीसँ अनुवाद असाइनमेण्ट लेल इच्छा व्यक्त केने रहथि मुदा साहित्य अकादेमीकेँ हुनकासँ प्रेम छै से कोनो असाइनमेण्ट कहियो नै भेटलन्हि। आब अहाँकेँ बूझऽमे आबि गेल हएत जे मूलधारा आ साहित्य अकादेमी लेल मेघन प्रसाद आ सुभाष चन्द्र यादव किए बारल छथि आ तारानन्द वियोगी किए स्वीकार्य।

सुभाष चन्द्र यादव लिखै छथि-

पाग-दोपटावला मैथिली चल जायत, लेकिन गोलगलावला मैथिली जीबैत रहत।

आ गोलगलाबला विद्यापतिक चित्र जे ऐ विनिबन्धमे अहाँ देखलौं से बनाओल गेल विदेह सम्मानसँ सम्मानित पनकलाल मण्डल द्वारा, पदावलीबला विद्यापति, ज्योतिरीश्वर-पूर्वबला विद्यापति, जे अछि विदेहक लोगो।

संस्कृत आ अवहट्ठ बला पाग-दोपटाबला चित्र मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कोलकाता द्वारा कोनो कलाकारसँ बनबाओल गेल, आ ओइ कलाकारक नाम ६०-७० सालसँ अज्ञात कारणसँ गुप्त राखल गेल अछि।

सुभाष चन्द्र यादव हमरा हमर पिता मोन पाड़ि देलन्हि- मृत्युक २७ बर्ख बाद, पता नै कतऽ सँ नोर घुरि आयल अछि हमरा आँखिमे-

पिताक सत्यकेँ लिबैत देखने रही स्थितप्रज्ञतामे

तहियेे बुझने रही जे

त्याग नै कएल हएत

रस्ता ई अछि जे जिदियाहबला।

माय रतुका पूजा दिआ पुछलकै। औतौका हाल सुनबइ मे रिनियां कए मन नै लागलै। माए कए कहलक- ‘माय, पैसा दही ने। बबा कए गोली लाबि दइ छिऐ।’ (गुलो, उपन्यास २०१५)

१९९५, हम ट्रेनिङ सँ बिना कोनो कारण घर आबि गेलौं, मोन उचटि गेल छल। माय पुछलक ट्रेनिङक विषयमे, ओतुक्का गप करैक हमरा मोन नै भेल। पिताक मोनक विषयमे पुछलिऐ। ओ खाटपर सूतल छथि। ३ बजे चाह पिआबैले उठेबन्हि। खाइले परसल थारी, हम दोसर थाड़ीसँ झाँपि कऽ राखि देलिऐ, पिता सूतल छथि, रवि दिनुका दुपहरिया। ओ उठता तखन हम खायब। मोन ठीक छन्हि ने। ३ बजे चाह लऽ कऽ पिताकेँ माय उठबैले गेली.. पिता नै उठलथि। (हमरा सङ घटल सत्य घटना, १९९५)

(सुभाष चन्द्र यादव जीक अनुमति सँ हुनकर समस्त साहित्य विदेह पेटार http://videha.co.in/pothi.htm पर उपलब्ध अछि।)



Notes

